श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

✡ खिलवत ✡

किताब खिलवत गैब की
सूरत अर्ज की जो हकसों करी है

ऐसा खेल देखाइया, जो मांग लिया है हम।
अब कैसे अर्ज करूं, कहोगे मांग्या तुम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी! आपने हमें ऐसा खेल दिखाया जो हमने मांगा था। अब इससे निकलकर घर आने के लिए कैसे विनती करूं? आप कहोगे कि तुमने ही तो मांगा था।

कछु आस न राखी आसरो, ए झूठी जिमी देखाए।
ऐसी जुदागी कर दई, कछू कह्यो सुन्यो न जाए।। २ ।।

ऐसी झूठी जमीन दिखाई है कि यहां कोई आशा भी नहीं है और न यहां किसी का सहारा है। आपने इस तरह से अलग किया है कि कुछ कहा सुना भी नहीं जाता।

बैठी अंग लगाए के, ऐसी करी अन्तराए।
ना कछू नैनों देखत, ना कछू आप ओलखाए।। ३ ।।

मूल-मिलावे में हम सब सखियां अंग से अंग जोड़कर बैठी हैं, परन्तु यहां खेल में भेजकर ऐसा अन्तर हो गया है कि न कुछ आंखों से दिखाई देता है और न आपकी पहचान हो पाती है।

बैठी अंग लगाए के, ऐसी दई उलटाए।
न कछू दिल की केहे सकों, न पिया, सब्द सुनाए।। ४ ।।

परमधाम में अंग से अंग जोड़कर बैठने पर भी ऐसा उल्टा दिया है कि मैं अपने दिल की बातें आपसे नहीं कर सकती और न आपके वचन ही सुनाई पड़ते हैं।

बैठी आंखें खोल के, अंग सों अंग जोड़।
आसा उपजे अर्ज को, सो भी दई मोहे तोड़।। ५ ।।

मूल-मिलावे में आंखें खोलकर अंग से अंग जोड़कर बैठी हैं। आपसे कुछ अर्ज करने की इच्छा होती भी है, उसे भी माया ने समाप्त कर दिया।

सदा सुख दाता धाम धनी, अंगना तेरी जोड़।
जानो सनमंध कबूं ना हुतो, ऐसा किया बिछोड़।। ६ ।।

हे धनी! आप सदा सुख के देने वाले हैं और मैं आपकी अंगना आपका ही अंग हूं, परन्तु आपने ऐसा जुदा किया है मानो हमारा कभी आपसे नाता ही नहीं था।

Nijanand App

बैठी सदा चरन तले, कबूं न्यारी ना निमख नेस।
पाइए ना नाम ठाम दिस कहूं, ऐसा दिया विदेस।।७।।

मैं आपके चरणों के तले बैठी थी और एक पल के लिए भी कभी जुदा नहीं हुई। अब आपने ऐसे परदेश (विदेश) में भेज दिया जहां आप का नाम, धाम और दिशा भी बताने वाला कोई नहीं है।

बैठी तले कदम के, बीच डारे चौदे तबक।
दूर-दराज ऐसी करी, कहूं नजीक न पाइए हक।।८।।

मैं आपके चरणों तले बैठी हूं, परन्तु बीच में चौदह लोकों का परदा लगा है। आपने ऐसा दूर कर दिया है कि कहीं से भी आप नजदीक दिखाई नहीं पड़ते।

बैठी तले कदम के, ऐसी करी परदेसन।
ले डारी ऐसी जुदागी, रह्या हरफ न नुकता इन।।९।।

मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं, परन्तु आपने मुझे ऐसी जुदाई देकर परदेसिनी बना दिया जहां आपकी पहचान कराने वाला एक शब्द भी नहीं मिलता।

बैठी हों आगे तुम, जानूं अर्ज करूं कर जोड़।
सो उमेद कछू ना रही, कोई ऐसो दियो दिल मोड़।।१०।।

मैं आपके आगे बैठी हूं और चाहती हूं कि हाथ जोड़कर आपसे विनती कर लूं, परन्तु अब तो इतनी भी उम्मीद नहीं है। आपने इस तरह से हमारे दिल को खेल में मोड़ दिया है।

ऐसी दई उलटाय के, बैठी हों कदम के पास।
दरद न कह्यो जाय दिल को, उमेद न रही कछू आस।।११।।

मैं आपके चरणों के पास बैठी हूं। आपने मुझे ऐसा विमुख कर दिया है कि दिल के दर्द को कहने की भी आशा और उम्मीद नहीं रह गई।

बैठी तले कदम के, मेरो ए घर धाम धनी।
ए सुख देखाए जगावत, तो भी होत नहीं जागनी।।१२।।

मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं। मेरा घर परमधाम है और आप मेरे धनी हो। ऐसे अखण्ड सुख दिखाकर जगाना चाहते हो फिर भी हमारी आत्मा जागती नहीं है।

बैठी इन मेले मिने, ए घर धनी सुख अखंड।
आस न केहेन सुनन की, जानो बीच पड़्यो ब्रह्मांड।।१३।।

हे धनी! मैं इस मूल-मिलावे में बैठी हूं जहां आपके अखण्ड सुख हैं। हमारे और आपके बीच में यह माया का ब्रह्माण्ड आड़े आ गया है, जिस कारण से कहने और सुनने की आशा भी नहीं रह गई।

धनी धाम सुख बतावत, ए धनी सुख अखंड।
आप दया बतावत अपनी, आड़े दे ब्रह्मांड पिंड।।१४।।

हे मेरे धनी! माया के पिण्ड और ब्रह्माण्ड के परदे में परमधाम के अखण्ड सुख बताते हो और अपनी मेहर भी कर रहे हो।

Nijanand App

जगावत कई जुगतें, दई कई विध साख गवाहे।
बैठावत सुख अखंड में, तो भी जेहेर जिमी छोड़ी न जाए।। १५ ।।

इस तरह से यहां कई तरह से कई प्रकार की गवाही देकर, जगाकर अखण्ड सुख में बिठाते हो, फिर भी हमसे यह जहर भरा संसार नहीं छोड़ा जाता।

धनी मैं तो सूती नींद में, तुम बैठे हो जाग्रत।
खेल भी तुम देखावत, बल मेरो कछू ना चलत।। १६ ।।

धनी मैं तो फरामोशी में हूं और आप तो जाग रहे हैं। माया का खेल भी आप दिखा रहे हैं, परन्तु यहां संसार में मेरी कुछ ताकत नहीं चलती।

बल बुध न रही कछू उमेद, मेरो कोई अंग चलत नाहें।
ऐसी उरझाई इन खेल में, एक आस रही तुम माहें।। १७ ।।

हे धनी! मेरी बुद्धि, बल, आशा (उम्मीद) कुछ बाकी नहीं रही और आपकी ओर आने के लिए कोई अंग नहीं चल रहा है। आपने खेल में ऐसा उलझा दिया है कि एक आपकी आशा ही बाकी बची है।

और आसा उमेद कछू ना रही, और रख्या न कोई ठौर।
एता दृढ़ तुम कर दिया, कोई नाहीं तुम बिना और।। १८ ।।

आपके सिवाय मेरी कोई आशा (उम्मीद) नहीं रही और न आपके बिना कोई ठिकाना रह गया है। आपने इतना निश्चित कर दिया है कि आपके बिना कुछ है ही नहीं।

बल बुध आसा उमेद, ए तुम राखी तुम पर।
मुझमें मेरा कछू ना रह्या, अब क्या कहूं क्योंकर।। १९ ।।

मेरा बल, बुद्धि और आशा सब आपके अधीन हो गए हैं। मुझमें मेरा कुछ नहीं रह गया। अब क्या कहूं और आपसे कैसे कहूं?

स्यामाजीएं मोहे सुध दई, तब मैं जानी न सगाई सनमंध।
सुध धनी धाम न आपकी, ऐसी थी हिरदे की अंध।। २० ।।

श्री श्यामाजी ने आकर मुझे खबर दी, तब मैं अपने मूल सम्बन्ध को नहीं पहचान सकी और न आपकी न अपने घर की सुध रही, ऐसी हृदय की अन्धी थी।

तब जानों इन बात की, कोई देवे दूजा साख।
सो हलके हलके देत गए, मैं साख पाई कई लाख।। २१ ।।

तब मैंने सोचा कि इस बात की कोई दूसरा भी गवाही दे, तो आप धीरे-धीरे गवाहियां देते गए और मुझे लाखों गवाहियां मिल गईं।

मैं हुती बीच लड़कपने, तब कछुए न समझी बात।
मोहे सब कही सुध धाम की, भेख बदल आए साख्यात।। २२ ।।

मुझमें पहले बचपना था उस समय मैं कुछ समझ नहीं सकी। आप भेष बदलकर साक्षात् आए और परमधाम की सारी हकीकत की सुध दी।

Nijanand App

सोई वचन मेरे धनीय के, हाथ कुंजी आई दिल को।
उरझन सारे ब्रह्मांड के, मैं सुरझाऊं इन सों।। २३ ।।

मेरे धाम धनी ने अपने मीठे वचनों से समझाकर तारतम की कुंजी मेरे हाथ में दी। सारे ब्रह्माण्ड की उलझनें मैं इस तारतम वाणी से सुलझाती हूं।

पेहेले पाल न सकी सगाई, ना कर सकी पेहेचान।
पर हम बीच खेल के, कई पाए धनी धाम निसान।। २४ ।।

पहले (श्री देवचन्द्रजी के तन में) मैं पहचान न सकी और न मूल सम्बन्ध को ही निभा सकी, परन्तु अब खेल में धाम धनी की गवाहियां धर्मग्रन्थों से पा ली हैं।

कई साखें बीच कागदों, मुझ पर आया फुरमान।
इनमें इसारतें रमूजें, सो मैं ही पाऊं पेहेचान।। २५ ।।

कई धर्मशास्त्रों में भी गवाहियां लिखी हैं। कुरान भी मेरे वास्ते आया जिसमें आपने सभी गुप्त बातों के छिपे रहस्य लिखे हैं। उनको मैं ही पहचान सकती हूं।

मेरे धनी की इसारतें, कोई और न सके खोल।
सो भी आतम ने यों जानिया, ए जो स्यामाजी कहे थे बोल।। २६ ।।

मेरे धनी की गुझ (गुह्य) बातों की इशारतों को कोई और नहीं खोल सकता। मेरी आत्मा ने यह जान लिया है, क्योंकि ऐसे वचन श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी महाराज) ने भी कहे थे कि सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों का रहस्य तुझसे खुलेगा।

ए सुध हुई त्रैलोक को, सबों जान्या इनों घर धाम।
मोहे बैठाए बीच दुनी के, दिया ऐसा सुख आराम।। २७ ।।

अब चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को ज्ञान हो गया है कि मेरा घर अखण्ड परमधाम है और आपने मुझे दुनियां के बीच बिठाकर ऐसा मान का सुख दिया।

सो बातें मैं केती कहूं, मैं पाई बेसुमार।
पर एक बात न सुनाई मुख की, अजूं न कछू देत दीदार।। २८ ।।

अब इन बातों को मैं कहां तक कहूं? मुझे यहां बेशुमार गवाहियां मिल गई हैं, परन्तु आपने अपने मुखारबिन्द से एक बार भी कोई बात नहीं की और न आप सामने ही आते हो।

अब ऐसा दिल में आवत, जेता कोई थिर चर।
सब केहेसी प्रेम धनीय का, कछू बोले ना इन बिगर।। २९ ।।

अब मेरे दिल में ऐसा आता है कि जितने भी यहां चर व अचर प्राणी हैं वह सब आपके प्रेम के गुणों का गान करें और इसके बिना संसार में और कुछ न बोलें।

ऐसा आगूं होएसी, आतम नजरों भी आवत।
जानों बात सुनों मैं धनीय की, पर मोहे अजूं बिलखावत।। ३० ।।

ऐसा आगे होने वाला है और मेरी आत्मा भी गवाही देती है कि मैं धनी की बातें सुनूंगी, परन्तु धनी मुझे अभी भी बिलखा रहे हैं।

Nijanand App

ना कछू देखूं दरसन, ना कछू केहेने की आस।
ना कछू सुध सनमंध की, बैठी हों कदम के पास।। ३१ ।।

न मैं आपके दर्शन कर सकती हूं और न कुछ कहने की हिम्मत ही पड़ती है। न मुझे अपने सम्बन्ध की सुध है, यद्यपि मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं।

धनी एती भी आसा न रही, जो करूं तुमसों बात।
ना बात तुमारी सुन सकों, न देखूं तुमें साख्यात।। ३२ ।।

हे धनी! मेरी इतनी आशा नहीं रही कि मैं आपसे बातें करूं या आपकी बात सुन सकूं या आपके साक्षात् दर्शन कर सकूं।

एह धनी एह घर सुख, सनमंध दियो भुलाए।
लगाव न रह्यो एक रंचक, ताथें मेरो कछू न बसाए।। ३३ ।।

आप मेरे धनी और यह परमधाम मेरे सुखों का घर है। खेल ने सारा सम्बन्ध भुला दिया और थोड़ा सा भी लगाव नहीं रखा, इसलिए अब मेरा कुछ वश नहीं चलता।

कहा करूं किन सों कहूं, ना जागा कित जाऊं।
एता भी तुम दृढ़ कर दिया, तुम बिना न कित ठांऊ।। ३४ ।।

अब मैं क्या करूं? किससे कहूं? कहां जाऊं? कोई ठिकाना नहीं है, क्योंकि आपने यह निश्चित करा दिया है कि आपके चरणों के बिना कोई ठिकाना नहीं है।

न कछू एता बल दिया, जो लगी रहूं पिउ चरन।
पर ए सब हाथ खसम के, और पुकारूं आगे किन।। ३५ ।।

आपने इतनी भी ताकत नहीं दी कि मैं आपके चरणों को ही पकड़े रहूं। हे धनी! यह सब आपके हाथ में है तो अब मैं किसके आगे जाकर पुकारूं?

रोई तो भी जाहेर, पुकारी जोस खुमार।
जो देते रंचक बातूनी, तो होती खबरदार।। ३६ ।।

यदि मैं यहां रोती हूं तो मेरा राज़ खुल जाता है और यदि आपके विरह के जोश से पुकारती हूं तो बेहोश हो जाती हूं। यदि आप थोड़ा सा भी रहस्य जाहिर कर देते तो मैं सावचेत (सावधान) हो जाती।

अब केहेना तो भी तुमको, ठौर तो भी तुम।
अंगना तो भी धनी की, तुम हो धनी खसम।। ३७ ।।

हे धनी! अब जो कुछ कहना है वह तुमसे और ठिकाना आपके चरण कमल हैं। मैं आपकी अंगना हूं और आप मेरे पति हैं।

आसा उमेद धनी की, बल बुध ठौर धनी।
पिंड न रह्यो ब्रह्मांड, तुम ही में रही करनी।। ३८ ।।

मेरी आशा (उम्मीद) आप ही हैं तथा मेरा बल, बुद्धि और ठिकाना सब आप हैं। मेरे लिए पिण्ड और ब्रह्माण्ड कुछ नहीं है। सारी करनी आपके लिए है।

Nijanand App

जोर कर जुदागी कर दई, और जोर कर जगावत तुम।
केहेनी सुननी मेरे कछू ना रही, तो क्यों बोलूं मैं खसम।। ३९ ।।

आपने बल से जुदा कर दिया और जोर लगाकर अब जगा भी रहे हो। मेरे में कुछ कहने-सुनने की ताकत नहीं है, तो हे धनी! मैं कैसे बोलूं?

ऐसे कायम सुख के जो धनी, किन विध दई भुलाए।
इन दुख में देखावत ए सुख, हिरदे तुम ही चढ़ाए।। ४० ।।

ऐसे अखण्ड सुख को देने वाले आप मेरे धनी हो, तो आपने मुझे कैसे भुला दिया? इस संसार में बिठाकर अखण्ड सुख दिखाते हो मेरे हृदय में केवल आप ही हैं।

ऐसे सुख अलेखे अखंड, भुलाए दिए माहें खिन।
सुख देखत उनथें अधिक, पर आवे अग्याएं अंतस्करन।। ४१ ।।

ऐसे बेशुमार अखण्ड सुखों को एक पल में भुला दिया। अब उससे भी अधिक सुख देख रही हूं, परन्तु वह आपकी आज्ञा से ही अन्तःकरण में आएंगे।

खेल किया हुकम सों, हम आए हुकम।
हुकमें दरसन देखावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४२ ।।

यह खेल आपके हुकम से बना है और आपके हुकम से ही हम खेल देखने आए हैं। आपके हुकम से ही दर्शन होंगे। आपके हुकम के बिना यहां कुछ है ही नहीं।

हुकमें इस्क आवहीं, कदमों जगावे हुकम।
करनी हुकम करावहीं, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४३ ।।

आपके हुकम से ही इश्क मिलेगा जिससे आपके चरणों में जागकर खड़े होंगे। आपके हुकम से हम यहां करनी करते हैं। आपके हुकम के बिना कुछ नहीं है।

हुकम उठावे हंसते, रोते उठावे हुकम।
हार जीत दुख सुख हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४४ ।।

आपके हुकम से ही हम हंसते उठेंगे और आपके हुकम से ही रोते उठेंगे। हार-जीत, दुख-सुख सब आपके हुकम से ही होता है। आपके हुकम के बिना और कुछ नहीं है।

हुआ है सब हुकमें, होत है हुकम।
होसी सब कछू हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम।। ४५ ।।

जो कुछ हुआ है सब हुकम से हुआ है। जो हो रहा है या आगे होगा, सब हुकम से ही होगा। धनी आपके हुकम के बिना और कुछ नहीं है।

अब ज्यों जानो त्यों करो, कछू रह्या न हमपना हम।
इन झूठी जिमी में बैठ के, कहा कहूं तुमें खसम।। ४६ ।।

हे धनी! अब जैसा चाहो वैसा करो। हमारे अन्दर हमारा अपनापन (अंह) नहीं रह गया। अब इस झूठी जमीन में बैठकर, हे धनी! मैं आपसे क्या कहूं?

ए भी दृढ़ तुम कर दिया, सब कछू हाथ हुकम।
कछू मेरा मुझ में ना रह्या, तातें कहा कहूं खसम।। ४७ ।।

यह भी आपने दृढ़ कर दिया है कि सभी कुछ आपके हुकम के हाथ में है। मेरे में मैं-पना (स्वाभिमान) नहीं रह गया, तो अब मैं आपसे क्या कहूं?

Nijanand App

जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम।
जब कछू तुम हीं करोगे, तब केहेसी आए हम।।४८।।

मैं करोड़ों बार भी कहूं तो इतना ही कहना है कि जब आप कृपा करोगे तो आपके सामने आकर हम आपसे बात करेंगे।

अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम।।४९।।

अब तो कहने को कुछ रहा ही नहीं, ऐसी जुदाई आपने करदी है। आप ही जागृत करके बिठाओगे तब हम आकर कहेंगे।

हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम।।५०।।

हमारे अन्दर यदि कुछ बात होती तो तुम्हारे आगे मैं रोती। अब ऐसा तो कुछ रहा ही नहीं, तो अब मैं क्या कहूं?

भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए।।५१।।

मैंने संसार में आकर जो अच्छा समझा, वह किया। अब आप ही कुछ दिलासा दोगे तो आशा लेकर आप से कहूंगी।

तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस।।५२।।

तुमने हमारे वास्ते ही यह खेल बनाया होगा, लेकिन यह माया का संसार निराशा से भरा है। ऐसी निराशा दिल में आने के बाद यह लगता है कि मैं जिन्दा क्यों हूं?

एक आह स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इनथें कोट गुनी।।५३।।

एक ठण्डी आह भरने से सांस निकल जानी चाहिए, परन्तु वह भी आपके हाथ होने से नहीं निकली बात भी कही तो एक ही, चाहे मुख से करोड़ों बार कह लूं।

महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल।।५४।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं शर्मिन्दी हूं, क्योंकि मैं सब अवसरों पर भूल गई, इसलिए मुझे लज्जा आती है। अब कैसे कहूं कि इस जुदाई को दूरकर अपने सामने बुलाओ।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५४ ॥

मैं खुदी काढ़े का इलाज

हम लिए कौल खुदाए के, हक के जो परवान।
लई कई किताबें साहेदियां, कई हदीसें फुरमान।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमने पारब्रह्म के वचनों को ग्रहण करके उनका पालन किया। कई धर्म ग्रन्थों, कुरान और हदीसों से गवाहियां लीं।

Nijanand App

जो कहूं कई कोट बेर, तो केहेना एता ही खसम।
जब कछू तुम हीं करोगे, तब केहेसी आए हम।। ४८ ।।

मैं करोड़ों बार भी कहूं तो इतना ही कहना है कि जब आप कृपा करोगे तो आपके सामने आकर हम आपसे बात करेंगे।

अब तो केहेना कछू ना रह्या, ऐसी अंतराए करी खसम।
जब तुम जगाए बैठाओगे, तब केहेसी आए हम।। ४९ ।।

अब तो कहने को कुछ रहा ही नहीं, ऐसी जुदाई आपने करदी है। आप ही जागृत करके बिठाओगे तब हम आकर कहेंगे।

हम में जो कछू रख्या होता, तो इत केहेते तुमको हम।
सो तो कछुए ना रह्या, अब कहा कहूं खसम।। ५० ।।

हमारे अन्दर यदि कुछ बात होती तो तुम्हारे आगे मैं रोती। अब ऐसा तो कुछ रहा ही नहीं, तो अब मैं क्या कहूं?

भला जो कछू जान्या सो किया, इन झूठी जिमी में आए।
जब कछू उमेद देओगे, तब कहूंगी आस लगाए।। ५१ ।।

मैंने संसार में आकर जो अच्छा समझा, वह किया। अब आप ही कुछ दिलासा दोगे तो आशा लेकर आप से कहूंगी।

तुम किया होसी हम कारने, पर ए झूठी जिमी निरास।
ऐसा दिल उपजे पीछे, क्यों ले मुरदा स्वांस।। ५२ ।।

तुमने हमारे वास्ते ही यह खेल बनाया होगा, लेकिन यह माया का संसार निराशा से भरा है। ऐसी निराशा दिल में आने के बाद यह लगता है कि मैं जिन्दा क्यों हूं?

एक आह स्वांस क्यों ना उड़े, सो भी हुआ हाथ धनी।
बात कही सो भी एक है, जो कहूं इनथें कोट गुनी।। ५३ ।।

एक ठण्डी आह भरने से सांस निकल जानी चाहिए, परन्तु वह भी आपके हाथ होने से नहीं निकली बात भी कही तो एक ही, चाहे मुख से करोड़ों बार कह लूं।

महामत कहे मैं सरमिंदी, सब अवसर गई भूल।
ऐसी इन जुदागी मिने, क्यों कहूं करो सनकूल।। ५४ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि मैं शर्मिन्दी हूं, क्योंकि मैं सब अवसरों पर भूल गई, इसलिए मुझे लज्जा आती है। अब कैसे कहूं कि इस जुदाई को दूरकर अपने सामने बुलाओ।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५४ ॥

मैं खुदी काढ़े का इलाज

हम लिए कौल खुदाए के, हक के जो परवान।
लई कई किताबें साहेदियां, कई हदीसें फुरमान।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हमने पारब्रह्म के वचनों को ग्रहण करके उनका पालन किया। कई धर्म ग्रन्थों, कुरान और हदीसों से गवाहियां लीं।

Nijanand App

कई साखें सास्त्रन की, कई साखें साधों की बान।
ए ले ले रूह को दृढ़ करी, आखिर वसीयत नामें निदान।। २ ।।

कई शास्त्रों की और कई साधुओं की वाणियों से गवाहियां लीं। आखिर मक्का से आए वसीयतनामों से आत्मा को दृढ़ता हो गई।

जाहेर बाहेर बातून, अंदर अंतर तुम।
कहूं जरे जेती जाएगा, नहीं खाली बिना खसम।। ३ ।।

जाहिरी में बाहर, अन्दर और बातून में सब जगह पर आप ही हैं। कोई थोड़ी जगह भी आपके बिना खाली नहीं है।

सब ठौरों सुध तुम को, कछू छूट न तुम इलम।
ए सक मेट बेसक तुम करी, कछू न बिना हुकम खसम।। ४ ।।

आपकी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने साफ समझा दिया कि आपको सब जगह का इलम है। धनी! आपके हुकम के बिना कुछ भी नहीं है। यह सब संशय आपके ज्ञान ने मिटाकर बेशक कर दिया।

जरा न हुकम सुध बिना, सबन के दम दम।
साइत न खाली पाइए, बिना हुकम खसम।। ५ ।।

सब मानवों के अन्दर क्या है? आपके हुकम को सब सुध है। आपके हुकम के बिना एक पल भी यहां नहीं बीतता।

एते दिन मैं यों जान्या, मैं बैठी नाहीं के माहें।
तो इत का सन्देसा, हक को पोहोंचत नाहें।। ६ ।।

अभी तक मैं संसार में बैठकर यही जानती थी कि यहां का सन्देश आप तक पहुंचता नहीं है।

सो तेहेकीक तुम कर दिया, जो खेल नूर से उपजत।
इलम खुदाई हुकम बिना, कहूं खाली न पाइए कित।। ७ ।।

अब आपने यह यकीन दिला दिया कि जो ब्रह्माण्ड अक्षर से पैदा होते हैं उन सबमें आपके इलम और हुकम के बिना कहीं कुछ नहीं होता।

सांच झूठ बड़ी तफावत, ज्यों नाहीं और है।
सो हुकमें खेल बनाए के, सत गिरो को देखावें।। ८ ।।

सत्य और झूठ में बड़ा फर्क है जैसे 'नहीं' और 'है' में, अर्थात् निराकार और अखण्ड में आपके हुकम ने ऐसा झूठ का खेल बनाया और सच्ची ब्रह्मसृष्टियों को दिखाया।

बनाए कबूतर खेल के, ज्यों देखावे दुनियां को।
यों देखावें सत गिरो को, ए जो पैदा कुंन सों।। ९ ।।

जैसे बाजीगर खेल में कबूतर बनाकर दुनियां को दिखाता है, उसी तरह से 'कुंन' कहकर यह खेल पैदा किया और ब्रह्मसृष्टियों को दिखा रहे हो।

हम बैठे वतन कदम तले, तहां बैठे खेल देखत।
तित ख्वाब से सन्देसा, तुमें क्यों न पोहोंचत।। १० ।।

हम परमधाम में आपके चरणों के तले बैठकर खेल देख रहे हैं। उसी तरह से सपने से हमारा सन्देश आप को क्यों नहीं पहुंचता?

Nijanand App

ए इलम हकें दिया, किया नाहीं थें मुकरर हक।
रूहअल्ला महंमद मेहेर थें, कहूं जरा न रही सक।। ११ ।।

आपके इलम ने यह सत्य सिद्ध कर दिया कि आप निराकार से अलग अखण्ड शुद्ध साकार हैं तथा श्यामा महारानी (श्री देवजन्द्रजी) और मुहम्मद साहब की मेहर से अब जरा भी संशय नहीं रह गया।

हम बैठे लैलत-कदर में, संदेसा पोहोंचावें तुम।
इलम सूरत हमारी रूह की, पोहोंची चाहिए खसम।। १२ ।।

हम इस मोह की रात्रि में संसार में बैठकर आपको सन्देश पहुंचाते हैं। हमारी आत्मा का ज्ञान और ध्यान (सुरता) आप तक पहुंचना चाहिए।

ए तेहेकीक तुम कर दिया, मैं तो बैठी बीच नाहें।
इन विध खेल खेलावत, हक नाहीं के माहें।। १३ ।।

यह आपने निश्चित कर दिया है कि मैं झूठे संसार में बैठी हूं और आप इस तरह से झूठे संसार का खेल खिला रहे हैं।

अब धनी जानो त्यों करो, पर इत कहूं कहूं रूह तरसत।
कोई कोई चाह जो उठत है, सो हकै उपजावत।। १४ ।।

हे धनी! अब आप जैसा ठीक समझें वैसा करें, परन्तु यहां कभी-कभी हमारी आत्मा तरसती है। जो कुछ इच्छा उठती है वह भी आप कराते हो।

मैं तो बीच नाहीं के, मोहे खेल देखाया जड़ मूल।
ताथें जानो त्यों करो, सरमिंदी या सनकूल।।१५।।

मैं तो झूठे संसार में हूं और मुझे खेल भी शुरू से झूठा दिखाया है। अब आप जैसा जानें तैसा करें। चाहे आप मुझे प्रसन्न करें या शर्मिन्दा करें।

अब क्या करूं किन सों कहूं, कोई रह्या न केहेवे ठौर।
ए भी कहावत तुमहीं, कोई नाहीं तुम बिना और।। १६ ।।

मैं अब क्या करूं, किससे कहूं? कोई ठिकाना ही नहीं रहा। यह भी आप ही कहलाते हैं। आपके बिना दूसरा कोई नहीं है।

बिन फुरमाए हक के, दिल जरा न उपजत।
तो क्यों दिल ऐसा आवत, जो हक मांग्या न देवत।। १७ ।।

बिना आपके हुकम के हमारे दिल के अन्दर किसी भी चीज की इच्छा नहीं होती है। हमारे दिल में ऐसा क्यों आता है कि आप मांगने से देते नहीं हैं?

हक उपजावत देवे को, सो हकै देवनहार।
मैं दोष हक का देख के, क्यों होत गुन्हेगार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज देने के वास्ते ही मन में चाहना पैदा करते हैं और वही सामर्थ्य देने वाले हैं। अब 'श्री राजजी का दोष है', ऐसा कहकर मैं गुनहगार क्यों बनूं?

उपजे उपजावे सब हक, हक देवें दिलावें।
मैं जो करत गुन्हेगारी, सो बीच काहे को आवे।। १९ ।।

मन में जो चाहना होती है धनी आप ही पैदा कराते हो। आप ही देते दिलवाते हो। तो इस बीच, मैं मांगकर क्यों गुनहगार बनूं?

Nijanand App

हकें पोहोंचाई इन मजलें, और दोस हक को देवत।
एही मैं मारी चाहिए, जो बीच करे हरकत।। २० ।।

धनी आपने मुझे यहां तक पहुंचा दिया है कि मैं आपको भी दोषी ठहराने लगी। इसी 'मैं' और 'अहंकार' को मारना चाहिए जो बीच में रुकावट (हरकत) डालती है।

मैं तो बीच नाहीं मिने, सो हक को पोहोंचत नाहें।
सो बीच दिल के बैठके, गुनाह देत रूह के तांए।। २१ ।।

मैं तो इस झूठे संसार में हूं, इसलिए मेरी पहुंच आप तक नहीं है, लेकिन मेरे दिल के अन्दर यह 'मैं' (अहंकार) बैठकर मेरी आत्मा को गुनहगार बनाती है।

मैं मैं करत मरत नहीं, और हक को लगावे दोस।
अब मेहेर हक ऐसी करें, जो इन मैं थें होऊं बेहोस।। २२ ।।

यह मैं जो 'मैं मैं' करती रहती हूं और मेरी 'मैं' (अहंकार) समाप्त होती नहीं है। उल्टा धनी पर दोष लगाती हूं। अब धनी आप ही ऐसी कृपा करें तो यह मेरी 'मैं' (अहंकार) छूट जाए।

झूठ न भेदे सांच को, सांच अंग सत साबित।
बाहेर उपली अंधेर देखाए के, होए जात असत।। २३ ।।

झूठ सत्य को नहीं तोड़ सकता, क्योंकि सच्चे अंग अखण्ड होते हैं। बाहर और ऊपर से माया दिखाकर सब झूठ जैसा ही लगता है।

ए जो फना सब झूठ है, जो ऊपर से देखाया।
सो क्यों भेदे हक को, जो नाहीं असत माया।। २४ ।।

यह झूठा संसार जो आपने हमें दिखाया है और जो झूठी माया है, वह निराकार को छोड़कर अखण्ड में कैसे जा सकती है?

सत को सत भेदत है, बीच झूठ के हक।
ए सन्देसा तब पोहोंचही, जब रूह निपट होए बेसक।। २५ ।।

सत ब्रह्मसृष्टि ही आप तक पहुंच सकती है। जो ब्रह्मसृष्टियां अब इस झूठे संसार में हैं, जब इन ब्रह्मसृष्टियों के संशय मिट जाएं तभी इनका यहां से सन्देश आप तक पहुंच सकता है।

ए सांच सन्देसा हक को, तोलों न पोहोंचत।
गेहेरा जल है मैंय का, आड़ा जो असत।। २६ ।।

ब्रह्मसृष्टियों का सन्देश संसार से तब तक आपको नहीं पहुंचेगा जब तक इस झूठी 'मैं' का (अहंकार का) परदा नहीं उड़ता।

सो मैं मैं झूठी दिल पर, जब लग करे कुफर।
सत सन्देसा तौहीद को, तोलों पोहोंचे क्यों कर।। २७ ।।

यह झूठी 'मैं मैं' जब तक दिल में अहंकार लिए बैठी है तब तक आत्मा का सन्देश धनी को कैसे पहुंचे?

ए मैं मैं क्यों ए मरत नहीं, और कहावत है मुरदा।
आड़े नूर-जमाल के, एही है परदा।। २८ ।।

यह 'मैं' जो मुर्दा कहलाती है और फिर भी 'मैं' (अहंकार) मरता क्यों नहीं? क्योंकि यही 'मैं' (अहंकार) मेरे और धनी के बीच में परदा है।

Nijanand App

ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए।
ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए।। २९ ।।

अब मैंने इस अहं के परदे को अच्छी तरह से जान लिया। अब कोई इस अहं के परदे को उड़ा दे, परन्तु धनी ने यह निश्चित कर दिया है कि यह परदा (अहं का) उनके हुकम के बिना नहीं हटेगा।

मारा कह्या काढा कह्या, और कह्या हो जुदा।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा।। ३० ।।

मैं कहती हूं कि मैंने 'मैं' (अहं) को मार दिया, निकाल दिया, अलग कर दिया पर इन शब्दों में भी जो 'मैं' आई (मैंने कर दिया इत्यादि) यदि हट जाए तो फिर बाकी धनी ही रह जाते हैं।

पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर।। ३१ ।।

इस 'मैं' (अहं) को मिटाने के लिए पहले मौत का शर्बत पी और तुम्हें यह निश्चित हो जाए कि तुम्हारा अहं समाप्त हो गया है तो एक जरा सा भी संशय धनी के प्रति मत रखो। उसके बाद संसार में जीना और मरना तुम्हारे लिए एक जैसा हो जाएगा।

एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें।
तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें।। ३२ ।।

यही 'मैं' (अहं) का परदा आत्मा और धनी के बीच है और कुछ भी नहीं है। इसके हटा देने से संसार में जीते हुए परमधाम का सुख लिया जा सकता है।

ए सुन्या सीख्या पढ़्या, कह्या विचार्या विवेक।
अब जो इस्क लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक।। ३३ ।।

यह सब कुछ मैंने सुना, सीखा और पढ़ा। इस पर विचार भी किया। अब आत्मा जो आपका इश्क ले रही है, वह सब कुछ समाप्त कर एक धनी को पाने के वास्ते ही है।

तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन।
सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन।। ३४ ।।

तभी तुम्हारी दोस्ती सच्ची कहलाएगी और तुम मोमिन कहलाओगे। यदि तुम इस मंजिल तक पहुंच जाओ तो तुम्हारी बड़ी शोभा है।

महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार।
खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार।। ३५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे वतन के साथियो सुन्दरसाथजी! धनी आप से अहंकार की कुर्बानी चाहते हैं, इसलिए 'मैं' (अहं) मारने के रास्ते पर आ जाओ।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ८९ ॥

मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सों मारना मैं।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे।। १ ।।

इस संसार की 'मैं' (अहं) धनी की 'मैं' के बिना नहीं मरेगी, अर्थात् संसार से चित्त हटाकर जब धनी में चित्त लग जाएगा तो धनी मेरे हैं यह भाव आ जाएगा और संसार की 'मैं' मिट जाएगी। फिर मुंह से यही निकलेगा धनी के हुकम से हुआ है, हो रहा है और होगा।

Nijanand App

ए पट नीके पाइया, जो मैं को उड़ावे कोए।
ए दृढ़ हकें कर दिया, अब जुदा हक से होए।। २९ ।।

अब मैंने इस अहं के परदे को अच्छी तरह से जान लिया। अब कोई इस अहं के परदे को उड़ा दे, परन्तु धनी ने यह निश्चित कर दिया है कि यह परदा (अहं का) उनके हुकम के बिना नहीं हटेगा।

मारा कह्या काढा कह्या, और कह्या हो जुदा।
एही मैं खुदी टले, तब बाकी रह्या खुदा।। ३० ।।

मैं कहती हूं कि मैंने 'मैं' (अहं) को मार दिया, निकाल दिया, अलग कर दिया पर इन शब्दों में भी जो 'मैं' आई (मैंने कर दिया इत्यादि) यदि हट जाए तो फिर बाकी धनी ही रह जाते हैं।

पेहेले पी तूं सरबत मौत का, कर तेहेकीक मुकरर।
एक जरा जिन सक रखे, पीछे रहो जीवत या मर।। ३१ ।।

इस 'मैं' (अहं) को मिटाने के लिए पहले मौत का शर्बत पी और तुम्हें यह निश्चित हो जाए कि तुम्हारा अहं समाप्त हो गया है तो एक जरा सा भी संशय धनी के प्रति मत रखो। उसके बाद संसार में जीना और मरना तुम्हारे लिए एक जैसा हो जाएगा।

एही पट आड़े तेरे, और जरा भी नाहें।
तो सुख जीवत अर्स का, लेवे ख्वाब के माहें।। ३२ ।।

यही 'मैं' (अहं) का परदा आत्मा और धनी के बीच है और कुछ भी नहीं है। इसके हटा देने से संसार में जीते हुए परमधाम का सुख लिया जा सकता है।

ए सुन्या सीख्या पढ़्या, कह्या विचार्या विवेक।
अब जो इस्क लेत है, सो भी और उड़ाए पावने एक।। ३३ ।।

यह सब कुछ मैंने सुना, सीखा और पढ़ा। इस पर विचार भी किया। अब आत्मा जो आपका इश्क ले रही है, वह सब कुछ समाप्त कर एक धनी को पाने के वास्ते ही है।

तो सोहोबत तेरी सत हुई, सांचा तूं मोमिन।
सब बड़ाइयां तुझ को, जो पोहोंचे मजल इन।। ३४ ।।

तभी तुम्हारी दोस्ती सच्ची कहलाएगी और तुम मोमिन कहलाओगे। यदि तुम इस मंजिल तक पहुंच जाओ तो तुम्हारी बड़ी शोभा है।

महामत कहे ए मोमिनों, सुनो मेरे वतनी यार।
खसम करावे कुरबानियां, आओ मैं मारे की लार।। ३५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे वतन के साथियो सुन्दरसाथजी! धनी आप से अहंकार की कुर्बानी चाहते हैं, इसलिए 'मैं' (अहं) मारने के रास्ते पर आ जाओ।

॥ प्रकरण ॥ २ ॥ चौपाई ॥ ८९ ॥

मैं बिन मैं मरे नहीं, मैं सों मारना मैं।
किन विध मैं को मारिए, या विध हुई इनसे।। १ ।।

इस संसार की 'मैं' (अहं) धनी की 'मैं' के बिना नहीं मरेगी, अर्थात् संसार से चित्त हटाकर जब धनी में चित्त लग जाएगा तो धनी मेरे हैं यह भाव आ जाएगा और संसार की 'मैं' मिट जाएगी। फिर मुंह से यही निकलेगा धनी के हुकम से हुआ है, हो रहा है और होगा।

Nijanand App

और भी हकीकत मैंय की, जिन विध मरे जो ए।
सो ए खसम बतावत, बल अपने इलम के।।२।।

'मैं' (अहं) को मारने का और भी दूसरा तरीका है जिससे संसार का अहं 'मैं' भाव मारा जा सकता है। अब धनी अपने तारतम ज्ञान की वाणी से 'मैं' (अहं) को मारने का तरीका बताते हैं।

अब मैं मरत है इन विध, और न कोई उपाए।
खुदाई इलम सों मारिए, जो हकें दिया बताए।।३।।

'मैं' (अहं) इस तरह से मरती है। इसका और दूसरा उपाय नहीं है। धनी कहते हैं इस 'मैं' (अहं) को खुदाई इलम से मारो।

जो मैं मारत अव्वल, तो कौन सुख लेता ए।
है नाहीं के फरेब में, सुख नूर पार का जे।।४।।

यदि 'मैं' (अहं) को पहले ही मार देती तो यह दुनियां में अर्श का सुख कैसे मिलता। वह "है" अर्थात सत परम धाम का सुख जो अक्षर के पार है, इस झूठे छल में छिपा है।

मैं दुनी की थी सो मर गई, इन मैं को मारया मैं।
अब ए मैं कैसे मरे, जो आई है खसम से।।५।।

इस दुनियां की 'मैं' (अहं) को धनी की 'मैं' ने मार दिया है। यह धनी की 'मैं' जो धनी की कृपा से आई है वह अब कैसे मर सकती है?

मैं चल आई कदमों, ऐसा दिया बल तुम।
इन विध मैं मरत है, ना कछू बिना खसम।।६।।

हे धनी! आपने ऐसा बल दिया कि मैं आपकी अंगना आपके चरणों में चलकर आ गई। आपकी कृपा के बिना यह सम्भव नहीं था कि मैं दुनियां की 'मैं' (अहं) को छोड़कर आती।

जो मैं मारत आपको, तो आवत कौन कदम।
मैं ना होने में कछू ना रह्या, किया कराया खसम।।७।।

यदि मैं खेल में अपनी 'मैं' (अहं) को पहले ही समाप्त कर देती तो आपके चरणों में कौन आता? मेरी 'मैं' (अहं) समाप्त होने पर मेरे अन्दर कुछ रहता नहीं सिवाए यह कहने के कि करने और करवाने वाले धनी आप ही हैं।

ना मैं अव्वल ना आखिर, मैं नाहीं बीच में।
बन्या बनाया आप ही, सो सब तुम हीं से।।८।।

मैं शुरू, मध्य और आखिर में कहीं नहीं थी। यह जो कुछ भी हो गया है, वह सब आपसे ही होता है और आप ही बनाने वाले हैं।

मैं तो तुमारी कीयल, अव्वल बीच और हाल।
तुम बिना जो कछू देखत, सो सब मैं आग की झाल।।९।।

हे धनी! मैं तो शुरू में, मध्य में और अब भी आपके हुकम से बंधी हूं। आपके बिना और जो कुछ भी दिखता है वह सब अग्नि की लपटें हैं।

Nijanand App

जब लग मैं ना समझी, तब लग थी मैं मैं।
समझे थें मैं उड़ गई, सब कछू हुआ तुम से।। १० ।।

जब तक मैं इस रहस्य को नहीं समझी थी तब तक मेरे अन्दर 'मैं' (अहं) था। अब समझ आने से मेरा 'मैं' (अहं) उड़ गया और यह समझ आ गया जो कुछ हो रहा है आपके हुकम से ही हो रहा है।

अव्वल आखिर सब तुम, बीच में भी तुम।
मैं खेली ज्यों तुम खेलाई, खसम के हुकम।। ११ ।।

शुरू में, बीच में तथा आखिर में सब जगह पर आपने ही किया कराया है। मुझे आपने जैसा खेलाया वैसा खेली।

इन मैं को तो तुम किया, आद मध्य और अब।
और मैं तो नेहेचे नहीं, कितहूं न देखी कब।। १२ ।।

इस 'मैं' (अहं) को आपने ही शुरू, मध्य और आखिर में दिया है। वरना यह अहं तो कुछ था ही नहीं और न कभी देखा समझा ही था।

केहेत केहेलावत तुम ही, करत करावत तुम।
हुआ है होसी तुमसे, ए फल खुदाई इलम।। १३ ।।

अब कहने वाले आप, कहलाने वाले आप। इसी प्रकार से करने-कराने वाले आप हैं। जो हो गया है, जो हो रहा है या जो होगा सब आपके हुकम से ही है। यह सब समझ आपकी जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से मिली।

अब ए मैं जो हक की, खड़ी इलम हक का ले।
चौदे तबक किए कायम, सो भी मैं है ए।। १४ ।।

अब धनी का हुकम लेकर यह 'मैं' धनी (हक) की हो गई। जिसने चौदह तबकों के जीवों को अखण्ड किया, उस धनी की ही 'मैं' है।

ए मैं है हक की, ए है हक का नूर।
खास गिरो जगाए के, पोहोंचत हक हजूर।। १५ ।।

यह धनी की 'मैं' धनी का ही अंग है (नूर है) जो ब्रह्मसृष्टियों को जागृत करके परमधाम पहुंचाती है।

ए मैं इन विध की, सो मैं मरे क्यों कर।
पोहोंचे पोहोंचावे कदमों, जाग जगावे घर।। १६ ।।

यह इस तरह की धनी की 'मैं' कैसे मर सकती है? यह धनी के चरणों में पहुंचाती है और सोए हुए को जगाती है।

एही मैं है हुकम, एही मैं नूर जोस।
एही मैं इलम हक का, एही मैं हक करे बेहोस।। १७ ।।

यही 'मैं' धनी का हुकम है। उनके तेज और जोश की शक्ति यही है। यही उनका तारतम ज्ञान है। इसी धनी की 'मैं' ने मुझे संसार से बेखबर कर दिया (अलग कर दिया) है।

Nijanand App

हक चलाए चल हीं, हक बैठाए रहे बैठ।
सोवे उठावे सब हक, नहीं हुकम आड़े कोई ऐंठ।। १८ ।।

अब मैं आपके चलाने से चलती हूं। बिठाने से बैठती हूं। सोना, उठाना सब आपके हाथ में है। अब आपके हुकम के सामने मेरी कुछ भी अकड़ नहीं है।

रोए हंसे हारे जीते, ईमान या कुफर।
जरा न हुकम सुध बिना, बंदगी या मुनकर।। १९ ।।

रोना, हंसना, हारना, जीतना, ईमान और कुफ्र, बन्दगी और मुनकिरी जरा भी आपके हुकम के बिना नहीं हो सकती।

ए जो मैं हक की, सो भी निकसे हक हुकम।
इन मैं में बंधन नहीं, बंधाए जो होवे हम।। २० ।।

यह जो 'मैं' आपके हुकम से आई है वह आपके हुकम से ही निकलेगी। इस 'मैं' में कोई जाहिरी बन्धन नहीं है। यदि हम कुछ हों तो हम बांधें। जब हम कुछ हैं ही नहीं तो बंधें कैसे?

हम बंधे बंधाए मिट गए, कछू रह्या न हमपना हम।
यों पोहोंचाई बका मिने, इन बिध मैं को खसम।। २१ ।।

हम अच्छे खासे दुनियां में बंधे थे। आपकी 'मैं' ने आकर ऐसा मिटाया कि हमारे अन्दर हम-पना कुछ नहीं रह गया और इस तरह आपने हमको अखण्ड घर अपनी 'मैं' की शक्ति से पहुंचाया।

अब सिर ले हुकम हक का, बैठी धनी की मैं।
जरा इन में सक नहीं, इलम हक के सें।। २२ ।।

अब धनी की 'मैं' धनी का हुकम लेकर मेरे अन्दर बैठी। यह तारतम वाणी से समझ लिया, इसलिए अब कोई संशय बाकी नहीं रहा।

जुदे सब थें इन बिध, इन बिध सब में एक।
सांच झूठ के खेल में, ए जो बेवरा कह्या विवेक।। २३ ।।

इस तरह से हम सब से अलग हो गए। इसी तरह सभी के अन्दर धनी की 'मैं' है। सच्चे ब्रह्मसृष्टि और झूठे संसार में इसका ब्यौरा और किस तरह से हो सकता है।

हुकम जोस नूर खसम, मैं ले खड़ी इलम ए।
ए पांचों काम कर हक के, पोहोंचे गिरो दोऊ ले।। २४ ।।

श्री राजजी का हुकम, जोश, अक्षर, जागृत बुद्धि और 'मैं' स्वयं इन पांचों शक्तियों से मिलकर धनी का काम (सुन्दरसाथ को जगाकर) किया और ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों जमात को लेकर घर (परमधाम) पहुंचे।

ए सातों भए इन विध, पोहोंचे बका में जब।
आप उठ खड़े हुए, पीछे खेल कायम किया सब।। २५ ।।

धनी का हुकम, जोश, अक्षर, जागृत बुद्धि तथा श्यामा महारानी ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि जब अपने अखण्ड घर पहुंचे तब अक्षर ब्रह्म ने जागृत होकर इस खेल के ब्रह्माण्ड को अखण्ड कर लिया।

Nijanand App

मैं तो तेहेकीक न कछू, और न कछू मुझसे होए।
ए मैं विध विध देखिया, इन मैं में खतरा न कोए।। २६ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहते हैं कि मैं संसार में कुछ भी नहीं थी और न ही मुझसे कुछ होना था। अब धनी को मैंने हर तरह से देख लिया है और समझ लिया है कि इस धनी की 'मैं' में किसी प्रकार का खतरा नहीं है।

मैं ना अव्वल ना बीच में, न कछू मैं आखिर।
किया कराया करत हैं, सो सब हक कादर।। २७ ।।

मेरी 'मैं' (अहं) न शुरू में थी, न बीच में थी और न आखिरी में होगी। जो कुछ किया है या हो रहा है या होगा सब श्री राजजी महाराज ही करते हैं।

ए तेहेकीक हकें कर दिया, हकें लई कदम।
बुलाई अपना इलम दे, कर विध विध रोसन हुकम।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज ने यह निश्चित कराकर अपने चरणों में ले लिया। अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मेरे तरह-तरह से संशय मिटाए और अपने हुकम से मुझे बुला लिया।

हकें गिरो बुलाई मोमिन, हकें कराई सोहबत।
नूर पार वचन विध विध के, हकें दई नसीहत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों की जमात को बुलाकर मुझसे मिलवाया। अक्षर के पार अक्षरातीत धाम की सब हकीकत तरह-तरह से सुनाकर मुझे सिखापन दिया।

मैं नाहीं न जानों कछुए, मैं नाहीं जरा रंचक।
हकें इलम जोस देय के, करी सो हुकमें हक।। ३० ।।

मैं कुछ भी नहीं हूं। कुछ जानती भी नहीं। मेरा कोई रूप नहीं है। श्री राजजी महाराज ने अपना इलम और जोश देकर के अपने हुकम से मुझे खुदा बना दिया।

हकें किया हक करत हैं, और हकै करेंगे।
ए रूह को तेहेकीक भई, और नजरों भी देखे।। ३१ ।।

यह सब श्री राजजी महाराज ने किया है, कर रहे हैं और श्री राजजी ही करेंगे। यह मेरी आत्मा में निश्चित हो गया है और नजर से देख भी लिया है।

ए सब हक करत हैं, कौल फैल या हाल।
और मुझ में जरा न देखिया, बिना नूर जमाल।। ३२ ।।

हमारी कहनी, करनी और रहनी श्री राजजी के हुकम से ही होती है। अब मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज के बिना और कुछ भी दिखाई नहीं देता

अब इन बीच में खतरा, हक न आवन दे।
जिन दिल अर्स खावंद, तित क्यों कर कोई मूसे।। ३३ ।।

अब मेरे इस तरह से बदलने में श्री राजजी महाराज खुद ही कोई रुकावट नहीं आने देंगे, क्योंकि श्री राजजी महाराज जिनके दिल को अर्श करके बैठ गये हैं, उनको कोई किस तरह से कष्ट दे सकता है?

Nijanand App

दूजा तो कोई है नहीं, ए जो माया मन दज्जाल।
इलम देखे ए ना कछू, इत जरा नहीं जवाल।। ३४ ।।

यहां धनी के बिना कुछ है ही नहीं, अर्थात् इस तन में न माया है और न दज्जाल की बैठक ही है। तारतम ज्ञान से परखने पर ज्ञात हुआ कि यह सब कुछ नहीं है। मतलब कुछ है ही नहीं। जब कुछ है ही नहीं तो घाटा किस बात का? (गिरावट किस बात की)?

जब हकें इलम ए दिया, तेहेकीक रूह को तुम।
कर मनसा वाचा करमना, कोई ना बिना खसम हुकम।। ३५ ।।

जब श्री राजजी महाराज ने अपना तारतम ज्ञान दिया तो आत्मा के सब संशय मिट गए और मन, वचन और कर्म से दृढ़ता आ गई कि श्री राजजी महाराज के हुकम के बिना कुछ है ही नहीं।

ज्यों ज्यों एह विचारिए, त्यों तेहेकीक होता जाए।
इत जरा नूर-जमाल बिना, रूह में कछू न समाए।। ३६ ।।

इसमें जैसे-जैसे विचार करते हैं वैसे-वैसे और दृढ़ता आती जाती है कि धनी के बिना आत्मा में कुछ भी समा नहीं सकता।

रूहें तन हादीय का, हादी तन हैं हक।
नूर तन नूर-जमाल का, इत जरा नाहीं सक।। ३७ ।।

ब्रह्मसृष्टियां श्यामा महारानी के तन हैं और श्यामा महारानी श्री राजजी के तन हैं। अक्षर ब्रह्म भी अक्षरातीत का अंग हैं। इसमें जरा भी संशय नहीं है।

ए मैं तैं सब हक की, ए इलम अकल धनी।
नूर जोस हुकम हक का, या विध है अपनी।। ३८ ।।

यह 'मैं' और तैं इलम, अकल, नूर, जोश, हुकम, सब धनी का है। इस तरह से यह सब हमारे हैं, क्योंकि मैं स्वयं श्री राजजी की अंगना हूं।

एह खेल हकें किया, आप भी संग इत आए।
अर्स में बैठे देखाइया, ऐसा खेल बनाए।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज ने यह सब खेल बनाया और स्वयं भी साथ में आए। परमधाम में बैठे हुए मोमिनों को ऐसा खेल बनाकर दिखाया।

भुलाए वतन आप खसम, खेल देखाए के जुदागी।
मेहेर करी इन विध की, बैठे खेलै में जागी।। ४० ।।

धनी ने इस प्रकार की जुदाई का खेल दिखाया कि हम घर को, धनी को और अपने आपको भूल गए। अब हमारे ऊपर ऐसी कृपा की कि हम खेल में बैठे जागृत हो गए।

जगाए लई रूहें अपनी, कदमों जो असल।
यामें संदेसा कहे, इत बैठे हैं सामिल।। ४१ ।।

धनी ने अपनी रूहों को जिनकी परआतम उनके चरणों के तले बैठी हैं, जगा लिया। धर्मग्रन्थ कहते हैं कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में यहां आकर बैठे हैं।

Nijanand App

इत ना मैं आई ना फिरी, ए तो हुकमें किया पसार।
ए मैं हुकमें मैं करी, अब हुकम देत मैं मार।। ४२ ।।

मैं इस दुनियां में न आई हूं और न ही वापस गई हूं। यह तो सब धनी के हुकम का पसारा है। यह मेरे अन्दर जो संसार की 'मैं' (अहं) आ गई थी, वह धनी के हुकम से आई थी । अब वह धनी का हुकम ही मेरी संसार की 'मैं' (अहं) को मार देता है।

जब लग मैं सुपने मिने, नहीं खसम पेहेचान।
तब लग मैं सिर अपने, बोझ लिया सिर तान।। ४३ ।।

जब तक मेरे अन्दर सपने की 'मैं' थी, तब तक श्री राजजी की पहचान नहीं थी। तब तक मैंने सारा बोझ अपने सिर पर ले लिया था कि मानो जैसे मैं ही सब कुछ करने वाली हूं।

अब खसम ख्वाब की सुध परी, और सुध परी हुकम।
तब मैं में जरा न रही, मैं बैठी तले कदम।। ४४ ।।

अब इस संसार में धनी की तथा धनी के हुकम की पहचान हो गई तो मेरे अन्दर संसार की 'मैं' (अहं) तनिक मात्र भी नहीं रह गई और अपनी आत्मा को धनी के चरणों तले बैठा पाया।

इलम खुदाई ना होता, तो क्यों संदेसा पोहोंचत।
नूर-तजल्ला के अंदर की, कौन इसारतें खोलत।। ४५ ।।

यदि तारतम ज्ञान न होता तो धनी का सन्देश हमारे पास तक कैसे पहुंचता और परमधाम के अन्दर की सारी हकीकत जो धर्मग्रन्थों में लिखी है उसे कौन खोलता ?

सब मेयराज की इसारतें, कौन साहेदी कलमें देत।
जो अर्स अरवाहें इत न होती, तो मता खिलवत का कौन लेत।। ४६ ।।

रसूल साहब के मेयराज (दर्शन) में जो बातें इशारतों में कुरान में कही थीं उनके भेद कौन खोलता ? यदि अर्श के मोमिन संसार में न होते तो अर्श की खिलवत (मूल-मिलावे) की बातों को कौन लेता ?

चौथे आसमान लाहूत में, रूहअल्ला बसत।
पेहेले बताई फुरकानें, सो मोमिन भेद जानत।। ४७ ।।

चौथे आसमान (लाहूत) में श्यामा महारानी रहते हैं। यह बात कुरान में बताई, इस भेद को मोमिन भी जानते हैं, क्योंकि वह परमधाम के हैं।

कुन्जी नूर के पार की, रूहअल्ला दई मुझ।
केहे बातून मगज मुसाफ का, करों जाहेर जो है गुझ।। ४८ ।।

अक्षरधाम के पार अक्षरातीत परमधाम की तारतम ज्ञान की कुंजी श्यामा महारानी ने लाकर मुझे दी जिससे कुरान के छिपे भेदों के रहस्य मैं जाहिर कर रही हूं।

जो रखे रसूलें हुकमें, और सबन थें छिपाए।
सो मोको कुंजी देय के, कौल पर जाहेर कराए।। ४९ ।।

रसूल साहब ने हक के हुकम से जिन तीस हजार शब्दों को छिपाकर रखा था, उनके रहस्य मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी देकर समय पर जाहिर करवा दिए।

Nijanand App

तो गुनाह अर्स अजीम में, लिख्या सब मेयराज के माहें।
करें जाहेर अर्स दिल मोमिन, जित जबराईल पोहोंच्या नाहें।।५०।।

रसूल साहब ने कुरान में लिखा है कि परमधाम में रूहों को गुनाह लगा। यह भी लिखा है कि जहां जबराईल फरिश्ता नहीं पहुंच सकता। इस भेद को ब्रह्मसृष्टि ही जाहिर करेंगी जिनके दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं।

ए मैं बोले जो कछु, सो संदेसा रूहअल्ला जान।
ए इलम हकीकत वतनी, कहूं हक बिना न पेहेचान।।५१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं जो कुछ बोल रही हूं, वह श्यामा महारानीजी का ही सन्देश समझना। यह तारतम वाणी हमारे घर की सच्ची हकीकत है और श्री राजजी महाराज की पहचान बिना और कुछ बात नहीं है।

हक पैगाम भेजत है, सो देत साहेदी कुरान।
दे साहेदी खुदा खुदाए की, सो खुदाई करे बयान।।५२।।

श्री राजजी महाराज जो रूहों को सन्देश भेजते हैं, उसकी गवाही कुरान देता है। अब श्री महामतिजी के तन में स्वयं खुदा बैठकर अपनी पहचान खुद करवा रहे हैं और खुद ही अपनी गवाही दे रहे हैं।

सो भी रूह साहेदी देत है, जो नूर-जलाल पास नाहें।
सो रोसनी नूरजमाल की, लज्जत आवत मोमिनों माहें।।५३।।

मेरी आत्मा वह गवाही दे रही है जो अक्षर ब्रह्म के पास भी नहीं है। नूरजमाल श्री राजजी महाराज के ज्ञान की रोशनी मोमिनों में ही दिखाई पड़ती है और वह इसका आनन्द लेते हैं।

जब लग ख्वाब नजरों, तब लों देत देखाई यों कर।
न तो सुख नूरजमाल को, बैठे लेवें कायम घर।।५४।।

जब तक मोमिनों की नजर झूठे संसार में है तब तक ऐसा लगता है कि यह आनन्द कहीं से आकर मिल रहा है, वरना परमधाम में तो हम श्री राजजी महाराज का आनन्द हमेशा लेते ही हैं।

इलहाम आवत परदे से, सो नाहीं चौदे तबक।
सो मोमिन इन ख्वाब में, लेत सुख बेसक।।५५।।

धनी का सन्देश मेरे अर्श तन के परदे से आ रहा है जो सन्देश चौदह लोकों में नहीं है वही ब्रह्मसृष्टियां अब सपने के संसार में बेशक होकर सुख ले रही हैं। मेरा यह संसार का तन श्री राजजी का अर्श बन गया है।

झूठ न सुन्यो कबूं इत थें, जिन करो झूठी उमेद।
ए गुझ हक के दिल का, आवत तुमको भेद।।५६।।

मेरे अर्श तन ने कभी झूठ की बात को सुना ही नहीं था (अन्दर धनी बैठे हैं) झूठे संसार की चाहना भी मत करो। यह हक के दिल की अन्दर की बातों के रहस्य जो तुम्हें यहां खुल रहे हैं उसी को तुम सुख समझो।

आवत संदेसे परदे से, बीच गिरो मोमिन।
क्यों ना विचारो अकल सों, कर पाक दिल रोसन।।५७।।

मोमिनों की जमात में अर्श दिल से धनी के सन्देश आते हैं। हे मोमिनो! अपने दिल से विचार क्यों नहीं करते? अपने दिल को पाक कर ज्ञान से क्यों नहीं जगा देते?

Nijanand App

इतथें अर्ज भेजत हैं, सो पोहोंचत है हक को।
जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों।। ५८ ।।

यहां अर्श दिल से जो प्रार्थना करते हैं वह श्री राजजी को पहुंचती है। यदि आप आत्मा की मूल बुद्धि से विचार करें, तो यह बात दिल में सच्ची लगती है।

तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल-असल।। ५९ ।।

पवित्र दिल से धनी को की गयी विनती उनको अवश्य ही पहुंचती है। धनी ने हमें यहां तक पहुंचा दिया है कि हम असल घर परमधाम तक सोचने लगे हैं।

ए जो पाक दिलें विचारिए, देखो आवत इलहाम ए।
पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे।। ६० ।।

यदि पवित्र दिल से विचार कर देखें तो धनी के इशारे हम तक पहुंचते हैं। यदि ऊपरी नजर से देखें तो वास्तविक हकीकत दिखाई नहीं देती।

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत।। ६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम से खबरें (न्यामतें) यहां आती हैं वह हमारी परआतम देख रही है—जो श्री राजजी के चरणों तले बैठकर लज्जत ले रही है।

महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से।। ६२ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! अब मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज की 'मैं' हो गई है और मैं हक की होकर परमधाम पहुंच गई। अब यह 'मैं' असल अर्श की है और यह श्री राजजी महाराज की कृपा से हुई।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १५१ ॥

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी! अब जिस तरह से आप चाहें उसी तरह से आप रखो। मैं आपकी हूं, क्योंकि संसार की 'मैं' (अहं) मुझ में नहीं रही। अब कहने को कुछ रहा ही नहीं जो आपसे कहूं।

कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम हीं हक जानत।। २ ।।

मेरे दिल में कुछ बातें आती हैं। वह आप ही पैदा कराते हैं। मेरे दिल के अन्दर-बाहर की सब हकीकत आप जानते हैं।

जो लों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए।
ए मैं मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे।। ३ ।।

जब तक आपने मुझे संसार की 'मैं' देकर संसार में रखा, तब तक चाहना मेरी थी। फिर मैंने आपकी 'मैं' को मांगा। वह आपने मंगवाई (मेरी 'मैं' समाप्त हो गई)।

Nijanand App

इतथें अर्ज भेजत हैं, सो पोहोंचत है हक को।
जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों।। ५८ ।।

यहां अर्श दिल से जो प्रार्थना करते हैं वह श्री राजजी को पहुंचती है। यदि आप आत्मा की मूल बुद्धि से विचार करें, तो यह बात दिल में सच्ची लगती है।

तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल-असल।। ५९ ।।

पवित्र दिल से धनी को की गयी विनती उनको अवश्य ही पहुंचती है। धनी ने हमें यहां तक पहुंचा दिया है कि हम असल घर परमधाम तक सोचने लगे हैं।

ए जो पाक दिलें विचारिए, देखो आवत इलहाम ए।
पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे।। ६० ।।

यदि पवित्र दिल से विचार कर देखें तो धनी के इशारे हम तक पहुंचते हैं। यदि ऊपरी नजर से देखें तो वास्तविक हकीकत दिखाई नहीं देती।

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत।। ६१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम से खबरें (न्यामतें) यहां आती हैं वह हमारी परआतम देख रही है—जो श्री राजजी के चरणों तले बैठकर लज्जत ले रही है।

महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से।। ६२ ।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! अब मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज की 'मैं' हो गई है और मैं हक की होकर परमधाम पहुंच गई। अब यह 'मैं' असल अर्श की है और यह श्री राजजी महाराज की कृपा से हुई।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १५१ ।।

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी! अब जिस तरह से आप चाहें उसी तरह से आप रखो। मैं आपकी हूं, क्योंकि संसार की 'मैं' (अहं) मुझ में नहीं रही। अब कहने को कुछ रहा ही नहीं जो आपसे कहूं।

कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम हीं हक जानत।। २ ।।

मेरे दिल में कुछ बातें आती हैं। वह आप ही पैदा कराते हैं। मेरे दिल के अन्दर-बाहर की सब हकीकत आप जानते हैं।

जो लों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए।
ए मैं मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे।। ३ ।।

जब तक आपने मुझे संसार की 'मैं' देकर संसार में रखा, तब तक चाहना मेरी थी। फिर मैंने आपकी 'मैं' को मांगा। वह आपने मंगवाई (मेरी 'मैं' समाप्त हो गई)।

Nijanand App

मैं मांगत डरत हों, सो भी डरावत हो तुम।
मैं मांगे तुमारी तुम पे, ना तो क्यों डरे अंगना खसम।।४।।

हे धनी! मैं मांगने से डरती हूं। आप ही डरा रहे हो। मैं आपकी हूं। आपसे आपकी 'मैं' मैंने मांगी, तो धनी की अंगना धनी से मांगते डरे क्यों?

हजरत ईसे मांगया, हक अपनायत कर।
तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर।।५।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने आपको अपना धनी जानकर जागनी मेरे हाथ से कराओ, यही मांगा था। जागनी कराने की मांग का दोष उन पर लगा, यह देखकर मुझे डर लगता है।

फुरमान देख के मैं डरी, देख रूहअल्ला पर गुना।
ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रह्या न आसंका।।६।।

कुरान में जो खुदा की बड़ी रूह (श्यामाजी) हैं, उन रूहअल्लाह के ऊपर लगा गुनाह देखकर मैं डर गई, इसलिए मोमिनों को अब यह संशय नहीं रहना चाहिए कि मांगने से गुनाह लगता है, अर्थात् मांगना नहीं चाहिए।

तो डर बड़ा मोहे लगत, जो गुनाह कह्या इन पर।
माफक रूहअल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर।।७।।

श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी की बराबरी का कोई मर्द-मोमिन नहीं है। जब श्यामा महारानी को ही गुनाह लग गया, तो यह देखकर मुझे भी बड़ा डर लगता है।

ए खावंद है अर्स अजीम का, हादी हमारा सोए।
इस मानंद चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए।।८।।

यह श्यामा महारानी परमधाम के सुभान हैं और हमारे मालिक हैं। चौदह लोकों में इनके बराबर न कोई हुआ है न कोई होगा।

मैं नेक बात याकी कहूं, पाक रूहों सुनो सब मिल।
मैं की खुदी सखत है, ए लीजो देकर दिल।।९।।

हे मोमिनो! मैं श्यामा महारानी की जरा सी हकीकत बताती हूं। तुम सब मिलकर सुनो। मैं-खुदी की बात बड़ी कठोर है। इसको दिल में अच्छी तरह से ग्रहण कर लेना।

रूह-अल्ला करी बन्दगी, तिन में उनकी मैं।
तो गुनाह कह्या इन पर, इन मैं मांग्या हक पे।।१०।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने संसार में चालीस वर्ष तक सघन खोज की। इस बन्दगी के अहं में उन्होंने जागनी मेरे हाथ से कराओ, धनी से मांग की, तो उनको मांगने का गुनाह लगा।

मेरे न कछू बन्दगी, न कछू करी करनी।
ओ मैं मुझमें न रही, ए तो मैं हकें करी अपनी।।११।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैंने न तो कोई बन्दगी की और न कुछ कर्म ही किए। फिर भी माया की 'मैं' (अहं) मेरे अन्दर नहीं रही। श्री राजजी महाराज ने मेरे अन्दर अपनी 'मैं' बिठाकर मुझे अपना बना लिया।

Nijanand App

मैं थी बीच लड़कपने, धनी तुमारी पढ़ाएल।
मेरे उमेद न आसा बंदगी, हक तुमारी निवाजल।। १२ ।।

मैं भोलीभाली नासमझ थी। आपने ही जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मुझे सिखा दिया। अब मुझे किसी प्रकार की बन्दगी करने की चाहना भी नहीं थी, क्योंकि मैं पूर्ण रूप से आपके ही आश्रित हो गई।

मैं जो मांगी बेखबरी, सो उमेद पूरी सब तुम।
तब उस खुदी की मैं को, दिल चाह्या दिया हुकम।। १३ ।।

मैंने बेसुध अवस्था में आपसे परमधाम देखने की चाहना की थी और उसके लिए शरीर के अवगुण निकालने के लिए शरीर को दुःख दिए। अब आपने मेरे अन्दर बैठकर मेरी सभी चाहना को पूर्ण कर दिया। तब उस मांगने की 'मैं' (अहं) को भी पूरा कर दिया।

अब मांगूं सिर हुकम, हुज्जत लिए खसम।
अब क्यों न होए सो उमेद, दिया हाथ हुकम।। १४ ।।

अब धनी की अंगना का दावा लेकर हुकम को अपने सिर लेती हूं। अब मेरी हर चाहना अवश्य पूर्ण होगी, क्योंकि हुकम अब मेरे हाथ में धनी ने दे दिया है।

खसम खसम तो करत हों, पर खसम न आवत भार।
ना हुज्जत रूह अर्स की, तो होत ना दिल करार।। १५ ।।

मैं खसम-खसम कहती तो हूं पर खसम की साहिबी का भार उठा नहीं सकती। अब परमधाम की अंगना होने का भी दावा हट गया, इसलिए अब मन को चैन नहीं आता, क्योंकि न तो मैं अंगना रह गई और न ही खसम बन पाई।

जो मांगूं हक जान के, अर्स रूह कर हुज्जत।
तो तब हीं उमेद पोहोंचहीं, जो दिल में यों उपजत।। १६ ।।

यदि मैं परमधाम की अंगना का दावा लेकर आपसे मांगती तो मेरी चाहना उसी समय पूरी हो जाती, ऐसा दिल में विश्वास है।

जैसा हक है सिर पर, तैसा तेहेकीक जानत नाहें।
बिसर जात है नींद में, दृढ़ होत न ख्वाब के माहें।। १७ ।।

जैसे सब प्रकार से समर्थ धनी हमारे सिर पर खड़े हैं, वैसी पहचान हमारे दिल में नहीं आती। यह माया के संसार में सब भूल जाता है और सपने में दृढ़ता आती नहीं है।

जो मांग्या है ख्वाब में, सो हकें पूरा सब किया।
सो बोहोत ना मोहे सुध परी, जो ख्वाब के मिने दिया।। १८ ।।

मैंने सपने में जो कुछ मांगा धनी ने सब पूरा कर दिया। जो मुझे धनी ने दिया उसकी मुझे ज्यादा पहचान नहीं हुई।

जो मैं मांगूं जाग के, और जागे ही में पाऊं।
तो कारज सब सिद्ध होवहीं, जो फैलें नींद उड़ाऊं।। १९ ।।

यदि मेरी रूह जाग जाए और जागृत अवस्था में यह सब मिल जाए, तो मेरे सब काम सिद्ध हो जाएं। तो फिर रहनी से ही नींद उड़ जाएगी और मेरे कर्म ही बदल जाएंगे।

Nijanand App

ए जो नींद उड़ाई कौल में, जो कदी फैल में उड़त।
तो निसबत इन की हक सों, आवत अर्स लज्जत।। २० ।।

नींद जिसे मैंने वचनों से उड़ा दिया है, यदि रहनी में आकर उड़ाती तो मेरी रहनी से निसबत हो जाती और घर के सुख मिल जाते।

जो पाइए इत लज्जत, तो होवे सब विध।
कायम सुख इन अर्स के, सब काम होवें सिध।। २१ ।।

यदि इसी संसार में धनी के मिलने की और घर की पहचान हो जाती, तो सब बात बन जाती। अखण्ड घर (परमधाम) के सुख भी मिल जाते और सब चाहना भी पूर्ण हो जाती।

तो न पाइए इत लज्जत, जो फैल न आवत हाल।
हाल आए क्यों सेहे सके, बिछोहा नूर-जमाल।। २२ ।।

हम तब तक अखण्ड सुख प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक हम करनी से रहनी में नहीं आ जाते। रहनी में आने पर धनी का वियोग सहन नहीं होता।

ऐसा हक है सिर पर, कर दई हक पेहेचान।
ऐसी हक की मैं जोरावर, क्यों रहे दीदार बिन प्रान।। २३ ।।

ऐसे समर्थ धनी मेरे सिर पर हैं। जब इसकी पहचान धनी ने करा दी, तब पता चला कि धनी की 'मैं' (अहं) कितनी बलशाली है। ऐसी पहचान हो जाने के बाद बिना धनी के मिलन के प्राण कैसे खड़े हैं?

ए जो मैं खुदाए की, क्यों रहे दीदार बिन।
क्यों रहे सुने बिना, मीठे पिउ के वचन।। २४ ।।

अब धनी की जो 'मैं' (अहं) मेरे अन्दर आ गई है वह धनी के दर्शन के बिना तथा धनी के मीठे वचन सुने बिना कैसे रह सकती है?

एक पल जात पिउ दीदार बिना, बड़ा जो अचरज ए।
ए जो मैं है हक की, सो क्यों खड़ी बिछोहा ले।। २५ ।।

धनी के बिना एक पल भी जो बीतता है, यह भी कैसे बीतता है बड़ी हैरानी है। यह जो धनी की 'मैं' (अहं) मेरे अन्दर है वह धनी का बिछोह कैसे सहन कर रही है?

छल में आप देखाइया, दिया अपना इलम।
मैं आप पेहेचान ना कर सकी, न कछू चीन्हा खसम।। २६ ।।

इस माया के संसार में आपने अपना ज्ञान देकर कि आप हमारे साथ हैं, ऐसा दिखाया, परन्तु मैं अपनी परआतम को न पहचान सकी और न धनी को ही पहचान सकी।

धनी मेरा अर्स का, मैं तुमारी अरधंग।
भेख बदल सुनाए वचन, दिया दीदार बदल के अंग।। २७ ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं आपकी अंगना हूं। आपने इस संसार में भेष बदलकर श्री देवचन्द्रजी के रूप में तारतम ज्ञान दिया और हवसा में अपना वह स्वरूप भी बदलकर दर्शन दिया।

Nijanand App

मैं बीच फरामोसी के, तुम आए सूरत बदल।
पेहेचान क्यों कर सकूं, इन वजूद की अकल।। २८ ।।

मैं बेसुधी में थी। आप सतगुरु के रूप में स्वरूप बदलकर श्री देवचन्द्रजी के तन में आए। मेरा तन मेहेराज ठाकुर और अक्ल संसार की होने से मैं आपकी पहचान कैसे करती?

तालब तो भी तुमसे, इस्क नहीं तुम बिन।
सब्द सुख भी तुम से, तुम हीं दिया दरसन।। २९ ।।

मांगना भी आपसे है और इश्क भी आपके बिना कहीं है नहीं। मीठी-मीठी बातों का सुख भी आपसे मिलना है। आपने ही मुझे दर्शन दिया।

ए उपजावत तुमहीं, तुमहीं दिखलावत।
तुमहीं खेल खेलावत, तुमहीं समें बदलत।। ३० ।।

हे धनी! इच्छा भी आप पैदा करते हो और दिखाते भी आप हो। खेल खेलाते भी आप हो। समय बदलने वाले भी आप हो।

मैं को तुम खड़ी करी, मैं को देखाई तुम।
मैं को तले कदम के, खड़ी राखी माहें हुकम।। ३१ ।।

हे धनी! इस संसार में 'मैं' (अहं) का भाव आपने ही दिया। आपने ही वह 'मैं' (अहं) झूठा है यह बताया है। आपकी कृपा से आपके चरणों के तले जागृत होकर बैठी और आपके हुकम ने ही मुझे संसार में खड़ा रखा।

तुमहीं साथ जगाइया, तुम दई सरत देखाए।
तुमहीं तलब करावत, तो दरसन को हरबराए।। ३२ ।।

हे धनी! आपने ही सुन्दरसाथ को जगाया। आप ही ने कयामत के निशानात जाहिर कराए। अब आप ही दर्शन की चाहना पैदा कराते हो जिसके लिए मेरी आत्मा जल्दबाजी करती है।

तुमहीं दिल में यों ल्यावत, मैं देखों हक नजर।
सो पट तुमहीं से खुले, तुमसे टले अन्तर।। ३३ ।।

आप ही मेरे दिल में यह चाहना पैदा करते हो कि मैं आपके साक्षात् दर्शन करूं। हमारे और आपके बीच माया में जो तन का परदा लगा है, वह आपके ही हटाने से हटेगा।

श्रवनों सब्द सुनाए के, दिल दीदे दीदार।
अनेक हक मेहेरबानगी, सो कहां लो कहूं सुमार।। ३४ ।।

आपने अपनी वाणी सुनाकर दिल के नयनों से दर्शन दिए। आपकी इस तरह की बेशुमार मेहरबानियां हैं। उनका वर्णन कहां तक करूं?

जोस इस्क और बंदगी, चलना हक के दिल।
ए बकसीस सब तुम से, खुसबोए वतन असल।। ३५ ।।

आपने अपना जोश, इश्क और बन्दगी दी, जिससे मैं आपके अनुकूल चल सकी। यह कृपा भी आपने की कि घर परमधाम की खुशबू आने लगी, अर्थात् आनन्द मिलने लगा।

Nijanand App

और कई इनाएतें तुम से, सो कहां लो कहूं वचन।
सो कई आवत हैं नजरों, पर कह्यो न जाए सुकन।। ३६ ।।

आपने और भी कई एहसान किए। उनका कहां तक बखान करूं? यह सब याद तो आते हैं, पर मुंह से कहे नहीं जाते।

मैं अपनी अकलें केती कहूं, तुम करावत सब।
बाहेर अंदर अन्तर, या तबहीं या अब।। ३७ ।।

मैं अपनी अक्ल से कहां तक कहूं? सब कुछ तुम करवाते हो। बाहर और अन्दर, तब या अब, सब आप ही करवाने वाले हैं।

जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर।
या पाक करो हादीपना, या बैठाओ माहें तकसीर।। ३८ ।।

अब आप चाहो तो राजी रखो, चाहो तो उदास रखो या मुझे निर्मल कर अपने समान हादी बना दो या गुनहगार बना दो।

अब मेरा केहेना न कछू, तुमहीं केहेलावत ए।
मेरे कहे मैं रेहेत है, पर सब बस हुकम के।। ३९ ।।

अब मुझे कुछ कहना नहीं है। आप ही कहलवा रहे हो। मेरे कहने से 'मैं' (अहं) आएगा और आपके कहने से हुकम का कहा होगा।

अब सब के मन में ए रहे, इत दिल चाह्या होए।
तो पाइए खेल खुसाली, हक जानत सब सोए।। ४० ।।

अब सबके मन में यह बात आती है कि संसार में हमारी मन चाही इच्छा पूरी होनी चाहिए। तभी इस खेल में आनन्द मिलेगा। यह सब आप जानते ही हैं।

ए भी तुम केहेलावत, कारन उमत के।
अर्स वजूद के अंतर में, तुम पेहेले उपजावत ए।। ४१ ।।

यह भी आप मोमिनों के वास्ते कहलवाते हो। आप हमारे परमधाम के मूल तन में (परआतम में) पहले इच्छा पैदा कर देते हो फिर यहां खेल में मंगवाते हो।

असल हमारी अर्स में, ताए ख्वाब देखावत तुम।
जैसा उत ओ देखत, तैसा करत हैं हम।। ४२ ।।

हमारे मूल तन परमधाम में हैं। उन्हें आप सपने का खेल दिखाते हो। हमारी परआतम वहां से जैसा देखना चाहती है वैसा ही हमारा झूठा तन संसार में करता है।

इन विध गुनाह हम पर, लागत नाहीं कोए।
मैं तो इत नाहीं कितहूं, इत उत किया हक का होए।। ४३ ।।

इस तरह से हमारे ऊपर कोई गुनाह नहीं लगता, क्योंकि हम न यहां हैं और न वहां परमधाम में हैं। यहां संसार में या परमधाम में मेरी आत्मा और परआतम से जो कुछ हो रहा है, वह आपके करने से हो रहा है।

Nijanand App

भुलाए दिया तुम हम को, आप वतन खसम।
ताथें खुदी मैं ले खड़ी, झूठे खेल में आतम।। ४४ ।।

आपने हमको भुलावा दिया जिससे हम अपना घर परमधाम तथा आपको भूल गए। इस संसार में इस तन में 'मैं' (अहं) को लेकर मेरी आत्मा खड़ी हो गई।

आप छिपाया तुम हम सें, झूठे खेल में डार।
फेर कर तुम खड़ी करी, करके गुन्हेगार।। ४५ ।।

आप हमें झूठे खेल में डालकर खुद छिप गए और फिर भूल जाने का दोष लगाकर मुझे गुनहगार बना दिया। आपने ही स्वयं माया में जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हाथ पकड़ कर खड़ा किया है।

फेर तुम हमको अकल दई, मैं खुदी पकड़ी सोए।
जो जैसी करेगा, तैसी पावेगा सोए।। ४६ ।।

फिर आपने मुझे जागृत बुद्धि दी तो मैंने अपने 'मैं' (अहं) को पकड़ लिया। अब इस झूठी 'मैं' को लेकर जो जैसा करेगा वह वैसा फल पाएगा।

आप भी भेख बदल के, आए अपना दिया इलम।
सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान न सकें हम।। ४७ ।।

आप भी भेष बदलकर आए और सतगुरु बनकर मुझे तारतम ज्ञान दिया तथा परमधाम की सब बातें कहीं, परन्तु मैं नहीं पहचान सकी।

इत भी गुनाह सिर पर हुआ, याद न आया असल।
तुम रोए लरखीज कह्या, तो भी रही न मूल अकल।। ४८ ।।

यहां भी गुनाह हमें लगा, क्योंकि हमें अपना मूल घर (परमधाम) और परआतम याद नहीं आई। आपने तो रोकर, लड़कर, खीजकर, गुस्से से भी कहा तो भी हमें मूल घर की जागृत बुद्धि नहीं आई।

यों गुनाह अनेक भांत का, हुआ हमारे सिर।
हम कछू न कर सके, तो भी खबर लई हकें फेर।। ४९ ।।

इस तरह से हमारे सिर अनेक तरह से गुनाह भूल जाने के कारण हुए। जब हम कुछ न कर सके तब आपने मेरे अन्दर आकर मुझे फिर से जागृत किया।

कई सुख हमको अर्स के, भांत भांत दिए अपार।
तो भी नींद हमारी न गई, इत भी हुए गुन्हेगार।। ५० ।।

हमें परमधाम के तरह-तरह के बेशुमार कई सुख दिए। फिर भी हमारे भ्रम की नींद माया की चाहना न हटने से मैं गुनहगार हो गई।

कर मनसा वाचा करमना, सब अंगों कर हेत।
केहे केहे हारे हमसों, पर मैं न हुई सावचेत।। ५१ ।।

आप मनसा, वाचा और कर्मणा तथा सब अंगों से प्यार कर बहुत कह कहकर थक गए, पर मैं सावधान न हुई।

Nijanand App

यों कई गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल।
कई देखाए गुन अपने, ताको तौल न मोल।।५२ ।।

इस तरह से मैं कितने गुनाह गिनाऊं? मुझसे सब जगह भूल हुई है और आपने कई तरह के एहसान किए जिनकी तौल और मोल नहीं हो सकती।

सो गुन देखे में नजरों, जिनको नहीं सुमार।
तो भी पेहेचान न हुई, न छूटी नींद विकार।।५३ ।।

आपके एहसानों को मैंने अपनी नजर से देखा है जो बेशुमार हैं। फिर भी मुझे आपकी पहचान नहीं हुई और न यह माया का विकार ही छूटा।

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान।
सो पढ़्या मैं भली भांत सों, करी सब पेहेचान।।५४ ।।

फिर आप मुझसे अलग हो गए और मेरे पास कुरान भेज दिया। जिसे मैंने अच्छी तरह से पढ़ा और सब तरह की पहचान की।

सो कुंजी दई हाथ मेरे, कोई खोले न मुझ बिन।
सक्त नहीं त्रैलोक को, न कछू सक्त त्रैगुन।।५५ ।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को खोलने के लिए आपने तारतम की कुंजी मेरे हाथ में दी। जिन छिपे भेदों के रहस्यों को खोलने की ताकत त्रिदेव को नहीं है और न ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी और की शक्ति है उनको मेरे बिना कोई नहीं खोल सकता।

इन विध गुन केते कहूं, कई देखे मैं नजर।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर।।५६ ।।

इस तरह से मैं आपके एहसान कहां तक कहूं जो मैंने अपनी नजर से देखे। अब कुरान के उन छिपे रहस्यों को मेरे हाथ से खुलवाकर ब्रह्माण्ड में फैले अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

कई लिखी इसारतें अर्स की, कई रमूजें अनेक।
पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक।।५७ ।।

कुरान में आपने घर (परमधाम) की कई बातों को इशारों में लिख रखा है। आपने पहले मुझे पढ़ाया। अब मैं ही एक ऐसी हूं जो उन छिपे भेदों के रहस्य को खोल दूंगी।

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम।।५८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की दी हुई 'मैं' (अहं) ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए। इन खुदाई वचनों को चौदह लोक भी मिल जाएं तो मेरे सिवाय कोई दूसरा खोल नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। २०९ ।।

रूहों को कुदरत देखाई हक ने

यों कई देखाई माया, और कई विध करी पेहेचान।
कई विध बदली मजलें, कई पुराए साख निसान।। १ ।।

इस तरह से धनी ने माया के अन्दर कई प्रकार के खेल दिखाए और कई तरह से पहचान कराई और कई तरह से मेरी हालतें बदलीं, अर्थात् पहले मेहराज ठाकुर, फिर इन्द्रावती, फिर महामति और फिर प्राणनाथ बनाया और धर्मशास्त्रों से कई तरह से गवाहियां दिलवाईं।

Nijanand App

यों कई गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल।
कई देखाए गुन अपने, ताको तौल न मोल।।५२ ।।

इस तरह से मैं कितने गुनाह गिनाऊं? मुझसे सब जगह भूल हुई है और आपने कई तरह के एहसान किए जिनकी तौल और मोल नहीं हो सकती।

सो गुन देखे में नजरों, जिनको नहीं सुमार।
तो भी पेहेचान न हुई, न छूटी नींद विकार।।५३ ।।

आपके एहसानों को मैंने अपनी नजर से देखा है जो बेशुमार हैं। फिर भी मुझे आपकी पहचान नहीं हुई और न यह माया का विकार ही छूटा।

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान।
सो पढ़या मैं भली भांत सों, करी सब पेहेचान।।५४ ।।

फिर आप मुझसे अलग हो गए और मेरे पास कुरान भेज दिया। जिसे मैंने अच्छी तरह से पढ़ा और सब तरह की पहचान की।

सो कुंजी दई हाथ मेरे, कोई खोले न मुझ बिन।
सक्त नहीं त्रैलोक को, न कछू सक्त त्रैगुन।।५५ ।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को खोलने के लिए आपने तारतम की कुंजी मेरे हाथ में दी। जिन छिपे भेदों के रहस्यों को खोलने की ताकत त्रिदेव को नहीं है और न ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी और की शक्ति है उनको मेरे बिना कोई नहीं खोल सकता।

इन विध गुन केते कहूं, कई देखे मैं नजर।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर।।५६ ।।

इस तरह से मैं आपके एहसान कहां तक कहूं जो मैंने अपनी नजर से देखे। अब कुरान के उन छिपे रहस्यों को मेरे हाथ से खुलवाकर ब्रह्माण्ड में फैले अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

कई लिखी इसारतें अर्स की, कई रमूजें अनेक।
पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक।।५७ ।।

कुरान में आपने घर (परमधाम) की कई बातों को इशारों में लिख रखा है। आपने पहले मुझे पढ़ाया। अब मैं ही एक ऐसी हूं जो उन छिपे भेदों के रहस्य को खोल दूंगी।

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम।।५८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की दी हुई 'मैं' (अहं) ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए। इन खुदाई वचनों को चौदह लोक भी मिल जाएं तो मेरे सिवाय कोई दूसरा खोल नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। २०९ ।।

रूहों को कुदरत देखाई हक ने

यों कई देखाई माया, और कई विध करी पेहेचान।
कई विध बदली मजलें, कई पुराए साख निसान।। १ ।।

इस तरह से धनी ने माया के अन्दर कई प्रकार के खेल दिखाए और कई तरह से पहचान कराई और कई तरह से मेरी हालतें बदलीं, अर्थात् पहले मेहराज ठाकुर, फिर इन्द्रावती, फिर महामति और फिर प्राणनाथ बनाया और धर्मशास्त्रों से कई तरह से गवाहियां दिलवाईं।

Nijanand App

हक की बातें अनेक हैं, कही न जाए या मुख।
इन झूठे खेल में बैठाए के, कई दिए कायम सुख।। २ ।।

धनी की बातें बहुत हैं जो इस मुख से कही नहीं जातीं। इस झूठे खेल में बिठाकर कई प्रकार के अखण्ड सुख दिए।

मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब।
पर एक फैल रेहेनीय का, लिया न सिर पर तब।। ३ ।।

मैं पहले लोगों के अनुसार कहनी में चली। दुनियां के सब काम किए, परन्तु रहनी का उस समय एक भी काम नहीं किया, अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के समय कहनी की रहनी नहीं आई।

अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अर्स नजर।। ४ ।।

अब हवसा से रहनी का समय आ गया और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अन्धकार मिटाकर सवेरा कर दिया। अब कहनी को रहनी में बदलना चाहिए और दुनियां को छोड़कर परमधाम में मगन होना चाहिए।

अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल को चाहे।
जो होवे असल अर्स की, सो फैल ले हाल देखाए।। ५ ।।

अब रहनी का समय आया है। अब मेरी आत्मा उसी रहनी के अनुसार करनी करना चाहती है। जो परमधाम की असल आत्मा होगी, वह करनी करके रहनी में आ जाएगी।

केहेनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज।
हक अर्स नजर में लेय के, उड़ाए देओ दुनी बोझ।। ६ ।।

अज्ञान की दशा में सब बातें कहीं। अब जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान का सवेरा हो जाने से करनी और रहनी का समय आ गया है। अब अपनी नजर को धनी के चरणों में लगाकर संसार से अलग हो जाओ।

जो हकें केहेलाया सो कह्या, इत मैं बीच कहूं नाहें।
फैल हाल सब हक के, हकें सक मेटी दिल माहें।। ७ ।।

जो श्री राजजी महाराज ने कहलवाया, उसे मैंने कहा। यहां मेरी 'मैं' (अहं) का कोई स्थान नहीं है। अब करनी और रहनी श्री राजजी के हाथ में है। अब श्री राजजी महाराज ने मेरे दिल के सब संशय मिटा दिए हैं।

इलम दिया हकें अपना, और दई असल अकल।
जोस इस्क सब हक के, सब उमत करी निरमल।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपना इलम दिया और जागृत बुद्धि दी। अपना जोश और इश्क दिया, जिससे मैंने सब मोमिनों को निर्मल कर दिया।

इन जड़ थें तब मैं निकसी, जब आकीन दिया आप।
सकें सारी भान के, तुम साहेब किया मिलाप।। ९ ।।

जब श्री राजजी महाराज ने यकीन दिलाया तब मैं इस माया के ब्रह्माण्ड से निकल सकी और सारे संशय मिटाकर आपसे मिल सकी।

Nijanand App

ए मैं काढ़ी तुम इन विध, इन मैं में न आवे सक।
यों काढ़ी खुदी मैं साथ की, हकें किए आप माफक।। १० ।।

इस तरह से आपने मेरी 'मैं' (अहं) को मिटा दिया। अब इस मेरी 'मैं' (अहं) में कोई संशय नहीं है। इसी प्रकार से सुन्दरसाथ की 'मैं' (अहं) को हटाकर आपने अपने जैसा बना लिया।

हुकमें हाथ पकड़ के, दिया फैल हाल बेसक।
तब जोस इस्क देखाया, जासों पाया हक।। ११ ।।

आपके हुकम ने हाथ पकड़ कर अखण्ड की करनी रहनी दी। तब उस करनी और रहनी ने जोश और इश्क को दिखाया जिससे आप मिले।

जोस हाल और इस्क, ए आवे न फैल हाल बिन।
सो फैल हाल हक के, बिना बकसीस न पाया किन।। १२ ।।

आपका जोश और इश्क करनी और रहनी के बिना नहीं आ सकता। वह करनी और रहनी धनी की मेहर के बिना किसी को बख्शीश में नहीं मिली।

कलाम हक जुबान के, तिनका कहूं विवेक।
इन केहेनी से कायम हुए, दुनी पाया हक एक।। १३ ।।

कुरान की बातों की हकीकत मैं बताती हूं। इन वचनों के जाहिर करने से दुनियां को एक पारब्रह्म की पहचान मिली और अखण्ड मुक्ति मिली।

जिन केहेनी किल्लीय से, खुल्या भिस्त का द्वार।
सो केहेनी छुड़ाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सार।। १४ ।।

जिस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से बहिश्त के दरवाजे खुले वह कहनी अब हक के हुकम ने रहनी का सार बताकर छुड़ा दी, अर्थात् कहनी को रहनी में बदल दिया।

ए जो केहेनी इन भांत की, किए कायम चौदे तबक।
सो छुड़ाई केहेनीय को, जासों पाया दुनियां हक।। १५ ।।

यह कुरान के वचन इस तरह के थे जिनसे चौदह लोकों को अखण्ड मुक्ति मिली। अब उस कुरान को छुड़ाया और ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया जिससे दुनियां को पारब्रह्म की पहचान हुई।

कहे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें।
जोस इस्क हक मिलावहीं, सो फैल हाल के माहें।। १६ ।।

हुकम कहता है कि रहनी के आगे कहनी कुछ नहीं है। जोश और इश्क पारब्रह्म से मिलाता है। वह रहनी से आता है।

दुनियां केहेनी केहेत है, सो डूबत मैं सागर।
मैं लेहेरें मेर समान में, कोई निकस न पावे बका घर।। १७ ।।

दुनियां वाले जो ग्रन्थों का ज्ञान कहते हैं, वह अहंकार के सागर में डूबे होते हैं। उनके अन्दर पहाड़ के समान अहंकार की लहरें चलती हैं। इनसे निकलकर कोई भी परमधाम को प्राप्त नहीं कर सकता।

Nijanand App

ए खेल मोहोरे कथ कथ गए, सो जले खुदी बेखबर।
आप लेहेरें माहें अपनी, गोते खात फेर फेर।। १८ ।।

इस संसार के त्रिदेव कह-कहकर थक गए। वह भी अपनी 'मैं' (अहंकार) में जल गए और अपने ही अहंकार में बार-बार गोते खाते रहे।

ओही उनों का किबला, छोड़ें नाहीं ख्याल।
मैं मैं करत मरत नहीं, इनके एही फैल हाल।। १९ ।।

वही उनका अपना अहं ही उनका खुदा है जिसको अपने दिल से नहीं निकालते। सदा 'मैं मैं' करने वालों का अहंकार कभी खत्म नहीं होता। उनकी करनी और रहनी यही है।

अब कैसी मैं बीच खेल के, जो खेलत कबूतर।
ए जो नाबूद कछुए नहीं, तो मैं केहेत क्यों कर।। २० ।।

अब खेल के बीच में उनकी 'मैं' का अहंकार ऐसा है जैसे खेल के कबूतर और जो मिट जाने वाले जीव कुछ भी नहीं हैं वह अपने आपको 'मैं' कैसे कह सकते हैं।

खेल किया तुम वास्ते, जो देखत बैठे वतन।
सो देख के उड़ावसी, जिन विध झूठ सुपन।। २१ ।।

हे मोमिनो! यह खेल तुम्हारे वास्ते किया है जो तुम परमधाम में बैठे देख रहे हो। जिस तरह से झूठा सपना उड़ जाता है उसी तरह यह खेल भी उड़ जाएगा।

जो रूहें होए अर्स की, सो तो तले हुकम।
जानत त्यों खेलावत, ऊपर बैठ खसम।। २२ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह श्री राजजी के हुकम के अधीन हैं। उन्हें परमधाम में बैठकर श्री राजजी महाराज जैसा चाहते हैं उसी तरह हुकम के द्वारा मोमिनों को खेल खिलाते हैं।

इन में भी मैं है नहीं, जो ए समझें मूल इलम।
फैल हाल इस्क लेवहीं, तब हक की मैं आतम।। २३ ।।

जो इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी को समझ लेगा उसके अन्दर की 'मैं' समाप्त हो जाएगी। वह अपनी करनी और रहनी से इश्क लेगी। तभी उनके अन्दर परमधाम की अंगना होने का भाव होगा।

तब गुनाह कछू ना लगे, जो कीजे ऐसी चाल।
सो सुकन पेहेले कहे, जो कोई बदले हाल।। २४ ।।

यदि रहनी से जोश और इश्क लेकर चले तो गुनाह नहीं लगेगा। आत्मा की हालत ही बदल जाएगी। यह मैंने पहले ही कह दिया है।

इन विध मैं मरत है, बैठे तले कदम।
जोस इस्क आवे हाल में, लेय के हक इलम।। २५ ।।

इस तरह से संसार की 'मैं' (अहं) मिटाकर श्री राजजी के चरणों के तले बैठी हूं, का भाव आता है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जोश और इश्क रहनी में बदल जाता है।

Nijanand App

जो सुध मलकूत में नहीं, ना सुध नूर वतन।
सो गिरो दिल पूरन भई, मैं काढ़ी बकसीस इन।। २६ ।।

जिस बात की खबर बैकुण्ठनाथ विष्णु को नहीं है और अक्षर ब्रह्म को नहीं है, वह अब इस झूठे संसार में मोमिनों के दिलों में तारतम वाणी की कृपा से 'मैं' (अहं) को निकालने की सुध धनी की बख्शीश से आ गई है।

इन मैं को हक बिना, कबहूं न काढ़ी जाए।
सो मुझ पर मेहेर हकें करी, मैं जरे को देत उड़ाए।। २७ ।।

इस 'मैं' (अहं) को श्री राजजी की मेहर के बिना कोई कभी निकाल नहीं सकता। वह मेहर श्री राजजी की मेरे ऊपर हो गई है और मैं उस 'मैं' (अहं) को जड़ (मूल) से समाप्त कर देती हूं।

ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसे किए उपाए।
मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए।। २८ ।।

नहीं तो यह 'मैं' (अहं) ऐसी नहीं है कि आराम से निकल जाए। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर भी इसको निकालने के लिए थक गए, किन्तु कोई भी संसार की 'मैं' (अहं) को हटा नहीं सका।

ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल।
किन मैं को पार न पाइया, कई दौड़ाए थके अकल।। २९ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में किसी ने 'मैं' (अहं) को नहीं पहचाना और न उसका पार ही पाया। सब अपनी-अपनी अक्ल दौड़ाकर थक गए।

इन मैं में डूब्या सब कोई, याको पार न पावे कोए।
याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक बकसीस होए।। ३० ।।

इस 'मैं' (अहं) में सभी कोई डूबे हैं। इसका पार किसी ने नहीं पाया। इसका पार वही पाएंगे जिन्हें पारब्रह्म की मेहर की बख्शीश हो जाएगी।

ए बानी मैं मारेय की, सुनी होए मोमिन।
दुनी तरफ की जीवती, कबहूं न रेहेवे इन।। ३१ ।।

यह 'मैं' (अहं) को मारने का तरीका यदि मोमिनों ने सुन लिया हो तो उनकी दुनियां की 'मैं' (अहं) उड़ जाएगी और फिर कभी उनके अन्दर नहीं आएगी।

ए मैं इन गिरोह की, काढ़ें एक धनी धाम।
ए मरे पेड़ से हुकमें, ले साहेब के कलाम।। ३२ ।।

ब्रह्मसृष्टि की झूठी 'मैं' (अहं) को श्री राजजी महाराज ही निकालेंगे और उनकी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से हुकम के द्वारा यह 'मैं' (अहं) जड़ से ही खत्म हो जाएगी।

इलम खुदाई लदुन्नी, बकसीस असल रोसन।
जोस इस्क ले बंदगी, निसबत असल वतन।। ३३ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की बख्शीश ऐसी है जिससे जोश और इश्क की बन्दगी लेकर परमधाम की असल निसबत की पहचान होती है।

Nijanand App

अब यों हक को याद कर, ले हुकम सिर चढ़ाए।
ए हक बिना मैं दुनीय की, सो सब मैं देऊं उड़ाए।। ३४ ।।

अब इस तरह से श्री राजजी महाराज के हुकम को सिर पर धारण करके श्री राजजी की 'मैं' (अहं) के अतिरिक्त दुनियां की 'मैं' (अहं) को मैं उड़ा दूंगी।

इत मैं नेक न आवहीं, खड़े हुकम तले जे।
ए मैं हक की मेहेर लेय के, कर निसंक हिदायत ए।। ३५ ।।

अब जो मोमिन श्री राजजी महाराज के हुकम के अनुसार चलेंगे उनके अन्दर संसार की 'मैं' (अहं) नाम मात्र को भी नहीं आएगी। यह 'मैं' (अहं) हक की मेहर लेकर हक के हुकम से खड़ी है, अर्थात् जागृत होने पर भी मेरा तन श्री राजजी के हुकम से खड़ा है।

ए सुनियो खास उमत, इन मैं को काढ़ो जड़ मूल।
ले साहेदी लदुन्नीय से, कौल ईसा इमाम रसूल।। ३६ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! सुनो, जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से ईसा (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज), इमाम मेंहदी-श्री प्राणनाथजी महाराज और रसूल साहब के वचनों की गवाही लेकर संसार की 'मैं' (अहं) को जड़ (मूल) से निकाल दो।

हकें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल।
जैसा देखत सुपन में, ए जो बरतत इत नकल।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम में जो हुकम करते हैं वह हमारी मूल परआतम में आ जाते हैं और हमारी मूल परआतम जो सपना देख रही है उसकी नकल यह हमारा संसार का तन उसी अनुसार कर्म करता है।

ए करो तेहेकीक विचार के, जो होए अर्स उमत।
यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत बखत।। ३८ ।।

जो कोई परमधाम की ब्रह्मसृष्टि है वह विचार कर यह निश्चित कर ले कि परमधाम में श्री राजजी महाराज जितना हमारी परआतम को जगाते हैं उतना ही हमारे इस झूठे तन में रहनी आती है।

कहे लदुन्नी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत।
तैसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी कहती है कि तले की भूमिका मूल-मिलावे में श्री राजजी महाराज बैठकर खेल दिखला रहे हैं। जैसा मूल-मिलावे में हुकम करते हैं वैसा ही हमारा यह संसारी तन कर्म करता है।

मोहे दिया लदुन्नी रूहअल्ला, सो मैं कह्या बेवरा कर।
ए किया उमत कारने, जो विचारो दिल धर।। ४० ।।

मुझे श्यामा महारानी ने तारतम ज्ञान दिया। उसका मैंने ब्यौरा करके तुम्हें कहा है। यह मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते किया है जिसको अपने दिल में विचार करके देखो।

ए रसूल अर्स अजीम से, ले आया फुरमान।
मैं जो कह्या तुमें लदुन्नी, सो जोड़ देखो निसान।। ४१ ।।

रसूल साहब परमधाम से कुरान लेकर आए हैं। मैंने जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी है। उससे निशान मिलाकर देखो।

Nijanand App

कहे विध विध की साहेदी, या फुरमान या हदीस।
और भेजे नामे वसीयत, सो गिरो पर बकसीस।। ४२ ।।

और तरह-तरह से कुरान और हदीसों ने गवाहियां दीं और वसीयतनामे भिजवाए। यह मोमिनों के लिए धनी की बख्शीश है।

इत तीन सूरत आए मिली, भांत भांत साहेदी ले।
सो लगाए देखो तुम रूह सों, ए इलम लदुन्नी जे।। ४३ ।।

यहां अब तीनों सूरतें (बसरी, मल्की और हकी) तरह-तरह की गवाहियां लेकर आई हैं। तारतम वाणी को लेकर अपनी आत्मा से पहचान करके देखो!

एह करत सब हुकम, ले अव्वल से आखिर।
इत मैं बीच काहू में नहीं, मैं ल्यावे सो काफर।। ४४ ।।

अव्वल से आखिर तक यह सब हुकम कर रहा है। यहां मेरी 'मैं' (अहं) कहीं नहीं है। जो 'मैं' (अहं) लावे वही काफिर है।

विचार देखो इसदाए से, ले अपना तारतम।
अपन सोवत हैं नीद में, खेल खेलावत खसम।। ४५ ।।

अपनी तारतम वाणी से मूल से ही विचार करके देखो। हम तो नींद में सोए हैं और यह सब खेल श्री राजजी दिखा रहे हैं।

ए जो सूते तुम देखत हो, खसम देखावत ख्याल।
सो अब हीं देत उड़ाए के, होसी हांसी बड़ी खुसाल।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज खेल दिखा रहे हैं और तुम वही खेल सोकर देख रहे हो। तुम्हारी इस नींद को श्री राजजी तुरन्त उड़ा देंगे और उठने पर घर में बड़ी आनन्दमयी हंसी होगी।

अब मैं काहू में नहीं, ए जो लेत सिर मैं।
ए हांसी होसी ज्यों कर, जो करत हैं मैं तैं।। ४७ ।।

अब 'मैं' (अहं) किसी में भी नहीं रह गयी। जो अपने सिर पर 'मैं' (अहं) लेते हैं इस बात की हांसी उन पर होगी जो 'मैं और तुम' के चक्कर में हैं।

ताथें जो मैं हक की, रहत तले हुकम।
मैं दुनी की मार के, रही देख खेल खसम।। ४८ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज की 'मैं' (अहं) हुकम के तले रहती है, इसलिए मैं भी दुनियां की 'मैं' (अहं) को मारकर खसम का खेल देख रही हूं।

ताथें मैं इन धनी की, करत हक का काम।
ए खेल खुसाली लेय के, जाग बैठे इत धाम।। ४९ ।।

इसलिए यह धनी की 'मैं' (अहं) ही श्री राजजी महाराज का सारा काम कर रही है। इस खेल का आनन्द लेकर परमधाम में हम अपनी परआतम में जागेंगे।

Nijanand App

ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत।
ए मैं बका हक की, करे हिदायत महामत।।५० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम के मोमिन हैं वह अपने आप को अंगना समझकर तारतम वाणी से पहचान करें। यह अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की 'मैं' (अहं) ही मेरे अन्दर बैठकर समझा रही है।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ २५९ ॥

पंच रोसनी का मंगला चरन

गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत।। १ ।।

अखण्ड परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज और मूल-मिलावा की जो हकीकत छिपी थी। श्री राजजी महाराज ने वह सब रूहअल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा मुझ पर भेजी।

रूह-अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान।। २ ।।

श्यामा महारानी चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) से रूहों के वास्ते उतर कर आई हैं। कुरान में जैसा लिखा था, वह परमधाम की सब हकीकत लेकर आई हैं।

इलम लदुन्नी हक का, कुंजी बका की जे।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए।। ३ ।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ही अखण्ड घर की कुंजी है। जिसे मेहर करके मेरे पास भेजा और घर के बन्द दरवाजे खोल दिए।

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर।
अरवाहें जेती अर्स की, तिन बुलावन खातिर।। ४ ।।

मुझसे श्री राजजी महाराज ने मिलकर कहा कि परमधाम की जितनी भी रूहें हैं, मैं उनको बुलाने के लिए आया हूं।

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अर्स अजीम सों।
कुंजी देत हों तुझको, पट खोल दे सब को।। ५ ।।

मुझे कहा कि तेरी रूह अखण्ड परमधाम से खेल में उतर कर आई है, मैं तुमको तारतम वाणी की कुंजी देता हूं। तुम सबकी अज्ञानता हटाकर परमधाम का ज्ञान दे दो।

न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर के माहें।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें।। ६ ।।

यह अखण्ड न्यामत लैल तुल कदर की रात्रि में लाए और कहा कि तारतम वाणी से उजाला करके, अर्थात् अन्धकार हटाकर सवेरे रूहों को बुलाकर अखण्ड घर ले आओ।

अर्स चौदे तबकों, नजर न आवत किन।
सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन।। ७ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अखण्ड घर किसी को दिखाई नहीं देता। अब वह तारतम वाणी के ज्ञान से प्राण नली (सेहेरग) से भी नजदीक है, दिखा दिया।

Nijanand App

ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत।
ए मैं बका हक की, करे हिदायत महामत।।५० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम के मोमिन हैं वह अपने आप को अंगना समझकर तारतम वाणी से पहचान करें। यह अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की 'मैं' (अहं) ही मेरे अन्दर बैठकर समझा रही है।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

पंच रोसनी का मंगला चरन

गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत।। १ ।।

अखण्ड परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज और मूल-मिलावा की जो हकीकत छिपी थी। श्री राजजी महाराज ने वह सब रूहअल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा मुझ पर भेजी।

रूह-अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान।। २ ।।

श्यामा महारानी चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) से रूहों के वास्ते उतर कर आई हैं। कुरान में जैसा लिखा था, वह परमधाम की सब हकीकत लेकर आई हैं।

इलम लदुन्नी हक का, कुंजी बका की जे।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए।। ३ ।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ही अखण्ड घर की कुंजी है। जिसे मेहर करके मेरे पास भेजा और घर के बन्द दरवाजे खोल दिए।

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर।
अरवाहें जेती अर्स की, तिन बुलावन खातिर।। ४ ।।

मुझसे श्री राजजी महाराज ने मिलकर कहा कि परमधाम की जितनी भी रूहें हैं, मैं उनको बुलाने के लिए आया हूं।

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अर्स अजीम सों।
कुंजी देत हों तुझको, पट खोल दे सब को।। ५ ।।

मुझे कहा कि तेरी रूह अखण्ड परमधाम से खेल में उतर कर आई है, मैं तुमको तारतम वाणी की कुंजी देता हूं। तुम सबकी अज्ञानता हटाकर परमधाम का ज्ञान दे दो।

न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर के माहें।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें।। ६ ।।

यह अखण्ड न्यामत लैल तुल कदर की रात्रि में लाए और कहा कि तारतम वाणी से उजाला करके, अर्थात् अन्धकार हटाकर सवेरे रूहों को बुलाकर अखण्ड घर ले आओ।

अर्स चौदे तबकों, नजर न आवत किन।
सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन।। ७ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अखण्ड घर किसी को दिखाई नहीं देता। अब वह तारतम वाणी के ज्ञान से प्राण नली (सेहेरग) से भी नजदीक है, दिखा दिया।

Nijanand App

एह इलम जिन आइया, सेहेरग से नजीक ताए।
ए पट नजरों खोल के, लिए अर्स में बैठाए।। ८ ।।

इस ज्ञान से जिसे समझ आ गई उसे परमधाम सेहेरग से नजदीक हो गया और अब यह अज्ञानता का परदा हटाकर उनको परमधाम में जागृत कर दिया।

ए नेक हकीकत केहेत हों, है बात बिना हिसाब।
सो जाने जो लेवे कुंजी, खोले माएने मगज किताब।। ९ ।।

यह हकीकत बहुत है। मैंने थोड़ी सी कही है। जो तारतम वाणी की कुंजी लेगा वही कुरान के छिपे भेदों के रहस्य खोलकर हकीकत को जान जाएगा।

सब किताबन की, जब पाई हकीकत।
तब तिन सब जाहेर हुई, महंमद हक मारफत।। १० ।।

जब सब धर्मग्रन्थों की हकीकत मिल गई, तब मुहम्मद साहब ने परमधाम और श्री राजजी महाराज की जो बातें कही थीं, वह जाहिर हो गईं।

एह न्यामत जब आई, तब खुले सब द्वार।
जो पट कानों न सुने, सो खोले नूर के पार।। ११ ।।

जब कुरान के छिपे भेदों के रहस्य खुल गए तब अक्षर के पार जो परमधाम है, जिसके बारे में किसी ने सुना तक नहीं था, उसके सब दरवाजे खुल गए।

बादल रूह-अल्लाह का, बरस्या वतनी नूर।
अर्स बका का नासूत में, हुआ सब जहूर।। १२ ।।

श्यामा महारानी को ही बादल कहा है जिसने परमधाम के ज्ञान की वर्षा की। जिससे इस संसार में अखण्ड परमधाम की जानकारी सबको मिल गई।

जब थें दुनी पैदा हुई, अब लग थें अव्वल।
बका पट किने न खोल्या, कई गए ब्रह्मांड चल।। १३ ।।

जब से दुनियां बनी है तब से अब तक कई ब्रह्माण्ड हो गए, परन्तु अखण्ड परमधाम की पहचान किसी ने नहीं कराई।

अव्वल पैदा होए के, दुनी हो जात फना।
तिनमें कछुए ना रहे, ज्यों उड़ जात सुपना।। १४ ।।

दुनियां पहले बनती है और फिर मिट जाती है। जैसे सपना टूट जाता है वैसे ही यहां कुछ नहीं रह जाता।

ऐसे खेल कई हुए, सो फना ही हो जात।
एक जरा बाकी ना रहे, कोई करे न बका की बात।। १५ ।।

ऐसे कई ब्रह्माण्ड बने और मिटे, लेकिन किसी का कुछ भी शेष रहा ही नहीं। परमधाम की बात किसी ने कही ही नहीं।

Nijanand App

दौड़े कई पैगंमर, कई तीर्थंकर अवतार।
अव्वल से आखिर लग, किन खोल्या न बका द्वार।। १६ ।।

कई पैगम्बर, तीर्थंकर और अवतार शुरू से आखिर तक दौड़े, परन्तु किसी ने अखण्ड की पहचान नहीं कराई।

चौदे तबकों बका का, कोई बोल्या न एक हरफ।
तो ए क्यों पावे हक सूरत, किन पाई न बका तरफ।। १७ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में किसी ने अखण्ड का एक शब्द भी नहीं बोला। अब जिनको अखण्ड घर की पहचान ही नहीं हुई तो वह पारब्रह्म के स्वरूप को कैसे जानेंगे?

जो हक पैदा होए नासूत में, तो होय सबे हैयात।
इलम अपना देय के, करें जाहेर बका बिसात।। १८ ।।

अब इस संसार में पारब्रह्म प्रकट हुए हैं। इस कारण से यह ब्रह्माण्ड अखण्ड हो जाएगा। सबको अपना तारतम ज्ञान देकर परमधाम की हकीकत जाहिर कर देंगे।

सो इलम रूहअल्ला, ले आया हक का।
सेहेरग से नजीक देखाए के, माहें बैठावत बका।। १९ ।।

उस तारतम ज्ञान को लेकर श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए, जिन्होंने उस तारतम वाणी से परमधाम प्राण नली से (सेहेरग से) नजदीक दिखाया। उस वाणी से ही सबको अखण्ड करेंगे।

ए बात सुनो तुम मोमिनों, अपनी कहूं बीतक।
मेहेर करी मुझ ऊपर, ए इलम खुदाई बेसक।। २० ।।

हे मोमिनो! मैं अपनी हकीकत बताती हूं। तुम सुनो। श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर बड़ी मेहर की है जिससे मेरे सब संशय मिट गए।

कौल अलस्तो-बे-रब का, किया रूहों सों जब।
हक इलम से देखिए, सोई साइत है अब।। २१ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने रूहों को यही कहा था कि मैं ही एक तुम्हारा खाविंद हूं। अब तारतम वाणी से देखते हैं तो अभी भी वही समय है।

दुनियां दिल मजाजी, कह्या सो कछुए नाहें।
और दिल हकीकी मोमिन, हक अर्स कह्या इनों माहें।। २२ ।।

दुनियां जो झूठे दिल की है वह कुछ भी नहीं है। मोमिनों के दिल हकीकी हैं जिनमें श्री राजजी की बैठक है।

इलम हक और दुनी का, कही जाए ना तफावत।
ए सुकन सुन रूह मोमिन, आवसी अर्स लज्जत।। २३ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान की और दुनियां के ज्ञान की तुलना नहीं हो सकती। तारतम वाणी के वचनों को सुनकर मोमिनों को अखण्ड घर के सुख मिलेंगे।

Nijanand App

बीच बका के रूहन सों, हकें करी खिलवत।
सो साथ रूह-अल्लाह के, भेजे संदेसे इत।। २४ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज ने जो बातें की हैं, वही संदेश श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) के साथ यहां मोमिनों के लिए भेजे।

रूह-अल्ला आए अर्स से, मुझ सों किया मिलाप।
कहे मैं आया तुम वास्ते, मुझे भेज्या है आप।। २५ ।।

परमधाम से श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) आए, मुझसे मिले और कहा कि मुझे श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते परमधाम से भेजा है।

ए न्यामत हक के दिल की, सोई जाने दई जिन।
या दिल जाने मेरी रूह का, सो कहूं आगे मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की बातों को वह स्वयं ही जानते हैं या मेरी रूह जानती है। जिसे मैं मोमिनों के आगे कह रही हूं।

ए न्यामत वाहदेत की, हक के दिल की बात।
और कोई ना ले सके, बिना बका हक जात।। २७ ।।

यह परमधाम की न्यामत श्री राजजी महाराज के दिल की बातें बिना हक जात (मोमिनों) के और कोई नहीं ले सकता।

रूह-अल्ला कहे अर्स से, तेरी रूह आई उतर।
मैं दई बका तोहे न्यामत, अव्वल से आखिर।। २८ ।।

श्यामा महारानी ने (श्री देवचन्द्रजी ने) कहा कि हे इन्द्रावती! तुम्हारी आत्मा परमधाम से उतरकर खेल में आई है। मैंने तुमको तारतम ज्ञान की अनमोल न्यामत दी है जिससे तुम्हें शुरू से अन्त तक की जानकारी मिल जाएगी।

बादल बरस्या रूह-अल्ला, ए बूंदें लई जो तिन।
और कोई न ले सके, बिना अर्स रूहन।। २९ ।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने ज्ञान रूपी बादल की वर्षा की। उन बूंदों को जिन्होंने लिया वही परमधाम की आत्माएं हैं। जिनके तन परमधाम में नहीं है, वह इस ज्ञान को नहीं ले सकते।

जिन पिआ मस्ती तिन की, बीच दुनी के छिपे नाहें।
सो मस्ती मोमिनों जाहेर हुई, चौदे तबकों माहें।। ३० ।।

जिन्होंने इस ज्ञान को समझकर ग्रहण किया है उनकी मस्ती, रहनी दुनियां में नहीं छिपेगी, इसलिए मोमिनों की मस्ती की चाल दुनियां में जाहिर हो गई, क्योंकि इन्होंने उस अखण्ड ज्ञान के रस को पिया है।

हकें न छोड़े अव्वल से, अपना इस्क दिल ल्याए।
आप इस्क न छोड़ी निसबत, पर मैं गई भुलाए।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज शुरू से ही अपना इश्क दिल में लेकर मोमिनों को अपने से अलग नहीं करते। धनी ने अपनी अंगना से अपने इश्क का सम्बन्ध नहीं तोड़ा, पर मैं ही संसार में आकर भूल गई।

Nijanand App

जगाई तो भी ना जागी, आप कह्या इत आए।
मैं परी बीच फरेब के, मोहे थके जगाए जगाए।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज ने संसार में आकर मुझे जगाया तो भी मैं नहीं जागी। मैं दुनियां के माया जाल में फंसी थी, इसलिए मुझे जगा-जगाकर धनी थक गए।

इस्क न आवे पेहेचान बिना, सो मोको दई पेहेचान।
दई बातें हक के दिल की, हक की निसबत जान।। ३३ ।।

बिना पहचान के इश्क नहीं आता, इसलिए मुझे उन्होंने अपनी पहचान कराई। अपनी अंगना जानकर दिल की बातें बताईं।

मैं ना कछू जानी पेहेचान, मुझ पर करी मेहेनत।
मैं इस्क न जानी निसबत, ना तो मोहे दई हक न्यामत।। ३४ ।।

मैं फिर भी पहचान नहीं कर सकी। तब मेरे ऊपर बहुत जोर लगाया। मैंने न इश्क समझा और न मैं अंगना हूं यह जाना, जबकि मुझे तो श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की न्यामत दी।

इस्क पेहेचान ना निसबत, सब फरेबें दिया भुलाए।
हकें इस्क अपना, आखिर लो निबाहे।। ३५ ।।

माया ने इस संसार में हमारे इश्क को तथा मैं श्री राजजी की अंगना हूं (मेरे मूल सम्बन्ध), को भी भुला दिया, परन्तु श्री राजजी महाराज अपने सच्चे इश्क को आखिर तक निभा रहे हैं।

ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान।
बाले थें बुड़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के यह अखण्ड सुख शब्दातीत हैं। जबान से वर्णन नहीं हो सकते। बचपन से बुढ़ापे तक मेरे धाम धनी की कृपा सदा ही बनी है।

तो भी घाव न लग्या अरवाह को, जो देखे अलेखे एहेसान।
न्यामत पाई बका हक की, कर दई रूह पेहेचान।। ३७ ।।

इतने एहसान होने पर भी मेरी रूह को घाव नहीं लगा, जबकि श्री राजजी महाराज ने अपनी पहचान कराकर अखण्ड घर की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी।

नजर से न काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन।
क्यों कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन।। ३८ ।।

शुरू से आज दिन तक श्री राजजी महाराज ने मुझे अपने चरणों से अलग नहीं किया। ऐसे लाड़ले धनी की मेहर, जो सदा ही मोमिनों पर करते हैं, की सिफत का वर्णन कैसे करूं?

तन असल तले कदम के, और उपज्या तन सुपना।
ताए भी हक रहे नजीक, जो था बीच फना।। ३९ ।।

हमारे मूल तन (परआतम) श्री राजजी के चरणों में परमधाम में हैं। सपने में यह नया झूठा तन है और मिट जाने वाला है। फिर भी वह धनी इसके नजदीक हैं, क्योंकि दिल को अपना धाम बनाकर बैठे हैं।

Nijanand App

नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन।। ४० ।।

माया ने हमारे सपने के तन को पहचान न होने के कारण खूब दुःखी किया। फिर भी श्री राजजी महाराज ने हमें छोड़ा नहीं और रात-दिन सिर पर खड़े रहे।

उमर अव्वल से आखिर लग, गुजरी सांई संग।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इस्क तरंग।। ४१ ।।

मेरा जीवन शुरू से आखिर तक श्री राजजी के चरणों तले ही बीता। पहले मैंने श्री राजजी महाराज के प्रेम की लहरों को पहचाना नहीं। अब पहचान हो गई।

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल।। ४२ ।।

जो श्री राजजी महाराज को करना होता है वह पहले से ही दिल में ले लेते हैं। उसके बाद वह विचार परमधाम में सबके दिलों में आ जाता है, क्योंकि एकदिली है।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक।। ४३ ।।

एक परमधाम की साहेबी और रूहों के साथ उनका कैसा इश्क है, यह रूहों को दिखाने के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने दिल में लिया।

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर।। ४४ ।।

जिस बात को श्री राजजी महाराज ने पहले दिल में लिया, वह बाद में अक्षर के दिल में आई और फिर श्यामा महारानी और रूहों के दिल में आई और जाहिर हो गई।

वास्ते नूर-जलाल के, और हादी रूहन।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन।। ४५ ।।

अक्षर ब्रह्म के वास्ते और श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते खेल दिखाने की बाबत संसार के धर्मग्रन्थों में और कुरान में बहुत ज्यादा विवरण है।

महामत कहे ए मोमिनों, हक साहेबी बुजरक।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क।। ४६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की साहेबी बहुत महान है। श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी और इश्क भी बड़ा महान है।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३०५ ।।

बेसकी का प्रकरण

ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अर्स के गुझ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की ऐसी एकदिली की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने मेरे सब संशय मिटा डाले और अक्षर के पार अखण्ड परमधाम और परमधाम के छिपे रहस्यों को खोल दिया।

Nijanand App

नीदें दिए गोते सुध बिना, ए जो सुपन का तन।
तिनको भी हकें न छोड़िया, सिर पर रहे रात दिन।। ४० ।।

माया ने हमारे सपने के तन को पहचान न होने के कारण खूब दुःखी किया। फिर भी श्री राजजी महाराज ने हमें छोड़ा नहीं और रात-दिन सिर पर खड़े रहे।

उमर अव्वल से आखिर लग, गुजरी सांई संग।
मैं पेहेले ना पेहेचाने, हक के इस्क तरंग।। ४१ ।।

मेरा जीवन शुरू से आखिर तक श्री राजजी के चरणों तले ही बीता। पहले मैंने श्री राजजी महाराज के प्रेम की लहरों को पहचाना नहीं। अब पहचान हो गई।

जो बात करनी है हकें, सो पेहेले लेवें माहें दिल।
पीछे सब में पसरे, जो वाहेदत में असल।। ४२ ।।

जो श्री राजजी महाराज को करना होता है वह पहले से ही दिल में ले लेते हैं। उसके बाद वह विचार परमधाम में सबके दिलों में आ जाता है, क्योंकि एकदिली है।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहों को, पेहेले दिल में लिया हक।। ४३ ।।

एक परमधाम की साहेबी और रूहों के साथ उनका कैसा इश्क है, यह रूहों को दिखाने के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने दिल में लिया।

जो पेहेले लई हकें दिल में, पीछे आई माहें नूर।
तिन पीछे हादी रूहन में, ए जो हुआ जहूर।। ४४ ।।

जिस बात को श्री राजजी महाराज ने पहले दिल में लिया, वह बाद में अक्षर के दिल में आई और फिर श्यामा महारानी और रूहों के दिल में आई और जाहिर हो गई।

वास्ते नूर-जलाल के, और हादी रूहन।
बोहोत बेवरा है खेल में, किया महंमद रूहों देखन।। ४५ ।।

अक्षर ब्रह्म के वास्ते और श्यामाजी महारानी और रूहों के वास्ते खेल दिखाने की बाबत संसार के धर्मग्रन्थों में और कुरान में बहुत ज्यादा विवरण है।

महामत कहे ए मोमिनों, हक साहेबी बुजरक।
बेसक इलम हक का, और हक का बड़ा इस्क।। ४६ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की साहेबी बहुत महान है। श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी और इश्क भी बड़ा महान है।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। ३०५ ।।

बेसकी का प्रकरण

ए इलम इन वाहेदत का, हकें सो बेसकी दई मुझ।
नूर के पार द्वार बका के, सो खोले अर्स के गुझ।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की ऐसी एकदिली की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से श्री राजजी महाराज ने मेरे सब संशय मिटा डाले और अक्षर के पार अखण्ड परमधाम और परमधाम के छिपे रहस्यों को खोल दिया।

Nijanand App

चौदे तबकों ढूंढ़या, सब रहे दूर से दूर।
रूह-अल्ला के इलम बिना, हुआ न कोई हजूर।। २ ।।

चौदह तबकों के लोगों ने परमधाम को खूब ढूंढ़ा, परन्तु सब दूर ही रहे। किसी को पता नहीं चला। श्यामा महारानीजी के तारतम ज्ञान के बिना कोई उस पारब्रह्म को पहचान नहीं सका।

कई दुनियां में बुजरक हुए, किन बका तरफ पाई नाहें।
सो इलम नुकता ईसे का, बैठावे बका मांहें।। ३ ।।

दुनियां में कई ज्ञानी व विद्वान हुए, परन्तु अखण्ड परमधाम कहां है, कोई नहीं जान सका। अब ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान ने अखण्ड परमधाम तक का ज्ञान दे दिया।

सो साहेदी देवाई महंमद की, सेहेरग से नजीक हक।
नूर के पार नूर-तजल्ला, इलम माहें बैठावे बेसक।। ४ ।।

उस परमधाम की गवाही मुहम्मद साहब ने भी दी। जिन्होंने पारब्रह्म को सेहेरग से नजदीक बताया। अक्षर के पार परमधाम के तारतम ज्ञान ने पहचान करा दी।

गिन तूं सुख बेसक के, जो इलम दिया नसीहत।
मेहेर करी मेहेबूब ने, हकें जान निसबत।। ५ ।।

इस परमधाम के अखण्ड सुखों को तारतम ज्ञान से बेशक होकर गिन लो। श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर तुम्हारे ऊपर कृपा की है।

सक ना तीन उमत में, सक ना खास उमत।
सक ना उमत फरिस्ते, सक ना कुंन कुदरत।। ६ ।।

अब तारतम वाणी से पता लगा कि संसार में तीन सृष्टियां हैं और ब्रह्मसृष्टि खासल खास है। ईश्वरी सृष्टि जिन्हें फरिश्ते कहते हैं तथा कुंन से पैदा माया की जीवसृष्टि है। इसमें किसी बात का संशय नहीं है।

खासल खास रूहें इस्क, और खासे बंदगी दिल।
आम वजूद जदल से, जिनों नासूती अकल।। ७ ।।

खासल खास ब्रह्मसृष्टि इश्क से तथा ईश्वरीसृष्टि दिल से बन्दगी करती हैं। बाकी आम खलक जीव सृष्टि जिनकी बुद्धि मृत्युलोक की झूठी बुद्धि है, जिद से मानते हैं।

रूहों लई हकीकत मारफत, गिरो फरिस्तों हकीकत।
आम खलक जाहेरी, जो करम कांड सरीयत।। ८ ।।

ब्रह्मसृष्टि ने हकीकत और मारफत के ज्ञान को लिया। ईश्वरीसृष्टि ने हकीकत के ज्ञान को लिया। बाकी जाहिरी जीवसृष्टि कर्मकाण्ड और शरीयत के रास्ते चली।

दो गिरो पोहोंची वतन अपने, तीसरी आम जो दीन।
सो तेता ही नजीक, जिनका जेता आकीन।। ९ ।।

दो जमातें ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि अखण्ड घर (परमधाम) और अक्षर धाम की हैं वह पहचान कर अपने-अपने वतन पहुंच गईं। तीसरी आम खलक (जीवसृष्टि) झूठे संसार की है। तीनों में जिनका जितना यकीन है उतना ही वह पारब्रह्म के नजदीक हैं।

Nijanand App

पाई तीनों की बेसकी, कुफर बंदगी इस्क।
ऐसा इलम इन दुनी में, हुई बका की बेसक।। १० ।।

इस संसार में ऐसा जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान आया जिसने तीनों सृष्टियों के संशय मिटा दिए। जीवसृष्टि ने कुफ्र से हटकर परमधाम की पहचान की। ईश्वरीसृष्टि सो रही थी। पारब्रह्म की बन्दगी से उसे पहचान हुई। ब्रह्मसृष्टि जो घर को भूल गई थी, उसे इश्क से घर की पहचान हुई।

सक ना पैदा फना की, सक ना दोजख भिस्त।
हिसाब ठौर की सक नहीं, सक ना ठौर कयामत।। ११ ।।

संसार बनता है, मिटता है। इसमें कोई संशय नहीं रह गया। कर्मों के अनुसार दोजख और बहिश्त मिलने में कोई संशय नहीं रह गया। क्षर, अक्षर और अक्षरातीत के तीन जुदा-जुदा ठिकानों में कोई शक नहीं रहा और कयामत के बारे में भी कोई शक नहीं रहा।

सक ना आठों भिस्त में, सक ना काजी कजाए।
बेसक किए आखिर लो, अव्वल से इमदाए।। १२ ।।

आठ बहिश्तें कायम होंगी। इसमें संशय नहीं रहा। खुदा खुद न्यायाधीश बनकर न्याय करेंगे, इसमें संशय नहीं रहा। शुरू से आज तक जो कुछ भी है, इसमें संशय नहीं रहा।

क्यों कर मुरदे उठसी, क्यों होसी हक दीदार।
क्यों कर हिसाब होएसी, ए सब रूह-अल्ला खोले द्वार।। १३ ।।

मुर्दे कब्रों से कैसे उठेंगे? कैसे उन्हें खुदा का दर्शन होगा? कैसे सबको न्याय चुकाए जाएंगे? यह सब रूहअल्लाह श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान ने संशय मिटाकर भेद खोल दिए।

केते दिन कयामत के, क्यों कयामत के निसान।
ए सक कछुए ना रही, जो लिखी बीच कुरान।। १४ ।।

कयामत के दिन कितने बाकी हैं? कयामत के समय कितने, कैसे निशान जाहिर होंगे? यह जो कुरान में लिखा है अब उसके बारे में कुछ भी संशय नहीं रह गया।

सक ना दाभ-तूल-अर्ज की, सक न सूर मगरब।
बेसक हक कौल मोमिनों, रही ना सक कोई अब।। १५ ।।

कयामत के समय दाभतुलअर्ज जानवर कैसे जाहिर होगा? सूर्य पूरब से पच्छिम में कैसे उदय होगा? पारब्रह्म ने आने का वायदा मोमिनों से किया था। अब उसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

सक ना आजूज माजूज की, आड़ी अष्ट धात दिवाल।
लिख्या टूटेगी आखिर, ए बेसक दुनी के काल।। १६ ।।

आजूज-माजूज अष्ट धातु की दीवाल को चाटकर अन्त में कैसे तोड़ेंगे, यह दुनियां के महाप्रलय के निशान हैं। इसमें भी संशय नहीं रहा।

रूह-अल्ला सब रूहन को, पाक कर देवें आकीन।
कुफर दज्जाल को तोड़ के, बेसक करें एक दीन।। १७ ।।

श्यामा महारानी रूहअल्लाह मोमिन को तारतम वाणी से निर्मल करके पारब्रह्म के ऊपर उनका यकीन पक्का करेंगे। जीवसृष्टि के कुफ्र को मिटाकर तारतम वाणी के ज्ञान से संशय रहित कर एक दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) में लाएंगे।

Nijanand App

ल्याया ईसा वास्ते मोमिनों, बेसक बका न्यामत।
करें हक जात पर सिजदा, इमाम मोमिनों इमामत।। १८ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी मोमिनों के वास्ते जागृत बुद्धि की तारतम वाणी परमधाम से अखण्ड न्यामत लाए हैं। जिसके द्वारा इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी श्री राजजी महाराज की अंगना ब्रह्मसृष्टि के अग्रसर बनकर सबको हक जात पर (मोमिनों पर) सिजदा कराएंगे। वही सिजदा पारब्रह्म पर होगा, क्योंकि वह मोमिनों के दिल में बैठे हैं।

सक ना किसी अर्स की, सक न नूर-मकान।
सक ना बेचून बेचगून, सक ना चार आसमान।। १९ ।।

तीनों सृष्टियों के तीन धाम–बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम में कोई शक नहीं रहा। शून्य और निर्गुण में संशय नहीं रह गया और न नासूत, मलकूत, जबरूत और लाहूत में ही कोई संशय रहा।

कहूं बेसक तिनका बेवरा, नासूती मलकूत।
ना सक आसमान जबरूत, न सक आसमान लाहूत।। २० ।।

इन चारों आसमानों का ब्यौरा नासूत (मृत्युलोक), मलकूत (बैकुण्ठ), जबरूत (अक्षरधाम) तथा लाहूत (परमधाम) की बाबत कोई संशय नहीं रहा।

सक नाहीं सरीयत में, न सक रही तरीकत।
सक नाहीं हकीकत में, सक न हक मारफत।। २१ ।।

शरीयत, तरीकत, हकीकत और हक की मारफत में कोई संशय नहीं रह गया।

सक न जुदी जुदी कयामत, सक नाहीं वाहेदत।
बेसक जुदी जुदी पैदास, ए जो कादर की कुदरत।। २२ ।।

तीनों सृष्टियों की जुदा-जुदा कायमी होगी। जीवसृष्टि आठ बहिश्तों में, ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम में तथा ब्रह्मसृष्टि परमधाम जहां एकदिली है, में जाएंगी। इसमें संशय नहीं रहा। अक्षर ब्रह्म की कुदरत ने तीनों को अलग-अलग ठिकाने से संसार में भेजा।

सक ना पेहेचान रसूल की, जो कही तीन सूरत।
बसरी मलकी और हकी, जो जाहेर होसी आखिरत।। २३ ।।

रसूल साहब की बसरी, मलकी और हकी तीन सूरतें कयामत के वक्त जाहिर होंगी, इसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

सक ना जबराईल में, और सक ना मेकाईल।
सक ना सूर बजाए की, सक ना असराफील।। २४ ।।

जबराईल (धनी का जोश), मेकाईल (ब्रह्माजी) तथा जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील के द्वारा सूर फूंकना (ज्ञान का बिगुल बजाना) में भी कोई संशय नहीं रह गया।

सक ना अरवाहें अर्स की, जो तीन बेर उतरे।
लैल में आए जिन वास्ते, कछू सक ना रही ए।। २५ ।।

रूहें खेल में परमधाम से तीन बार उतरी हैं इसमें भी कोई शक नहीं रहा। जिस खेल को देखने के वास्ते रात्रि में आए उसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

Nijanand App

सक ना आए खेल देखने, ए जो रूहें आइयां बिछड़।
कर मेला नासूत में बेसक, ले नसीहत आए अर्स चढ़।। २६ ।।

पारब्रह्म से बिछुड़ कर रूहें खेल देखने संसार में आई हैं इसमें भी संशय नहीं रह गया। इस मृत्युलोक में सब रूहें मिलकर तारतम ज्ञान से नसीहत लेकर अपने घर परमधाम जाएंगी, इसमें भी कोई संशय नहीं रह गया।

महंमद ईसा अर्स में, पोहोंचे हक हजूर।
कर अर्ज सब मेयराज में, बेसक करी मजकूर।। २७ ।।

मुहम्मद साहब तथा ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) पारब्रह्म के पास पहुंचे और दर्शन में ब्रह्मसृष्टि के वास्ते चर्चा की। इसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

महंमद ईसे किए जवाब, तिन में रही न सक।
सक नहीं पड़उत्तर में, जो हकें दिए बुजरक।। २८ ।।

मुहम्मद साहब और ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानीजी ने जो जवाब दिया उसमें भी कोई संशय नहीं रहा। फिर पारब्रह्म ने उत्तर में उन्हें माशूक कह कर बुजरकी दी, उसमें भी कोई संशय नहीं रह गया।

बीच सब मेयराज के, जेती भई मजकूर।
ए सक जरा ना रही, जो खिलवत तजल्ला-नूर।। २९ ।।

पारब्रह्म के मूल-मिलावे की बाबत दर्शन के समय जो कुछ भी चर्चा मुहम्मद साहब से हुई, उसमें कोई संशय बाकी नहीं बचा।

छिपी बातें बीच अर्स के, कोई रही न माहें सक।
पाई ऐसी बेसकी, जो लई दिल की बातें हक।। ३० ।।

परमधाम की जो बातें आज तक छिपी थीं और श्री राजजी महाराज के दिल की बातें जो आज तक मालूम नहीं थीं, वह सब मालूम हो गईं और अब कोई संशय न रहने से बेशक हो गए।

आगूं बेसक बड़े अर्स के, नूर रोसन जोए किनार।
दोऊ तरफों जरी जोए के, नूर रोसन अति झलकार।। ३१ ।।

परमधाम के आगे पूरब दिशा में जमुनाजी और उनके दोनों किनारे मोतियों से जड़े झलकार कर रहे हैं, इसमें भी संशय नहीं रहा।

सक नाहीं जल उजले, मीठा ज्यों मिश्री।
सक ना गिरदवाए बाग की, कई मोहोल जवेर जरी।। ३२ ।।

जमुनाजी का जल बहुत निर्मल है, मिश्री से अधिक मीठा है, इसमें भी कोई संशय नहीं रहा। जमुनाजी को घेरकर बाग आए हैं और वहां किनारे पर कई प्रकार के महल बने हैं जो जवेरों से जड़े हैं, इनमें भी कोई संशय नहीं रहा।

खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत।
बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत।। ३३ ।।

परमधाम की जमीन अति उज्ज्वल है और खुशबूदार है। वृक्ष सोने और जवेरों से बने दिखाई देते हैं। परमधाम के वन जवाहरात की तरह जगमगा रहे हैं। इसमें भी कोई संशय नहीं रहा।

Nijanand App

सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक।
बिरिख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक।। ३४ ।।

हौज-कौसर तालाब में और सुन्दर टापू महल में, तालाब और टापू के चारों ओर के वृक्षों में, हौज-कौसर के पानी और हीरे की पाल में और जमुनाजी के पाट-घाट में कोई संशय नहीं रहा।

बेसक बड़े अर्स की, क्यों कहूं बड़ी मोहोलात।
बाग बड़ा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात।। ३५ ।।

परमधाम के बड़े विशाल महलों और बड़े-बड़े सुन्दर बगीचे जो चारों तरफ आए हैं, जिनका वर्णन इस जबान से करना सम्भव नहीं है उन सबके बारे में भी कोई संशय बाकी नहीं है।

इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसु खेलत।
गिरदवाए गून्जे अर्स के, कई विध जिकर करत।। ३६ ।।

वन की गलियों में पशु तरह-तरह के खेल करते हैं और परमधाम के चारों तरफ उनकी मधुर ध्वनि आती है। वह कई तरह से 'राज-राज', 'धनी-धनी' का जिक्र करते हैं। इसमें भी किसी प्रकार का संशय नहीं है।

यों केती कहूं बेसकी, इनका नहीं हिसाब।
महामत देखावे हक इस्क, जो साकी पिलावे सराब।। ३७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसा ज्ञान जिसके प्रति तारतम वाणी से बेशकी हो गई और जो बेहिसाब हैं उसका वर्णन कहां तक करूं? अब मैं श्री राजजी महाराज जो इश्क की शराब पिला रहे हैं और अपना इश्क दिखा रहे हैं, उसका थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ३४२ ।।

सराब सुख लज्जत

नोट—शराब इश्क है। साकी अक्षरातीत पारब्रह्म हैं। पीने वाले मोमिन हैं। सुराही श्री राजजी का दिल है। प्याला मोमिनों की आंखें हैं।

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए।। १ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों को इश्क की शराब पिला रहे हैं। हे परमधाम की आत्माओ! श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब अपनी नजरों के प्याले से भर-भरकर पिओ।

हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले।। २ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के आशिक हैं और इनके इश्क की शराब में जो लज्जत है वह पीने वाले मोमिन ही जानते हैं।

नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क बेशुमार है और इश्क का स्वाद भी बेशुमार है। पीने वालों की मस्ती की तरंगें भी बेशुमार हैं, जो श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब से आती हैं।

Nijanand App

सक नाहीं हौज ताल की, इत बोहोत मोहोल बुजरक।
बिरिख पानी ताल पाल के, सब पाट घाट बेसक।। ३४ ।।

हौज-कौसर तालाब में और सुन्दर टापू महल में, तालाब और टापू के चारों ओर के वृक्षों में, हौज-कौसर के पानी और हीरे की पाल में और जमुनाजी के पाट-घाट में कोई संशय नहीं रहा।

बेसक बड़े अर्स की, क्यों कहूं बड़ी मोहोलात।
बाग बड़ा गिरदवाए का, इन जुबां कह्या न जात।। ३५ ।।

परमधाम के बड़े विशाल महलों और बड़े-बड़े सुन्दर बगीचे जो चारों तरफ आए हैं, जिनका वर्णन इस जबान से करना सम्भव नहीं है उन सबके बारे में भी कोई संशय बाकी नहीं है।

इत सक मोहे जरा नहीं, बन गलियों पसु खेलत।
गिरदवाए गून्जे अर्स के, कई विध जिकर करत।। ३६ ।।

वन की गलियों में पशु तरह-तरह के खेल करते हैं और परमधाम के चारों तरफ उनकी मधुर ध्वनि आती है। वह कई तरह से 'राज-राज', 'धनी-धनी' का जिक्र करते हैं। इसमें भी किसी प्रकार का संशय नहीं है।

यों केती कहूं बेसकी, इनका नहीं हिसाब।
महामत देखावे हक इस्क, जो साकी पिलावे सराब।। ३७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ऐसा ज्ञान जिसके प्रति तारतम वाणी से बेशकी हो गई और जो बेहिसाब हैं उसका वर्णन कहां तक करूं? अब मैं श्री राजजी महाराज जो इश्क की शराब पिला रहे हैं और अपना इश्क दिखा रहे हैं, उसका थोड़ा सा वर्णन करती हूं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। ३४२ ।।

सराब सुख लज्जत

नोट—शराब इश्क है। साकी अक्षरातीत पारब्रह्म हैं। पीने वाले मोमिन हैं। सुराही श्री राजजी का दिल है। प्याला मोमिनों की आंखें हैं।

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिए।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिए।। १ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों को इश्क की शराब पिला रहे हैं। हे परमधाम की आत्माओ! श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब अपनी नजरों के प्याले से भर-भरकर पिओ।

हक आसिक रूहन का, इन इस्क का आब जे।
इन आब में जो स्वाद है, ए रस जानें पीवन वाले।। २ ।।

श्री राजजी महाराज रूहों के आशिक हैं और इनके इश्क की शराब में जो लज्जत है वह पीने वाले मोमिन ही जानते हैं।

नहीं हिसाब इस्क का, स्वाद को नाहीं हिसाब।
हिसाब ना तरंग अमल के, ए जो आवत साकी के सराब।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क बेशुमार है और इश्क का स्वाद भी बेशुमार है। पीने वालों की मस्ती की तरंगें भी बेशुमार हैं, जो श्री राजजी महाराज के इश्क की शराब से आती हैं।

Nijanand App

कई रस इन सराब में, ए जो पिलावत सुभान।
मस्ती पिलावत कायम, मेहेर कर मेहेरबान।।४।।

श्री राजजी महाराज जो इश्क की शराब पिला रहे हैं उसमें कई तरह के आनन्द भरे पड़े हैं। सुभान श्री राजजी महाराज मेहर करके अखण्ड मस्ती की शराब पिलाते हैं।

रूहें नींद से जगाए के, पिलावत प्याले फूल।
मुंह पकड़ तालू रूह के, देत कायम सुख सनकूल।।५।।

रूहों को नींद से जगाकर मुंह पकड़ कर रूह के तालु में इश्क के प्याले भर-भरकर अखण्ड सुख देने वाले प्रसन्न होकर पिला रहे हैं।

ए प्याले कर मेहेरबानगी, कई रूहों पिलावत।
सुख देने बका नजीक का, प्यार कर निसबत।।६।।

श्री राजजी महाराज ऐसी मेहरबानी करके कई तरह से रूहों को प्यार करके तथा अपनी अंगना जानकर अखण्ड सुख देने के लिए भर-भर प्याले पिलाते हैं।

कई विध मेहेर करत हैं, मासूक जो मेहेरबान।
उलट आप आसिक हुआ, जो वाहेदत में सुभान।।७।।

हमारे माशूक श्री राजजी महाराज कई तरह से कृपा करते हैं। परमधाम की एकदिली में जो हमारे माशूक हैं वह यहां मोमिनों को अपने हाथ से इश्क पिलाने के कारण ही आशिक कहलाते हैं।

रूहों के दिल कछू ना हुता, कछू कहें न मांगें हक से।
ना कछू चित में चितवन, ना मुतलक रूहों मन में।।८।।

हमारे दिल में ऐसा कुछ नहीं था और न कुछ श्री राजजी से मांगा था और न चित्त में कोई चाह थी। हम रूहों के मन में कुछ नहीं था।

आस बंधाई हुकमें, हुकमें कराई उमेद।
आप इस्क की बुजरकी, कर मेहेर देखाए कई भेद।।९।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमें आशा बंधवा दी और हुकम ने ही हमारी चाहना पूरी कराई। श्री राजजी महाराज के इश्क की महानता और मेहर के रहस्य खोल दिए।

यों कई सुख दिए इस्क के, कई सुख दिए जो मेहेर।
कई सुख अपनी बड़ाई के, जासों और लगे सब जेहेर।।१०।।

इस तरह से कई सुख इश्क के, मेहर के तथा अपनी महानता के दिए। जिससे सारी दुनियां हमें जहर के समान लगने लगी।

कई सुख दिए अर्स के, कई सुख दिए निसबत।
कई सुख दिए इलम के, बेसक जो नसीहत।।११।।

परमधाम के कई सुख दिए। अंगना होने के कई सुख दिए। तारतम वाणी से कई नसीहतें दीं। कई इलम के सुख दिए, जिससे मेरे संशय मिट गए।

Nijanand App

कई सुख दिए रूहन में, ए मेला बैठा विध जिन।
हक ऊपर आप बैठके, सुख देवें सबन।। १२ ।।

परमधाम में रूहें मिलकर कैसे बैठी हैं और श्री राजजी महाराज सिंहासन पर बैठकर सबको कई तरह से सुख दे रहे हैं।

सुख दिए अर्स जिमीय के, सुख दिए जल जोए।
सुख दिए मोहोलात के, सब जरी किनारे सोए।। १३ ।।

परमधाम की जमीन के, जमुनाजी के जल के, जल के किनारे बने महलों के तथा जमुनाजी के जवाहरातों जड़े किनारों के सुख दिए।

सुख दिए जल ताल के, सुख ताल कई विवेक।
कोट जुबां ना केहे सके, तो कहा कहे रसना एक।। १४ ।।

हौज-कौसर तालाब के जल की तथा ताल की और कई शोभा के सुख करोड़ों जबान नहीं कह सकतीं तो मेरी एक जबान कैसे कहे?

सुख दिए मोहोल नूर के, सुख बाग नूर गिरदवाए।
ए समूह मोहोल सुख कैसे कहूं, इन जुबां कहे न जाए।। १५ ।।

रंग महल के तेज के सुख दिए। उसके चारों तरफ बगीचों की सुन्दरता के सुख दिए। इन सम्पूर्ण महलों के सुख कैसे कहूं? इस जबान से कहे नहीं जाते।

कई सुख बड़े अर्स के, बन गिरद मोहोलात।
ए कायम सुख हक अर्स के, सुख हमेसा दिन रात।। १६ ।।

परमधाम के चारों तरफ वनों के महलों के सुख जो सदा अखण्ड हैं, कहां तक वर्णन करूं? यह सुख परमधाम में श्री राजजी महाराज हमें दिन-रात देते हैं।

कई सुख जोए बाग के, कई सुख कुंज गलियन।
कई सुख पसु पंखियन के, मुख बानी मीठी बोलन।। १७ ।।

जमुनाजी के बगीचों के, कुंज-निकुंज की गलियों के, पशु-पक्षियों के जो अपने मुख से मीठी वाणी बोलते हैं, के सुखों का वर्णन कहां तक करूं?

ए खेलौने सुख हक के, ए सुख दिए रूहन।
खूबी इनके परन की, आकास न माए रोसन।। १८ ।।

यह सब श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं। जिनके सुख सदा रूहों को देते हैं। इन पक्षियों के परों की खूबी आकाश में नहीं समाती। उसका वर्णन कैसे करूं?

देखी कायम साहेबी हक की, जिनका नहीं सुमार।
इन नासूत में बैठाए के, सुख देखाए नूर के पार।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज की अखण्ड परमधाम की साहेबी जो बेशुमार है, उसे मैंने देखा। इस मृत्युलोक में हमें बिठाकर अक्षर के पार परमधाम के सुख दिखाए।

Nijanand App

कई सुख दिए लैलत कदर में, जो अव्वल दो तकरार।
सुख दिए फजर तीसरे, कई सुख परवरदिगार।। २० ।।

लैल-तुल-कदर की रात्रि के पहले दो हिस्सों में बृज और रास में कई तरह के सुख दिए। सवेरे के तीसरे भाग में जागनी के ब्रह्माण्ड में तारतम वाणी से जागृत कर श्री राजजी महाराज कई तरह से सुख देते हैं।

कई सुख दिए निसबत कर, ए झूठा तन कर यार।
क्यों कहूं सुख मेहेबूब के, जाके कायम सुख अपार।। २१ ।।

परमधाम की निसबत से हमारे झूठे तनों को भी अपनी अंगना बनाकर लाड़ले मेहबूब ने कई तरह से बेशुमार अखण्ड सुख दिए।

और सुख सब मेयराज में, केते कहूं जुबान।
जुदी जुदी जंजीरों, लिखे मांहें फुरमान।। २२ ।।

जो सुख आपने रसूल साहब की मेयराज (दर्शन की रात्रि) में दिए उसका बयान इस जबान से कैसे करूं? वह सुख कुरान के अलग-अलग सिपारों में अलग-अलग आयतों में लिखे हैं।

हकें कह्या उतरते, तुम जात बीच नासूत।
आप वतन जिन भूलो मोहे, मैं बैठा बीच लाहूत। २३ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल में उतरते समय कहा कि हे सखियो! तुम मृत्युलोक में खेल देखने जा रही हो। तुम अपने आपको, घर को तथा मुझे मत भुला देना। मैं यहां परमधाम में बैठा हूं।

तब फेर कह्या अरवाहों ने, हम क्यों भूलें तुमको।
तुम पेहेले किए चेतन, खेल कहा करे हमको।। २४ ।।

तब फिर रूहों ने जवाब दिया कि हम आपको कैसे भूलेंगे? आपने तो हमें पहले से ही सावधान कर दिया है। यह खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

ए बातें बीच अर्स के, अव्वल जो मजकूर।
सो याद देने लिखी रमूजें, जो हुई हक हजूर।। २५ ।।

यह बातें परमधाम में शुरू में श्री राजजी के सामने हुईं। उनको याद दिलाने के वास्ते ही छिपी बातें लिखी हैं।

बैठाए बीच नासूत के, हम पर भेज्या फुरमान।
उनमें लिखी इसारतें, वाहेदत के सुभान।। २६ ।।

हमें मृत्युलोक में बिठाकर हमारे पास कुरान भेज दिया। उसमें हमारी और श्री राजजी महाराज की एकदिली की सारी बातें लिखी हैं।

मोमिन मेरे अहेल हैं, हकें लिख्या माहें कुरान।
खोल इसारतें रमूजें, इनों जरे जरा पेहेचान।। २७ ।।

कुरान में लिखा है कि मोमिन मेरे वारिस हैं। कुरान के छिपे भेदों के रहस्य यह मोमिन ही खोलेंगे क्योंकि इनको परमधाम के जर्रे-जर्रे की जानकारी है।

Nijanand App

और जिन छुओ कुरान को, यों हकें लिखी हकीकत।
वाको नापाकी ना टरे, बिना तौहीद मदत।। २८ ।।

मोमिनों के अतिरिक्त कुरान को छूने को मना किया है, क्योंकि बिना श्री राजजी महाराज की मेहर के जीवसृष्टि की नापाकी (अपवित्रता) नहीं छूटेगी, अर्थात् उनके संशय नहीं मिटेंगे। ऐसी हकीकत कुरान में लिखी है।

सो मदत तौहीद की, पाइए ना मोमिनों बिन।
ए दुनियां को चाहें नहीं, जाको हक बका रोसन।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज की कृपा मोमिनों के बिना किसी को नहीं मिलती। इन मोमिनों को दुनियां की चाह नहीं होती क्योंकि इनके पास श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से पहचान है।

सो पाक मोमिन कहे, जिन लिया हकीकी दीन।
सो हक बिना कछू न रखें, ऐसा इनका आकीन।। ३० ।।

हक के इस दीन (निजानन्द सम्प्रदाय) को मानने वाले ही मोमिन हैं। ब्रह्मसृष्टि हैं। जिनको पाक कहा है। इनका इतना पक्का यकीन है कि पारब्रह्म के सिवाय अपने दिल में किसी की चाह नहीं रखते।

हकीकत मारफत के, इनको खुले द्वार।
उतरे नूर बिलंद से, याको वतन नूर के पार।। ३१ ।।

हकीकत और मारफत के ज्ञान के रहस्यों को यही समझते हैं। यही परमधाम से उतरे हैं। इनका ही घर अक्षर के पार परमधाम है।

जहां जबराईल जाए न सक्या, रह्या नूर-मकान।
पर जलावे नूरतजल्ली, चढ़ सक्या न चौथे आसमान।। ३२ ।।

जबराईल जहां नहीं जा सका, अक्षर धाम तक ही रह गया। अक्षरातीत के तेज को जबराईल सहन नहीं कर सका और चौथे आसमान (लाहूत) में नहीं पहुंच सका।

जित हक हादी रूहें, अर्स अजीम का नूर।
कौलं किया रूहोंसों हकें, सो महंमद मसी ल्याए मजकूर।। ३३ ।।

जहां श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहें अर्श अजीम में विराजमान हैं, जहां पर श्री राजजी महाराज ने रूहों से वायदे किए थे, उस हकीकत को श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) और मुहम्मद साहब ने लाकर जाहिर किया।

और हुज्जत न रखी किनकी, चौदे तबक की जहान।
मोमिनों ऊपर अहमद, ल्याया एह फुरमान।। ३४ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में से किसी का मोमिनों के समान यकीन नहीं है (हुज्जत नहीं है)। मोमिनों के वास्ते ही श्री श्यामाजी महारानी यह वाणी लेकर आई हैं।

ए नाबूद वजूद जो नासूती, अर्स उमत धरे आकार।
लिख्या हकें कुरान में, ए तन मेरे यार।। ३५ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों ने इस संसार में जो मिटने वाले तन धारण किए हैं, श्री राजजी ने कुरान में लिखा है कि वह मेरे दोस्त (यार) हैं।

Nijanand App

यों हकें लिख्या कुरान में, ए अरवाहें मेरे अहेल।
ए झूठे वजूद जो खाक के, निपट गंदे सेहेल।। ३६ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने यह भी लिखा है कि यह ब्रह्मसृष्टियां मेरे वारिस हैं। बाकी संसार के झूठे जीव बिल्कुल नापाक हैं।

औलिया लिल्ला दोस्त कर, नूर जमाल लिखत।
ऐसे निजस तन नासूती, कहे यासों मेरी निसबत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को कुरान में ज्ञानी और अपने प्यारे आशिक कहा है। इन्होंने जो झूठे तन धारण कर रखे हैं, उनसे मेरा सम्बन्ध है, क्योंकि इन तनों में मेरे मोमिनों की आत्मा बैठी है।

कहे नूर-जमाल कुरान में, छोड़ के एह अंधेर।
एक साद करो मुझको, मैं तुमें जी जी कहूं दस बेर।। ३८ ।।

कुरान में पारब्रह्म श्री राजजी महाराज लिखते हैं कि हे मोमिनो! तुम इस झूठे संसार को छोड़कर मुझे एक बार रिझा लो तो मैं दस बार 'हां जी', 'हां जी', कहकर खुश करूंगा।

यों हकें लिख्या कुरान में, हक रूहों की करें जिकर।
पीछे आपन करत हैं, रूहें क्यों न देखो दिल धर।। ३९ ।।

कुरान में लिखा है कि श्री राजजी महाराज हमेशा रूहों की ही बातें करते हैं। उसके बाद ही हम श्री राजजी को याद करते हैं। इस बात को दिल से विचारकर क्यों नहीं देखते हो?

हकें लिख्या कुरान में, पेहेले मेरा प्यार।
जो तुम पीछे दोस्ती करो, तो भी मेरे सच्चे यार।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा है, हे मोमिनो! पहले मैं प्यार करूंगा। उसके बाद यदि उस प्यार को तुम सच्चे दिल से निभा डालोगे तो भी मेरे सच्चे दोस्त होगे।

रूहें सुनो एक मैं कहूं, जो हकें करी मुझसों।
पड़ी थी जल अंधेर में, कोई थाह न थी इनमों।। ४१ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! सुनो श्री राजजी महाराज ने मेरे ऊपर कृपा की। मैं माया के जंजाल में फंसी थी जिसका कोई शुमार नहीं था, अर्थात् निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

भवसागर जीवन को, किन पाया नाहीं पार।
दुख रूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार।। ४२ ।।

भवसागर के जीवों ने इस मोहसागर का पार नहीं पाया। यह दुःख का ही मोह माया-जाल है जिसमें सारे जीव दुःखी होकर जल रहे हैं।

लेहेरी उठे अंधेर की, पहाड़ जैसी बेर बेर।
ऊपर तले लग भमरियां, जीव पड़े फेर माहें फेर।। ४३ ।।

यहां पहाड़ के समान बड़ी-बड़ी माया की मजबूरियां आती हैं और ऊपर से नीचे तक चक्कर ही चक्कर है जिसमें जीव घूमता रहता है।

Nijanand App

निपट अंधेरी ला ए की, सिर ना सूझे हाथ पाए।
टापू पहाड़ों बीच में, सब बंधे गोते खाए।। ४४ ।।

यह मिटने वाला संसार निश्चित ही अज्ञान के अन्धकार से भरा है। इसमें अपना सिर, हाथ और पैर दिखाई नहीं देते, अर्थात् अपनी भी पहचान नहीं है। इस भवसागर में पहाड़ जैसे टापू हैं। सब मोह माया के बन्धन में बंधकर गोते खाते हैं।

मगर मच्छ माहें बुजरक, वजूद बड़े विक्राल।
खेलें निगलें जीव को, एक दूजे का काल।। ४५ ।।

इस संसार में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं (रिश्तेदार, सगे सम्बन्धी धर्मों के आचार्य, इत्यादि) जो एक-दूसरे को अपने स्वार्थ के लिए खा रहे हैं।

ला मकान का सागर, लग तले तेहेतसरा।
ऐसे अंधेर अथाह बीच पैठ के, मोहे काढ़ी होए मरजिया।। ४६ ।।

यह निराकार का मोह-सागर पाताल तक फैला है। ऐसे अन्धकार से भरे और गहरे सागर में श्री राजजी महाराज ने गोता लगाकर मुझे निकाला।

काढ़ के बूझ ऐसी दई, मोहे समझाई सब इत का।
बेसक का इलम दिया, जासों बैठी बीच बका।। ४७ ।।

भवसागर से निकालकर मुझे यहां की कुल हकीकत समझाई और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मेरे संशय मिटा दिए जिससे मुझे प्रतीत हुआ कि मैं परमधाम में बैठी हूं।

ए सब किया हक ने, वास्ते इस्क के।
एक जरे जरा जो दुनीय में, जो विचार देखो तुम ए।। ४८ ।।

श्री राजजी महाराज ने यह सब इश्क के वास्ते किया है। दुनियां का कण-कण सब इश्क के वास्ते बना है।

मैं कह्या नूरी अपना रसूल, तुम पर भेज्या फुरमान।
लिखी गुझ बातें दिल की, हाए हाए केहेवत यों सुभान।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैंने अपने नूर-रसूल को कुरान देकर तुम्हारे पास भेजा है। इस कुरान में मेरे दिल की छिपी बातों के रहस्य लिखे हैं।

लिखी अन्दर की इसारतें, और रमूजें जे।
कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, जाए दीजो अपनी अरवाहों को ए।। ५० ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज के दिल के अन्दर की सारी बातें इशारतों और रमूजों में लिखी हैं। इनको खोलने की कुंजी तारतम वाणी श्री श्यामाजी के हाथ में देकर कहा कि यह अपनी रूहों को जाकर दे दो।

सो कुन्जी दई मुझ को, और खोलने की कल।
तिनसे ताले सब खुले, पाई आखिर अव्वल असल।। ५१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि वह कुंजी तारतम वाणी और खोलने की कला जागृत बुद्धि जिससे सारे ताले (छिपे रहस्य) खुल जाते हैं, मुझे लाकर दी। जिससे मुझे शुरू से आज तक की हकीकत का पता चला।

Nijanand App

और कोई न खोल सके, तीन सूरत का हाल।
फैल हाल दोऊ उमत के, तोको लिखिया नूरजमाल।।५२।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को हुकम की तीन सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) की हकीकत, ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की करनी-रहनी की हकीकत मेरे बिना और कोई नहीं खोल सकेगा, ऐसा श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा।

सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत।
चिन्हाए इस्क हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत।।५३।।

उन्होंने मुझे यह भी हुकम किया कि मृत्युलोक में बैठकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों जमातों को सुख दो और हक की साहिबी और इश्क की पहचान कराकर उन्हें परमधाम बुला लाओ।

इन विध सुख केते कहूं, झूठी इन जुबान।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान।।५४।।

इस तरह से कितने बेशुमार सुख दिए। इस झूठी जबान से कैसे कहूं? उन सुखों को मेरी आत्मा या मोमिन या देने वाले श्री राजजी महाराज जानते हैं।

दे आड़ो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर।
आगूं आए इलम दिया, जासों पोहोंची बका हजूर।।५५।।

बाकी सब के आगे ब्रह्मांड में तन का परदा लगा है। सब निराकार में ही ढूंढ़-ढूंढ़कर दूर हो गये। अब श्री राजजी महाराज ने खुद आकर जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया जिससे अखण्ड घर (परमधाम) में श्री राजजी के सामने पहुंच सकी।

केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर।।५६।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी की मेहर का मैं कहां तक वर्णन करूं? उनकी मेहर बेशुमार है। यदि आत्मा की नजर से विचार करके देखो तो उनकी मेहर का वर्णन हो ही नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३९८ ।।

निसबत का प्रकरण

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल।
तैं तेरे कानों सुने, हक बका के बोल।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू अपनी आंख खोलकर अपने सम्बन्ध को पहचान। तूने श्री राजजी महाराज के वचनों को श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा स्वयं अपने कानों से सुना है।

कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन।।२।।

तू कौन सी जमीन पर यहां खड़ी है, तेरा घर कहां है, तेरी आत्मा का पति कौन है और तेरी परआतम कहां है?

Nijanand App

और कोई न खोल सके, तीन सूरत का हाल।
फैल हाल दोऊ उमत के, तोको लिखिया नूरजमाल।।५२।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को हुकम की तीन सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) की हकीकत, ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की करनी-रहनी की हकीकत मेरे बिना और कोई नहीं खोल सकेगा, ऐसा श्री राजजी महाराज ने कुरान में लिखा।

सुख देओ दोऊ उमत को, बीच बैठ नासूत।
चिन्हाए इस्क हक साहेबी, बुलाए ल्याओ लाहूत।।५३।।

उन्होंने मुझे यह भी हुकम किया कि मृत्युलोक में बैठकर ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि दोनों जमातों को सुख दो और हक की साहिबी और इश्क की पहचान कराकर उन्हें परमधाम बुला लाओ।

इन विध सुख केते कहूं, झूठी इन जुबान।
मेरी रूह जाने या मोमिन, या दिए जिन रेहेमान।।५४।।

इस तरह से कितने बेशुमार सुख दिए। इस झूठी जबान से कैसे कहूं? उन सुखों को मेरी आत्मा या मोमिन या देने वाले श्री राजजी महाराज जानते हैं।

दे आड़ो ब्रह्मांड सबन को, ढूंढ़ ढूंढ़ रहे सब दूर।
आगूं आए इलम दिया, जासों पोहोंची बका हजूर।।५५।।

बाकी सब के आगे ब्रह्मांड में तन का परदा लगा है। सब निराकार में ही ढूंढ़-ढूंढ़कर दूर हो गये। अब श्री राजजी महाराज ने खुद आकर जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान दिया जिससे अखण्ड घर (परमधाम) में श्री राजजी के सामने पहुंच सकी।

केती कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो रूहें देखो सहूर कर।
महामत कहे मेहेर अलेखे, जो देखो रूह की नजर।।५६।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी की मेहर का मैं कहां तक वर्णन करूं? उनकी मेहर बेशुमार है। यदि आत्मा की नजर से विचार करके देखो तो उनकी मेहर का वर्णन हो ही नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३९८ ।।

निसबत का प्रकरण

देख तूं निसबत अपनी, मेरी रूह तूं आंखां खोल।
तैं तेरे कानों सुने, हक बका के बोल।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू अपनी आंख खोलकर अपने सम्बन्ध को पहचान। तूने श्री राजजी महाराज के वचनों को श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा स्वयं अपने कानों से सुना है।

कौन जिमी में तूं खड़ी, कहां है तेरा वतन।
कौन खसम तेरी रूह का, कौन असल तेरा तन।।२।।

तू कौन सी जमीन पर यहां खड़ी है, तेरा घर कहां है, तेरी आत्मा का पति कौन है और तेरी परआतम कहां है?

Nijanand App

कौन मिलावा तेरा असल, तूं बिछुरी क्यों कर।
तो तोहे याद न आवहीं, जो तैं सुन्या नहीं दिल धर।। ३ ।।

तेरी परआतम कहां मिलकर बैठी है और तू वहां से कैसे बिछुड़ी? तूने इन सब बातों को ध्यान से नहीं सुना, तभी तुझे याद नहीं आ रहे हैं।

सहूर तोको साहेब दिया, इलम दिया हक।
बाहेर माहें अंतर, एक जरा न रही सक।। ४ ।।

तुझे श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि दी और तारतम ज्ञान दिया जिससे भीतर, बाहर और आत्मा के सभी संशय मिट गए।

चौदे तबकों में नहीं, रूह-अल्ला का इलम।
ए दिया एक तोही को, करके मेहेर खसम।। ५ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानीजी का तारतम ज्ञान चौदह लोकों में नहीं है। श्री राजजी महाराज ने मेहर करके यह तुझे ही दिया है।

मूल मिलावा चीन्ह्या, चीन्ह्या बिछुरे वास्ते जिन।
बेसक हुई इन बातों, जो हक बका का बातन।। ६ ।।

अब इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मूल-मिलावे में बैठी अपनी परआतम को पहचान लिया है। जिस वास्ते वहां से बिछुड़ कर आए हैं, वह भी जान लिया। इन सब बातों से सब संशय मिट गए और श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्य मालूम हो गए।

दुनियां में अर्स कहावहीं, ताए सब जानें हक।
ए इलम तिनको नहीं, जो तैं पाया बेसक।। ७ ।।

दुनियां वालों का अर्श बैकुण्ठ कहलाता है। उसे सब अखण्ड (सच्चा) जानते हैं। यह जागृत बुद्धि का ज्ञान दुनियां वालों के पास नहीं है। इसे श्री राजजी महाराज ने तुझे दिया है।

त्रैगुन सिफत कर कर गए, ए जो खावंद जिमी आसमान।
खोज खोज खाली गए, माहें थके ला मकान।। ८ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश जो इस जमीन-आसमान के मालिक हैं, वह सब पारब्रह्म की महिमा गाते हैं, परन्तु उस पारब्रह्म को खोज-खोजकर भी नहीं पा सके। निराकार में ही फंसकर रह गए।

मलकूत साहेब फरिस्ते, हक ढूंढ़या चहूं ओर।
रहे बेचून बेसबीय में, ना पाया बका ठौर।। ९ ।।

बैकुण्ठ के मालिक भगवान विष्णु व अन्य फरिश्तों ने पारब्रह्म को सब जगह ढूंढ़ा, परन्तु शून्य निराकार से आगे जाकर अखण्ड का पता न पा सके।

ए नूर बका किने न पाइया, कर कर गए सिफत।
ए सुध नूर बका को नहीं, जो तैं पाई न्यामत।। १० ।।

इस अखण्ड घर परमधाम को कोई नहीं पा सका। कईयों ने बड़ी महिमा गाई। उस घर की सुध अक्षर ब्रह्म को भी नहीं। जो यह न्यामत तुझे मिल गई है।

Nijanand App

नूर बका इत दायम, आवे हक के दीदार।
तले झरोखे झांकत, आए उलंघ जोए के पार।। ११ ।।

अक्षरधाम भी अखण्ड है जहां से अक्षर ब्रह्म यहां नित्य अक्षरातीत श्री राजजी के दर्शन करने आते हैं और तीसरी भोम में विराजे श्री राजजी महाराज के दर्शन नीचे चांदनी चौक से ही करते हैं। फिर जमुनाजी के पार अपने घर अक्षरधाम में चले जाते हैं।

नूर-जमाल के दीदार को, आवें नूर-जलाल।
नूर-जमाल के अर्स में, इत रूहें रहें कमाल।। १२ ।।

नूर-जमाल (श्री राजजी महाराज) के दर्शन को नूर-जलाल (अक्षर ब्रह्म) आते हैं। नूर-जमाल के घर (परमधाम) में शोभा युक्त रूहें रहती हैं।

इत मिलावा रूहन का, जो कही बारे हजार।
उतरे लैलत-कदर में, एह तीसरा तकरार।। १३ ।।

यहां बारह हजार आत्माएं मिलकर बैठी हैं। यह लैल-तुल-कदर के तीसरे तकरार में यहां इस संसार में आई हैं।

अर्स-अजीम तेरा वतन, खसम नूर-जमाल।
ए इलम पाया तैं बेसक, देख कौल फैल हाल।। १४ ।।

तेरा घर परमधाम है और तेरे धनी पारब्रह्म हैं। तारतम ज्ञान का तुझे बेशक इलम मिला है। अब तुम अपनी कहनी, करनी और रहनी को देखो।

देख मेहेर तूं हक की, खोल दई हकीकत।
देख इलम तूं बेसक, दई अपनी मारफत।। १५ ।।

तुम श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। उन्होंने सारे छिपे भेदों को खोल दिया। तू जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान पर विचार कर जिसने तुझे खुद की पहचान करा दी है।

जिन कारन तेरा आवना, हुआ जिमी इन।
रूह-अल्ला ने जो कही, सो मैं कहूं आगे मोमिन।। १६ ।।

जिस वास्ते तुझे इस संसार में आना पड़ा तथा जो रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने कहा है, वह अब मैं मोमिनों के आगे कहती हूं।

दायम करत रब्द, रूहें हादी हक।
सब कोई केहेते आपना, बड़ा है मेरा इस्क।। १७ ।।

परमधाम में श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों में सदा इश्क रब्द होता था और सब कोई अपने ही इश्क को बड़ा बताते थे।

बीच अर्स खिलवत में, होत दायम विवाद।
इस्क अपना रूहें हक को, फेर फेर देती याद।। १८ ।।

परमधाम की खिलवत में सदा ही यह प्रेम विवाद होता था और आत्माएं अपना इश्क बड़ा होने की याद दिलाती थीं।

Nijanand App

तब कह्या हकें हादी रूहन को, मैं तुमारा आसिक।
ए तेहेकीक तुम जानियो, इस्क मेरा बुजरक।। १९ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानी और रूहों को कहा कि मैं तुम्हारा आशिक हूं और तुम यह निश्चित समझ लो कि इश्क मेरा बड़ा है।

तब हादी रूहन को, ए दिल उपजी सक।
हक का इस्क हमसे बड़ा, ए क्यों होवे मुतलक।। २० ।।

तब श्री श्यामाजी और रूहों को अपने मन में संशय पैदा हुआ कि श्री राजजी का इश्क हमसे बड़ा कैसे हो सकता है?

हकें कह्या रब्द मैं ना करूं, कर देखाऊं तुमको।
इस्क मेरा तब देखो, नेक न्यारे हो मुझ सों।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं विवाद नहीं करता। करके दिखाऊंगा। मेरे इश्क की पहचान तब होगी जब मुझसे थोड़ा अलग हो जाओगी।

न्यारे तो हम होएं नहीं, निमख न छोड़ें कदम।
ए जेती अरवाहें अर्स की, कदम तले सब हम।। २२ ।।

रूहों ने कहा हम अलग तो नहीं होंगे और आपके चरणों से एक पल के लिए भी जुदा नहीं होंगे। हम जितनी भी रूहें हैं, अब आपके चरणों के तले ही बैठी हैं।

जुदे होए हम ना सकें, अव्वल तो तुमसों।
हादी रूहन में जुदागी, कोई होए ना सके हममों।। २३ ।।

अव्वल तो हम आपसे अलग हो ही नहीं सकते और रूहों में और श्यामाजी में किसी तरह भी जुदाई नहीं हो सकती।

खेल देखाऊं मैं जुदागी, कदम तले बैठो मिल।
ऐसा खेल फरामोस का, जानों जुदे हुए सब दिल।। २४ ।।

श्री राजजी कहते हैं मैं जुदाई का खेल दिखाता हूं। तुम सब मिलकर मेरे चरणों के तले बैठो। यह फरामोशी का ऐसा खेल है जिसमें तुम्हें लगेगा कि तुम सब अलग हो गए।

हक कहे मेरी साहेबी, और मेरा इस्क।
हादी रूहों को अर्स में, ए सुध नहीं मुतलक।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि मेरी साहेबी और मेरे इश्क की, श्यामा महारानी और तुम रूहों को परमधाम में सुध नहीं है।

जो ए खबर होती तुमको, जैसी मेरी साहेबी बुजरक।
तो बड़ा कबूं न केहेतियां, अपने मुख इस्क।। २६ ।।

यदि यह खबर तुमको होती कि मेरी साहेबी कितनी महान है, तो तुम अपने मुख से अपने इश्क को बड़ा कभी नहीं कहतीं।

Nijanand App

अर्स न छूटे खिन एक, तो क्यों देखें मेरा इस्क।
तो क्यों पाइए इस्क बेवरा, आप अपने माफक।। २७ ।।

एक क्षण के लिए भी घर से तुम जुदा नहीं हो सकते तो मेरे इश्क को कैसे देखोगे और इश्क का ब्यौरा जैसा तुम कहते हो, कैसे होगा?

अर्स साहेबी जानी नहीं, तो ना देख्या हक इस्क।
तो रूहों हक सों कह्या, इस्क अपना बुजरक।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज की परमधाम की साहेबी को नहीं जाना था, इसलिए उनके इश्क की पहचान नहीं हुई, इसलिए रूहों ने श्री राजजी से अपना इश्क बड़ा कहा।

ना कछू जानी साहेबी, ना जान्या इस्क असल।
तो बुजरक इस्क अपना, रब्द किया सबों मिल।। २९ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज की साहेबी को जाना नहीं था और न उनके इश्क को पहचाना था, इसलिए सभी ने अपना इश्क बड़ा समझकर प्रेम रब्द किया।

दायम बातें इस्क की, करत माहों-माहें प्यार।
खेलते हंसते रमते, करत बारंबार।। ३० ।।

इस तरह से इश्क की बातें आपस में प्यार के साथ हमेशा ही होती थीं। खेलते, हंसते हमेशा एक यही बात होती थी।

एक इस्क दूजी साहेबी, रूहों देखलावना जरूर।
तो हमेसा अर्स में, होता एह मजकूर।। ३१ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने मन में विचार लिया कि एक तो परमधाम का इश्क और दूसरी अपनी साहेबी रूहों को अवश्य दिखाना है, इसलिए परमधाम में सदा ही यही बात होती थी।

ए बात हकें करनी, सुध देने सबन।
इस्क और पातसाही की, खबर न थी रूहन।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज ने सभी को सुध देने के वास्ते यह काम करना था, क्योंकि रूहों को परमधाम के इश्क और हुकूमत (बादशाही) की खबर नहीं थी।

बहुत बातें हैं हक की, बीच अर्स खिलवत।
इन जुबां केती कहूं, हिसाब बिना न्यामत।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज की परमधाम में बहुत सी बातें है। इस जबान से मैं कहां तक कहूं? यह बेहिसाब हैं।

एक साहेबी हक की, और इस्क हक का।
ए दोऊ कोई न चीन्हैं, बीच अर्स बका।। ३४ ।।

एक श्री राजजी महाराज की साहेबी दूसरा उनका इश्क। इन दोनों को अखण्ड परमधाम में कोई नहीं जानता था।

एक जरा कोई वाहेदत का, ना सके जुदा होए।
तोलों न चीन्हें कोई हक की, इस्क साहेबी दोए।। ३५ ।।

परमधाम से कोई अलग नहीं हो सकता और तब तक श्री राजजी महाराज की साहेबी और इश्क की पहचान नहीं हो सकती।

Nijanand App

अर्स से जुदे होए के, ए देखे जो कोए।
इस्क साहेबी हक की, बुजरक देखे सोए।। ३६ ।।

घर (परमधाम) से अलग होकर यदि कोई देखे तो हक की साहेबी और हक का इश्क दोनों ही बड़े हैं।

ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इस्क है तुम।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड़ कदम।। ३७ ।।

रूहों ने कहा, हे श्री राजजी महाराज! अपनी साहेबी दिखाओ। तुम्हारा इश्क कैसा है, जरा दिखाकर हमें राजी करो। हम आपके चरण पकड़े बैठे हैं।

जोलों जुदे होए नहीं, हक बका अर्स सों।
तोलों नजरों न आवहीं, अर्स सुख खिलवत मों।। ३८ ।।

अब श्री राजजी महाराज कहते हैं कि जब तक हमसे और घर परमधाम से तुम अलग नहीं होते, तब तक तुम्हें अर्श में सुख कैसे हैं, का पता नहीं लगेगा।

ए अनहोनी क्यों होवहीं, झूठ न आवे बका माहें।
और रूहें बका की झूठ को, सो कबूं देखें नाहें।। ३९ ।।

परमधाम में झूठ नहीं आ सकता। परमधाम की रूहें झूठ को कभी देख नहीं सकतीं। ऐसी अनहोनी कैसे हो सकती है?

जरा एक अर्स-अजीम का, उड़ावे चौदे तबक।
तो रूह बका क्यों देखहीं, झूठा खेल मुतलक।। ४० ।।

परमधाम का एक कण चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को उड़ा देता है, तो फिर अखण्ड घर की रूहें इस झूठे खेल को कैसे देखेंगी?

अनहोनी ए हकें करी, करके ऐसी फिकर।
परदे में झूठ देखाइया, बीच कायम बका नजर।। ४१ ।।

यह ऐसी अनहोनी बात श्री राजजी महाराज ने विचार करके दी और अखण्ड परमधाम में ही नजर के सामने बिठाकर परदे में संसार का खेल दिखाया।

मेहेर पूरी मेहेबूब की, बड़ीरूह रूहों ऊपर।
इस्क साहेबी अर्स की, खेल देखाया और नजर।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज की पूरी कृपा श्यामा महारानी और रूहों पर है। इन्होंने इन झूठे तनों में हमारी सुरता (आत्मा) बैठाकर परमधाम का इश्क और साहेबी दिखाई।

हकें नेक करी महंमद सों, सब मेयराज में मजकूर।
सो वास्ते रूहों के साहेदी, सो रूह अल्ला करी जहूर।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज ने मेयराज (दर्शन) के समय रसूल साहब से थोड़ी-सी हकीकत बताई थी। यह सब रूहों को गवाही मिल जाए इस वास्ते कहा था। उसी बात को रूह अल्लाह श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने आकर जाहिर किया।

Nijanand App

महामत कहे मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम।।४४।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते यह मेहर की है। धनी के बिना ऐसे खेल में अखण्ड सुख और कौन दे सकता है?

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ४४२ ॥

कलस पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहें।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू कब तक सुन्दरसाथ के वास्ते उलझी रहेगी? जगाने में लगी रहेगी? कुछ अपने लिए भी कर। तेरी आयु श्री राजजी महाराज के गुण और महिमा गाते-गाते बीत रही है फिर भी तुझे अभी तक इश्क नहीं आया।

हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ।।२।।

श्री राजजी महाराज किस तरह से तेरे ऊपर मेहरबानी कर रहे हैं, फिर भी तू उनकी तरफ नहीं देख रही है। यदि तुझे लाड़ले मेहबूब का सच्चा स्वाद मिल जाए, तो तेरी जबान से एक शब्द भी बाहर नहीं निकलेगा।

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए।
इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए।।३।।

श्री राजजी महाराज की बातें जो तू रूहों को बता रही है, इन अखण्ड घर की बातों से कुछ तू भी तो नसीहत ले ले।

ए सब्द कहे तैं नींद में, के सुपने करत स्वाल।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल।।४।।

यह वाणी तू नींद में कह रही है या सपने में प्रश्न कर रही है या जागृत अवस्था में जवाब दे रही है? तू अपना हाल क्यों नहीं देखती?

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात।
तूं कौन गुफ्तगोए किन की, ना विचारत हक जात।।५।।

यह तू कैसी बात और कहां की बात करती है? तू कौन है और तू किसकी बात करती है? तेरी इस बात पर मोमिन (श्री राजजी महाराज के निसबती) विचार क्यों नहीं करते?

ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह।
जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह।।६।।

यह घर की बातें नींद और सपने में नहीं होतीं। यदि तू जागृत अवस्था में बात कर रही है, तो तेरा झूठा तन नहीं रहना चाहिए।

Nijanand App

महामत कहे मेहेर मोमिनों, हकें करी वास्ते तुम।
कौन देवे इत सुख बका, बिना इन खसम।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज ने तुम्हारे वास्ते यह मेहर की है। धनी के बिना ऐसे खेल में अखण्ड सुख और कौन दे सकता है?

॥ प्रकरण ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ ४४२ ॥

कलस पंच रोसनी का

रे रूह करे ना कछू अपनी, के तूं उरझी उमत माहें।
उमर गई गुन सिफत में, तोहे अजूं इस्क आया नाहें।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तू कब तक सुन्दरसाथ के वास्ते उलझी रहेगी? जगाने में लगी रहेगी? कुछ अपने लिए भी कर। तेरी आयु श्री राजजी महाराज के गुण और महिमा गाते-गाते बीत रही है फिर भी तुझे अभी तक इश्क नहीं आया।

हक सिर पर इन विध खड़े, देखत ना हक तरफ।
जो स्वाद लगे मेहेबूब का, तो मुख ना निकसे एक हरफ।। २ ।।

श्री राजजी महाराज किस तरह से तेरे ऊपर मेहरबानी कर रहे हैं, फिर भी तू उनकी तरफ नहीं देख रही है। यदि तुझे लाड़ले मेहबूब का सच्चा स्वाद मिल जाए, तो तेरी जबान से एक शब्द भी बाहर नहीं निकलेगा।

बात करत तूं हक की, जो रूहों सों गुफ्तगोए।
इन बका की खिलवत से, कछू तोको भी नसीहत होए।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की बातें जो तू रूहों को बता रही है, इन अखण्ड घर की बातों से कुछ तू भी तो नसीहत ले ले।

ए सब्द कहे तैं नींद में, के सुपने करत स्वाल।
के जवाब तेरे जागते, कछू देखे ना अपना हाल।। ४ ।।

यह वाणी तू नींद में कह रही है या सपने में प्रश्न कर रही है या जागृत अवस्था में जवाब दे रही है? तू अपना हाल क्यों नहीं देखती?

कैसी बात करत है, किन ठौर की बात।
तूं कौन गुफ्तगोए किन की, ना विचारत हक जात।। ५ ।।

यह तू कैसी बात और कहां की बात करती है? तू कौन है और तू किसकी बात करती है? तेरी इस बात पर मोमिन (श्री राजजी महाराज के निसबती) विचार क्यों नहीं करते?

ए बात ना होए कबूं नींद में, और सुपने भी ना एह।
जो तूं बात करे जागते, तो तेरी क्यों रहे झूठी देह।। ६ ।।

यह घर की बातें नींद और सपने में नहीं होतीं। यदि तू जागृत अवस्था में बात कर रही है, तो तेरा झूठा तन नहीं रहना चाहिए।

Nijanand App

ए बात ना नींद सुपन की, जो तूं बात करे जाग्रत।
तो कौल फैल ना हाल कोई, रहे ना देह गत मत।।७।।

यह बात नींद और सपने की नहीं है। यदि यह बातें जागृत अवस्था की हैं तो तेरी कहनी, करनी और रहनी, तन और बुद्धि कुछ नहीं रहना चाहिए।

जो ए बात करे जागते, तो तोहे नींद आवे क्यों फेर।
नैनों पल क्यों लेवहीं, क्यों बोले और बेर।।८।।

यदि यह बातें तू जागृत अवस्था में करती है तो तुझे दुबारा नींद क्यों आती है। नयनों के ऊपर पलक क्यों गिराती है? दूसरी बार मुख से शब्द कैसे निकलते हैं, अर्थात् तू मर क्यों नहीं जाती?

के तूं बुध रहित है, के तूं बोलत बेसहूर।
बेसहूर क्यों कहे सके, ए हक का गुझ जहूर।।९।।

क्या तेरे में बुद्धि नहीं है या तू बेहोशी में बोल रही है? अगर तुझे बेहोशी में मान लिया जाए तो पारब्रह्म के दिल की छिपी बातें कैसे करती है?

अब तेहेकीक एही होत है, तोहे बोलावत हुकम।
हुकमें वजूद रेहेत है, और हुकमें दिया इलम।।१०।।

अब यह निश्चित हो गया कि तुझे हुकम बुलवा रहा है। हुकम का कोई तन नहीं है। हुकम ने ही तुम्हें तारतम ज्ञान दिया।

आए इलम हक बका के, तब देह रहे क्यों कर।
बेसक हुए हक अर्स सों, सो दम रहे न हक बिगर।।११।।

जब श्री राजजी महाराज का अखण्ड तारतम ज्ञान आ गया, तो यह झूठा तन कैसे खड़ा है? यदि श्री राजजी महाराज के स्वरूप से और परमधाम से संशय रहित हो गये हो तो तुम्हें श्री राजजी महाराज से एक क्षण भी अलग नहीं रहना चाहिए।

अर्स हक की बेसकी, पाई जरे जरे जेती।
ज्यों जाग के केहे हकीकत, और देह बोलत सुपने की।।१२।।

तारतम ज्ञान से तुम्हें परमधाम की तथा श्री राजजी महाराज की हकीकत के जर्रे-जर्रे की बेशक जानकारी हो गई है। जैसे कोई जागकर हकीकत बता रहा हो, उसी तरह से तेरे यह सपने का तन बोल रहा है।

बड़ा होत है अचरज, बात जाग्रत माहें सुपना।
जब कछू होवे जाग्रत, तब तो ए आगे ही से फना।।१३।।

मुझे बड़ी हैरानी होती है जब जागृत की बातें सपने में करते हैं। जागृत हो जाने पर तो सपना पहले ही नष्ट हो जाता है।

जो विचार विचार विचारिए, तो अनहोनी हक करत।
इत बल किसी का नहीं, दिल आवे सो देखावत।।१४।।

यदि ध्यान से विचार करके देखें तो यह अनहोनी बात श्री राजजी महाराज कर रहे हैं। जहां किसी की ताकत नहीं चलती, पर उनके दिल में जैसा आता है, वैसा दिखाते हैं।

Nijanand App

अर्स की रूहों को सुपना, देखो कैसे ए आया।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, अपने दिल का चाह्या।। १५ ।।

परमधाम की रूहो को देखो यह सपना कैसे आ गया? क्योंकि वह तो परमधाम में सदा जागृत अवस्था में हैं। यह भी श्री राजजी ने जैसा अच्छा जाना वैसा अपने मन माफिक किया।

देह रखी सुपन की, और सक ना जागे में।
ए भी हकें जान्या त्यों किया, विचार देखो दिल में।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज ने तारतम ज्ञान से मुझे जागृत भी कर दिया है और सपने के तन को कायम भी कर रखा है। यह दिल से विचार करके देखो तो श्री राजजी महाराज ने जैसा मन में चाहा, वैसा किया।

आप अर्स देखाइया, ज्यों देखिए नींद उड़ाए।
जरा सक दिल ना रही, यों अर्स दिया बताए।। १७ ।।

उन्होंने अपने आप की पहचान कराई और घर को दिखाया, जैसे नींद समाप्त होने पर देखते हैं। अब मेरे दिल में जरा भी संशय नहीं रह गया। इस तरह से मुझे घर परमधाम दिखा दिया।

फेर देखो सुपन को, तो अजूं रह्या है लाग।
फरामोसी नींद ना गई, जानों किन ने देख्या जाग।। १८ ।।

जब स्वप्न की तरफ देखती हूं तो यह ब्रह्माण्ड ज्यों का त्यों खड़ा है। परमधाम में फरामोशी की नींद भी नहीं हटी तो फिर यहां जागृत होकर परमधाम को देखा किसने?

जो देखूं अर्स जागते, तो इत नाहीं जरा सक।
फेर देखूं तरफ सुपन की, तो यों ही खड़ा मुतलक।। १९ ।।

जब परमधाम की तरफ देखती हूं तो वह भी जैसा का तैसा अखण्ड है? फिर सपने की तरफ देखती हूं तो यह भी बेशक खड़ा है। यही हैरानी है।

ए बातें नूरजमाल की, इनमें कैसा तअजुब।
जनम लाख देखावें पल में, जानों ढ़ांप के खोली अब।। २० ।।

यह बातें समर्थ पूर्ण ब्रह्म श्री राजजी महाराज की हैं। इसमें हैरानी की कोई बात ही नहीं। वह एक पल में लाखों जन्म दिखा सकते हैं। वहां ऐसा लगेगा मानो पलक अभी खोली है।

एक खस-खस के दाने मिने, देखाए चौदे तबक।
तो कौन बात का अचरज, ऐसे देखावें हक।। २१ ।।

एक खसखस के दानें में यह चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड दिखा दिया (अर्थात् बहुत ही थोड़े में)। यह कोई हैरानी की बात नहीं है, क्योंकि श्री राजजी महाराज तो ऐसा दिखाया ही करते हैं।

ऐसी बातें हक की, इत कोई सक ल्याओ जिन।
देख दिन में ल्यावें रात को, और रात में ल्यावें दिन।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की लीलाओं में किसी प्रकार का संशय मत लाओ। वह दिन में रात और रात में दिन ला सकते हैं, अर्थात् परमधाम में बैठे-बैठे माया दिखा सकते हैं और खेल में बैठे-बैठे परमधाम दिखा सकते हैं।

Nijanand App

ऐसे खेल कई हक के, बैठे देखावें अर्स माहें।
रूह बकाएं लई देह नासूती, जो मुतलक कछुए नाहें।। २३ ।।

परमधाम में बैठे-बैठे ऐसे कई खेल श्री राजजी महाराज दिखाते हैं। फिर परमधाम की रूहों ने मृत्युलोक में माया के तन कैसे धारण किए, जो बेशक कुछ भी नहीं है।

तन ऐसा धर नासूत में, करी हक सों निसबत।
कजा चौदे तबक की, इन तन पे करावत।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस झूठे संसार में ब्रह्मसृष्टियों को झूठे तन धारण करवाए और फिर इन झूठे तनों से अपना सम्बन्ध बनाया। फिर इन्हें झूठे तनों से सारे संसार का न्याय कराकर बहिश्तें दिलवाते हैं।

ऐसी अचरज बातें हक की, क्यों कहूं झूठी जुबान।
कहूं इन तन का खसम, जो वाहेदत में सुभान।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज की ऐसी अद्‌भुत लीलाओं का ऐसी झूठी जबान से कैसे वर्णन करूं? मैं इस झूठे तन का धनी भी श्री राजजी महाराज को कह देती हूं।

दोस्त कहूं हक बका को, धर ऐसा झूठा तन।
निसबत तुमसों तो कहूं, जो देख्या बका वतन।। २६ ।।

ऐसा झूठा तन धारण कर मैं अखण्ड श्री राजजी महाराज को अपना दोस्त कहती हूं। हे धनी! मैं आपकी अंगना हूं। ऐसा मैं तब कहती हूं, क्योंकि मैंने यहां बैठे-बैठे अखण्ड घर परमधाम को देख लिया।

एह विध मैं केती कहूं, कौन अचरज इन।
कई बातें ऐसी हक की, जो विचार देखो रूह तन।। २७ ।।

यह हकीकत मैं कहां तक कहूं? इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। यदि रूह के तन से विचार कर देखो तो श्री राजजी महाराज की ऐसी लीलाएं होती ही रहती हैं।

अब केहेती हों खसम को, तुम से कैसी चतुराए।
ए भी जानों त्यों करो, ऐसी बनी खेल में आए।। २८ ।।

अब श्री राजजी महाराज से कहती हूं, हे धनी! आपसे कैसी चालाकी। यह सब भी जैसा आप चाहें वैसा करें। खेल में हमारी तो ऐसी हालत हो गई है।

जेती बातें मैं कही, तिन सब में चतुराए।
ए चतुराई भी तुम दई, ना तो एक हरफ न काढ़्यो जाए।। २९ ।।

हे धनी! जितनी बातें मैंने कही हैं, इन सब में मेरी चतुराई नजर आती है। यह चतुराई भी आपकी कृपा से आई है। नहीं तो मेरे मुंह से एक शब्द भी ऐसा न निकलता।

एह बात रही हुकम पर, करें हक सांची सोए।
या राजी या दलगीर, ए हाथ खसम के दोए।। ३० ।।

अब आखिर में यह सारा मुद्दा तो श्री राजजी के हुकम पर ही आ गया। जो श्री राजजी महाराज करते हैं, वही सच है। हमें प्रसन्न रखना या दुःखी रखना यह सब उस प्रीतम के हाथ है।

Nijanand App

उमर तो सब चल गई, आया उठने का दिन।
या तो उठाओ हंसते, ज्यों जानो त्यों करो रूहन।।३१।।

संसार में हमारा सब समय समाप्त हो गया है। अब तो परमधाम में उठने का समय आ गया है। अब या तो रूहों को हंसते-हंसते उठाओ या फिर जैसा आप चाहो वैसा करो।

नींद आई हुकम सों, हुकमें हुआ सुपन।
हुकम से जागत हैं, एक जरा न हुकम बिन।।३२।।

हे धनी! आपके हुकम से ही फरामोशी की नींद आई और हुकम से ही स्वप्न आया। अब हुकम से ही जागते हैं। आपके हुकम के बिना और कुछ भी नहीं है।

हकें इलम ऐसा दिया, जो चौदे तबकों नाहें।
और नाहीं नूर मकान में, सो दिया मोहे सुपने माहें।।३३।।

हे राजजी महाराज! आपने जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ऐसी दी जो यहां चौदह तबकों में नहीं है और न ही अक्षर धाम में ही है जो मुझे सपने के तन में दी।

ए इलम नूर जमाल बिना, दूजा कौन बकसत।
मुझ बिना किने ना पाइया, मेरी बेसक रूह जानत।।३४।।

यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी श्री राजजी महाराज के बिना दूसरा और कौन दे सकता है? यह मेरी आत्मा अच्छी तरह जानती है कि मेरे बिना यह जागृत बुद्धि का ज्ञान किसी को नहीं मिला।

या जानें एह मोमिन, जिन इलम पाया बेसक।
तिनों नीके कर चीन्ह्या, जिन बूझ लिया इस्क।।३५।।

या यह ब्रह्मसृष्टियां जानती हैं जिनको यह बेशक ज्ञान मिला है या जिन्होंने श्री राजजी महाराज के इश्क को समझ लिया है उन्होंने ही धनी को पूर्ण रूप से पहचाना है।

मोमिन तिन को जानियो, नूर-जमाल सों निसबत।
मेरी बेसक देसी साहेदी, जिनों पाई हक न्यामत।।३६।।

मोमिन उनको समझना जिनका सम्बन्ध श्री राजजी से है। वही मोमिन हैं जिन्हें श्री राजजी महाराज की यह न्यामत (तारतम ज्ञान) मिल गई है। वही मेरी गवाही देंगे।

अब इन ऊपर क्या बोलना, आगूं मेहेबूब तुम।
जिन विध जानो त्यों करो, दोऊ तन तले कदम।।३७।।

हे धनी! इसके ऊपर अब आपके सामने क्या कहूं? अब आप जैसा जानो वैसा करो। हमारे दोनों तन (आतम और परआतम) आपके चरणों के तले हैं।

जो हक के दिल में आइया, सो सब देख्या नीके कर।
जो देखाया इलमें, या देखाया नजर।।३८।।

श्री राजजी महाराज के दिल में जो बात आई वह हमने अच्छी तरह से देखी। चाहे उन्होंने इलम से दिखाया या यहां नजर से दिखाया।

Nijanand App

और जो हक के दिल में, बाकी होसी अब।
जो तुम देखाओगे, सो रूहें देखें हम सब।। ३९ ।।

और हे धनी! आपके दिल में और जो कुछ बाकी दिखाने को है उनमें जो तुम दिखाओगे वह हम यहां देखेंगे।

केहेना केहेलावना न रह्या, ऐसा तुम दिया इलम।
तुम बिना जरा है नहीं, ज्यों जानो त्यों करो खसम।। ४० ।।

हे श्री राजजी महाराज अब कुछ भी कहने कहलाने की बात नहीं रह गई। ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान आपने दे दिया है। अब जैसा चाहो वैसा करो। आपके बिना कुछ है ही नहीं।

बोलिए सो सब बंधन, ए भी बोलावत तुम।
ए सहूर भी तुम देत हो, ज्यों जानो त्यों करो खसम।। ४१ ।।

यदि कुछ बोलती हूं तो बन्धन में पड़ती हूं। कहलवाते भी आप हो। यह सुध भी आप देते हो, इसलिए जैसा जानो वैसा करो।

खसम खसम तो केहेती हों, जानों खुदी रहे ना मुझ माहें।
गुनाह अपनी अंगना पर, बका में आवत नाहें।। ४२ ।।

'खसम खसम' इसलिए कहती हूं कि मेरे अन्दर अहं भाव न रह जाए, क्योंकि अखण्ड परमधाम में आपकी अंगना पर कोई दोष नहीं लग सकता।

ए भी इलम हकें दिया, मैं कहा कहूं खसम।
ठौर ना कोई बोलन की, बैठी हों तले कदम।। ४३ ।।

हे धनी! यह जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भी आपने ही दिया है, इसलिए मैं अब क्या कहूं? मेरे बोलने का तो ठिकाना अब रहा ही नहीं। मैं तो आपके चरणों तले बैठी हूं।

खसम खसम तो केहेती हों, जो तुम देखाई निसबत।
भार भी तुम देओगे, तुम ही देओगे लज्जत।। ४४ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आपने पहचान करा दी है कि मैं आपकी अंगना हूं, इसलिए 'खसम खसम' कहती हूं। अब इस अंगना को मान भी आप ही देंगे। जिम्मेदारी भी आप ही देंगे और खेल की लज्जत भी आप ही देंगे।

दोऊ तन तले कदम के, आतम परआतम।
इनमें सक कछू ना रही, यों कहे हक इलम।। ४५ ।।

हे श्री राजजी! हमारे दोनों तन (आतम का संसार में, परआतम का परमधाम में) आपके चरणों के तले हैं। इसमें अब कोई संशय नहीं। ऐसी समझ आपकी जागृत बुद्धि के ज्ञान से आ गई है।

सिखाओ चलाओ बोलाओ, सो सब हाथ हुकम।
सो इलमें बेसक करी, और कहा कहूं खसम।। ४६ ।।

अब आप हमें जो भी सिखाएं, जहां भी बुलाएं, यह सब आपके हुकम के हाथ में है। ऐसी बेशकी आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान से हो गई है। अब हे धनी! इसके ऊपर क्या कहूं?

Nijanand App

अन्तर माहें बाहेर की, सब जानत हो तुम।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम।।४७।।

हमारे अन्दर बाहर की सब हकीकत आप जानते हैं आपके ज्ञान ने हमें निःसन्देह बना दिया है। अब मैं आगे क्या कहूं?

साथ आए मेला मिलसी, सो सब हाथ हुकम।
ए सक इलमें ना रखी, अब कहा कहूं खसम।।४८।।

सुन्दरसाथ आ जाएंगे तो मेला हो जाएगा। यह सब आपके हुकम के हाथ में है। यह सब संशय जागृत बुद्धि के ज्ञान ने मिटा दिए हैं। अब धनी! और क्या कहूं?

खेल कर उतारे खेल में, रूहें पोहोंची इन इलम।
इन बातों सक ना रही, कहा कहूं तुमें खसम।।४९।।

आपने खेल बनाया है और आपने ही हमें खेल में उतारा है। आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान से हम सब जान गए। अब इन सब बातों में कोई भी संशय नहीं रह गया। अब आपसे और क्या कहूं?

हुकमें पूरी सब उमेद, और बाकी हाथ हुकम।
ए इलमें बेसक करी, अब कहा कहूं खसम।।५०।।

आपके हुकम ने हमारी सब चाहना पूरी कर दी है। जो कुछ बाकी है तो वह आपके हुकम के हाथ है। यह आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान ने निश्चित कर दिया है। अब और क्या कहूं?

दिन गए सो तुम जानत, बाकी भी जानत तुम।
जिन विध राखो त्यों रहूं, कहा कहूं खसम।।५१।।

जो दिन बीत गए हैं वह सब आप जानते हैं। बाकी कैसे बीतेंगे, वह भी आप जानते हो। अब जिस तरह से आप रखोगे वैसे रहूंगी। अब इसके आगे और क्या कहूं?

ठौर और कोई ना रही, सो बेसक करी इलम।
ए बेवरा तुम कहावत, सो केहेती हों खसम।।५२।।

आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान ने ऐसा दृढ़ कर दिया है कि अब बोलने का कहीं ठिकाना नहीं रहा। अब जो तुम कहलवाते हो वही मैं कहती हूं।

चौदे तबक सिर मलकूत, ए तो कुरसी फरिस्तों अर्स।
इन सिर ला-मकान है, आगूं सब्द न चले निकस।।५३।।

चौदह लोकों के ऊपर बैकुण्ठ है जो देवी-देवताओं का धाम है। उसके ऊपर निराकार है। इसके ऊपर वर्णन करने के लिए यहां के शब्द ही नहीं चल पाते।

फना तले ला मकान लग, आगूं नूर-मकान बका।
उतथें उतरे सो चढ़े, और चढ़ ना सके इत का।।५४।।

निराकार के नीचे सारा जगत नाशवान है। आगे अक्षरधाम व परमधाम अखण्ड हैं। जो वहां से खेल में उतरे हैं, वही वापस वहां चढ़कर जाएंगे। इस माया के संसार का जीव वहां नहीं जा सकता।

Nijanand App

देख्या बेचून बेचगून को, और बेसबी बेनिमून।
निराकार देख्या ला निरंजन, ए बेसक पड़ी सब सुंन।।५५ ।।

कुरान में जिसे बेचून, बेचगून, बेसबी, बेनिमून कहा है, उसे हिन्दू शास्त्रों में शून्य, निर्गुण, निराकार और निरंजन कहा है। उन सबको हमने देख लिया है।

अव्वल इलमें देखाइया, आखिर बेसक इलम।
चौदे तबक देखे नूर लग, ठौर नहीं बिना तेरे तले कदम।।५६ ।।

आपके जागृत बुद्धि के ज्ञान ने इन सब का आदि और अन्त बता दिया है। चौदह लोक देखे तथा अक्षरधाम तक नजर दौड़ाई, किन्तु आपके चरणों के बिना कहीं ठिकाना नहीं है।

और नजीक न कोई फरिस्ता, कोई नाहीं इन्सान और।
हादी रूहें तेरे कदम तले, कोई और न पोहोंचे इन ठौर।।५७ ।।

आपके चरणों तक न तो कोई देवी-देवता, न कोई इन्सान पहुंच पाता है। श्यामा महारानी और रूहें ही तुम्हारे चरणों के तले हैं।

गिरो नजीकी फरिस्ते, इनका नूर-मकान।
ए मलकूत में रेहे ना सकें, चढ़ ना सकें लाहूत आसमान।।५८ ।।

ब्रह्मसृष्टि के नजदीक रहने वाली ईश्वरीसृष्टि (फरिश्ते) हैं जिनका घर अक्षरधाम है। यह न बैकुण्ठ (क्षर ब्रह्माण्ड) में रह सकते हैं और न चौथे आसमान (परमधाम) जा सकते हैं।

नूर-मकान का खावंद, जिनके होत एक पल।
कोट ब्रह्मांड ऐसे होए के, वाही खिन में जात हैं चल।।५९ ।।

अक्षरधाम के मालिक अक्षर ब्रह्म हैं। इनके एक पल में ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

इन नूर-मकान का खावंद, जाको नामै नूर-जलाल।
आवत दायम दीदार को, जित अर्स नूर-जमाल।।६० ।।

इस अक्षरधाम के मालिक को कुरान में नूर-जलाल कहते हैं। वह परमधाम में नूर-जमाल श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए रोज आते-जाते हैं।

दई साख रसूल अल्लाह ने, ना पोहोंचे जबराईल इत।
कहे पर जलें तजल्ली से, ताथें जोए ना उलंघत।।६१ ।।

रसूल साहब ने गवाही दी कि जबराईल भी परमधाम नहीं जा सकता। वह कहता है कि पारब्रह्म के तेज से उसके पंख जलते हैं, अर्थात् तेज सहन नहीं कर पाता, इसलिए वह जमुनाजी को पार नहीं कर पाता।

इन अर्स नूर जमाल के, हादी रूहें इन दरगाह माहें।
रूहें इन कदम तले, और ठौर ना कोई क्याहें।।६२ ।।

ऐसे श्री राजजी महाराज के इस परमधाम में श्यामा महारानी और रूहें चरणों के तले रहती हैं और कोई ठिकाना उनके लिए नहीं है।

Nijanand App

नूर-जलाल दीदार बाहेर से, करके पीछे फिरत।
नूर-जमाल के कदमों, बड़ीरूह रूहें बसत।। ६३ ।।

अक्षर ब्रह्म भी बाहर (चांदनी चौक) से दर्शन करके वापस लौट जाते हैं। श्री राजजी के चरणों में श्यामा महारानी और रूहें बैठी हैं।

ए ना खबर नूर जलाल को, सुख नूर जमाल कदम।
इन बातों सब बेसक करी, मोहे रूह-अल्ला इलम।। ६४ ।।

अक्षर ब्रह्म को यह ज्ञान नहीं है कि श्री राजजी महाराज के चरणों में कितना आनन्द है। श्री श्यामा महारानी के तारतम ज्ञान ने इन सब बातों की पहचान करा दी।

हादी रूहों को खेल देखाइया, देख्या बैठे तले कदम।
और न कोई केहे सके, बिना निसबत खसम।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने चरणों के तले बिठाकर श्यामा महारानी और रूहों को खेल दिखाया। धनी की इस बात को उनकी अंगना के बिना कोई और नहीं कह सकता।

मोहे इन इलमें बेसक करी, सक न जरा इलम।
दई बेसकी सबन को, ठौर नहीं बिना तेरे कदम।। ६६ ।।

हे धनी! आपकी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने हम सबके सब संशय मिटा दिए और दृढ़ कर दिया कि हम ब्रह्मसृष्टियों का ठिकाना आपके चरणों के बिना कहीं नहीं है और आपका इलम ही बेशक है।

रूहें बारे हजार नूर बड़ीरूह के, बड़ी रूह नूर खसम।
ए ठौर बेसक देखिया, बिना नहीं तले तेरे कदम।। ६७ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानीजी के अंग हम बारह हजार रूहें हैं और श्यामा महारानी आपके अंग हैं। हमारा ठिकाना आपके चरणों के तले ही है। अन्य कोई ठिकाना नहीं है।

फेर फेर दई ए बेसकी, याही वास्ते भेज्या इलम।
जाने जिन भूलें रूहें खेल में, याद देने हक कदम।। ६८ ।।

आपने अपने चरणों की याद दिलाने के वास्ते ही जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भेजा और दृढ़ता दी जिससे रूहें खेल में जाकर भूल न जाएं।

ए हादी रूहें इन कदम तले, जिनको कहे मोमिन।
फुरमान इसारतें रमूजें, आई कुन्जी ऊपर इन।। ६९ ।।

श्री श्यामाजी की रूहें आपके चरणों के तले बैठी हैं। इनको मोमिन कहते हैं। कुरान में जो इशारतें और रमूजे हैं इन्हीं के वास्ते आई हैं। इन्हीं के लिए जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम कुंजी आई है।

कुंजी हाथ रूह-अल्ला, और रसूल हाथ फुरमान।
भेजे इमाम पे खेल में, सो हादी रूहों लिए निसान।। ७० ।।

श्यामा महारानीजी के हाथ से तारतम ज्ञान भेजा और रसूल साहब के हाथ कुरान भेजा। इमाम मेंहेदी श्री प्राणनाथजी को दोनों सौंप दिए। अब श्री प्राणनाथजी ने रूहों को उन निशानियों को समझाया जो कुरान में लिखी हैं।

Nijanand App

नासूत में बैठाए के, भेज्या बेसक इलम।
एक जरे जेती सक ना रही, बैठी बेसक तले कदम।।७१ ।।

इस झूठे संसार मृत्युलोक में बिठाकर जागृत बुद्धि की तारतम वाणी भेज दी। जिससे इस बात का जरा भी संशय नहीं रहा कि हम श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठे हैं।

ए सक हमको तो मिटी, जो हम बैठे तले कदम।
फरामोसी हम को मिटावने, भेज्या तुम अपना इलम।।७२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि हम चरणों तले बैठे हैं, इसलिए हमारे संशय मिटे हैं। हमारी बेहोशी को मिटाने के वास्ते ही आपने जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान को भेजा है।

आया फुरमान खेल देखावने, और आया हक इलम।
ए खेल नीके तब देखिया, जब देख्या बैठे तले कदम।।७३ ।।

खेल को दिखाने के वास्ते श्री राजजी की जागृत बुद्धि का ज्ञान और कुरान आया। जब हमने समझ लिया कि हम आपके चरणों के तले बैठे हैं, तभी हमने खेल को अच्छी तरह से देखा।

तुम मोहे ऐसा देखाइया, एक वाहेदत में हैं हम।
दूजा कछुए है नहीं, बिना तुम तले कदम।।७४ ।।

आपने मुझे ऐसी जानकारी दे दी कि हम और आप परमधाम में एक ही तन हैं। आपके चरणों के बिना और कुछ है ही नहीं।

ए भी इलम तुम दिया, जासों तुम हुए मुकरर।
दिल सो रूहों विचारिया, कछू है ना वाहेदत बिगर।।७५ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से यह सुध आ गई कि आप सदा अखंड हैं। हम रूहों ने भी दिल से विचार किया कि आपके चरणों के सिवाय और कहीं कुछ नहीं है।

ए तेहेकीक तुम कर दिया, तुम बिना कछुए नाहें।
ए भी तुम कहावत, इत मैं न आवत मुझ माहें।।७६ ।।

यह भी आपने निश्चित कर दिया कि आपके बिना कुछ नहीं है। यह भी आप ही कहलवा रहे हैं इसमें मेरा 'मैं' (अहं) कुछ नहीं है।

ए जिन बिध हक बोलावत, तिन बिध रूह बोलत।
हम बैठे तले कदम के, ए हम पे हक कहावत।।७७ ।।

जिस तरह से हे धनी! आप बुलवाते हैं उसी तरह से मेरी आत्मा बोलती है। आपके चरणों तले बैठे हैं। यह भी आप ही कहलवा रहे हैं।

अनजानत को इलमें, बेसक दिए देखाए।
कदमों नूरजमाल के, हम सब रूहें लई बैठाए।।७८ ।।

हम तो अनजान थे। आपके जागृत बुद्धि के इलम ने ही सब कुछ दिखाकर बेशक कर दिया। धनी! आपके चरणों के तले हमको बिठा दिया।

Nijanand App

तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत।
बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत।।७९ ।।

अब आपके बिठाने से ही मैं बैठती हूं। मेरी ताकत कुछ नहीं है। आपके चरणों तले बैठी हूं। यह भी आप ही कहलवाते हो।

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्रीतम! अब मेरे लिए और कोई प्रयत्न (उपाय) नहीं है। आपके चरणों के तले निडरता के साथ बैठ जाने के सिवाय और कोई ठिकाना नहीं है।

॥ प्रकरण ॥ १० ॥ चौपाई ॥ ५२२ ॥

हक रूहन की खिलवत

खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल।।१ ।।

श्री राजजी महाराज की और रूहों की मूल बैठक में ही रूहों का सच्चा प्रेम है। यह अखण्ड घर की बातूनी (छिपी) बातें हैं। यह संसार के मिट जाने वाले जीवों की अकल में नहीं आ सकतीं।

रूहें बड़ी रूह सों मिल के, बहस किया हकसों।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हम मों।।२ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर श्री राजजी से बहस की कि हम आपके आशिक हैं। हमारे अन्दर पूर्ण इश्क है।

बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।।३ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं, हे रूहो! तुम सत्य कह रही हो, परन्तु इश्क तो मेरा काम ही है। पहले श्री राजजी महाराज से इश्क लेना और फिर रूहों को इश्क देना। इसी में मुझे सुख चैन मिलता है।

फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।।४ ।।

फिर श्री राजजी महाराज ने रूहों को उत्तर दिया कि भले तुम मुझे इश्क करती हो, पर आशिक तुम्हारा मैं हूं।

हक आसिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बंदों का आसिक हक।।५ ।।

श्री राजजी महाराज बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों के आशिक हैं। इस बात को सीधा कैसे कह दिया जाए कि श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के आशिक हैं?

रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ीरूह के।
और बड़ीरूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।।६ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज और श्यामाजी दोनों के आशिक होना चाहिए। श्यामाजी को भी श्री राजजी के आशिक होना चाहिए। इश्क का सीधा फैसला तो यही है।

Nijanand App

तुम बैठाए बैठत हों, मुझ में नहीं ताकत।
बैठी कदम तले हक, ए भी तुम कहावत।।७९ ।।

अब आपके बिठाने से ही मैं बैठती हूं। मेरी ताकत कुछ नहीं है। आपके चरणों तले बैठी हूं। यह भी आप ही कहलवाते हो।

महामत कहे मेहेबूब जी, कोई रह्या न और उदम।
बेसक और काहूं नहीं, बिना तेरे तले कदम।।८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्रीतम! अब मेरे लिए और कोई प्रयत्न (उपाय) नहीं है। आपके चरणों के तले निडरता के साथ बैठ जाने के सिवाय और कोई ठिकाना नहीं है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५२२ ।।

हक रूहन की खिलवत

खिलवत हक रूहन की, जो इस्क रूहों असल।
ए बातून बका अर्स की, बीच न आवे फना अकल।। १ ।।

श्री राजजी महाराज की और रूहों की मूल बैठक में ही रूहों का सच्चा प्रेम है। यह अखण्ड घर की बातूनी (छिपी) बातें हैं। यह संसार के मिट जाने वाले जीवों की अकल में नहीं आ सकतीं।

रूहें बड़ी रूह सों मिल के, बहस किया हकसों।
हम तुमारे आसिक, इस्क है हम मों।। २ ।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर श्री राजजी से बहस की कि हम आपके आशिक हैं। हमारे अन्दर पूर्ण इश्क है।

बड़ी रूह कहे तुम सांची सबे, पर इस्क मेरा काम।
अव्वल हक और रूहन सों, इन इस्कै में मेरा आराम।। ३ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं, हे रूहो। तुम सत्य कह रही हो, परन्तु इश्क तो मेरा काम ही है। पहले श्री राजजी महाराज से इश्क लेना और फिर रूहों को इश्क देना। इसी में मुझे सुख चैन मिलता है।

फेर जवाब रूहन को, इन विध दिया हक।
इस्क तुमारा भले है, पर मैं तुमारा आसिक।। ४ ।।

फिर श्री राजजी महाराज ने रूहों को उत्तर दिया कि भले तुम मुझे इश्क करती हो, पर आशिक तुम्हारा मैं हूं।

हक आसिक बड़ीरूह का, और रूहों का आसिक।
ए क्यों कहिए सीधा इस्क, बंदों का आसिक हक।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों के आशिक हैं। इस बात को सीधा कैसे कह दिया जाए कि श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के आशिक हैं?

रूहें चाहिए आसिक हक के, और आसिक बड़ीरूह के।
और बड़ीरूह भी आसिक हक की, सीधा इस्क बेवरा ए।। ६ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज और श्यामाजी दोनों के आशिक होना चाहिए। श्यामाजी को भी श्री राजजी के आशिक होना चाहिए। इश्क का सीधा फैसला तो यही है।

Nijanand App

तुम सब रूहें मेरे तन हो, तुम सों इस्क जो मेरे दिल।
ए क्यों कर पाओ बका मिने, जो सहूर करो सब मिल।।७।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम सब रूहें मेरे तन हो और तुमको मैं दिल से कितना इश्क करता हूं। इसका ब्यौरा तुम सब मिलकर भी परमधाम में विचारो तो भी तुम्हारी समझ में नहीं आ सकता।

तब हक के दिल में उपज्या, मैं देखाऊं अपना इस्क।
और देखाऊं साहेबी, रूहें जानत नहीं मुतलक।।८।।

तब श्री राजजी महाराज के दिल में बात आई कि मैं अपना इश्क और साहेबी रूहों को दिखाऊं, क्योंकि रूहें इस बारे में नहीं जानतीं।

तब हक के अंग का नूर जो, जो है नूरजलाल।
तब तिनके दिल पैदा हुआ, देखों इस्क नूरजमाल।।९।।

तब श्री राजजी महाराज के नूरी सत अंग जो अक्षर ब्रह्म हैं, उनके दिल में नूरजमाल श्री राजजी महाराज की इश्क लीला देखने की चाह पैदा हुई।

कैसा इस्क बड़ीरूह सों, कैसा इस्क साथ रूहन।
बड़ीरूह का इस्क हक सों, इस्क हक सों कैसा है सबन।।१०।।

बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहों के साथ श्री राजजी महाराज कैसा इश्क करते हैं और बड़ी रूह श्यामा महारानी और रूहें श्री राजजी से कैसा इश्क करती हैं, यह जानने की इच्छा अक्षर ब्रह्म को हुई।

एह रब्द हमेसा रहे, बड़ीरूह रूहें और हक।
अब घट बढ़ क्यों कर जानिए, वाहेदत पूरा इस्क।।११।।

श्यामा महारानी, रूहें और श्री राजजी महाराज के बीच यह वार्तालाप हमेशा ही होता रहता था। परमधाम तो पूरा अद्वैत और पूर्ण इश्क से भरा है, तो वहां कम और ज्यादा कैसे जाना जाए?

असल जुदागी अर्स में, सो तो कबूं न होए।
वाहेदत इस्क घट बढ़, क्यों कर होवे दोए।।१२।।

परमधाम में तो जुदाई किसी तरह से हो नहीं सकती। तो फिर कम ज्यादा इश्क होने की पहचान अद्वैत में कैसे हो?

वाहेदत कहिए इनको, तन मन एक इस्क।
जुदागी जरा नहीं, वाहेदत का बेसक।।१३।।

अद्वैत वाहेदत (एकदिली) उसी को कहते है जहां तन-मन एक ही पारब्रह्म के इश्क में गर्क हों। परमधाम में जुदाई जरा भी नहीं हो सकती।

तो बेवरा कबूं न पाइए, बीच अर्स वाहेदत।
इस्क बेवरा तो पाइए, जो कछू होए जुदागी इत।।१४।।

इसलिए परमधाम की अद्वैत भूमि में इश्क का ब्यौरा सम्भव नहीं। इश्क का ब्यौरा तभी सम्भव हो सकता है जब वहां जुदाई हो।

Nijanand App

जो इस्क वाहेदत का, ए जो किया मजकूर।
ए बेवरा क्यों पाइए, कोई होए न पल एक दूर।। १५ ।।

अद्वैत परमधाम की इश्क भूमि पर इश्क का ब्यौरा जिसका जिक्र हो रहा है, कैसे हो सकता है? क्योंकि एक पल के लिए भी कोई वहां से जुदा नहीं हो सकता।

अर्स बका में जुदागी, सुपने कबूं न होए।
तो हक इस्क का बेवरा, क्यों पावे मोमिन कोए।। १६ ।।

परमधाम में तो जुदाई सपने में भी सम्भव नहीं है। फिर श्री राजजी महाराज के इश्क का ब्यौरा मोमिन किस तरह से पा सकते हैं?

हकें कह्या रूहन को, मैं देखाऊं इस्क।
ए बेवरा इस्क का, तुम पाओगे बेसक।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा मैं अपना इश्क दिखाता हूं और तुम निश्चित ही मेरे इश्क का ब्यौरा कर सकोगे।

मैं छिपाऊं तुमको, बैठो कदम पकड़ के।
ए तुम इस्कै से पाओगे, आए मिलो मुझसे।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि तुम मेरे चरण पकड़ कर बैठो। मैं तुमको फरामोशी के परदे में छिपाता हूं। फिर तुम मुझे इश्क से ही पा सकोगे।

ए इस्क तो पाइए, जो पेहेले मोको जाओ भूल।
तुम ले बैठो जुदागी, मैं भेजों तुम पर रसूल।। १९ ।।

यह इश्क तुम्हें तब मिलेगा जब तुम पहले मुझे भूल जाओगे। तुम मेरे से अलग होकर बैठो। फिर मैं तुम्हें याद दिलाने के लिए अपना रसूल (सन्देशवाहक) भेजूंगा।

मैं भेजों किताबत तुमको, सब इत की हकीकत।
तुम कहोगे किन खसमें, भेजी किताबत।। २० ।।

मैं तुमको धर्मग्रन्थों के द्वारा यहां की हकीकत लिखकर भेजूंगा। तुम ऐसे अनजान हो जाओगे और कहोगे कि कौन खाविन्द और कैसा ग्रन्थ और किस घर की बातें हैं?

सो कहां है हमारा खसम, कैसा खेल कौन हम।
रसूल देसी तुमें साहेदियां, पर मानोगे न तुम।। २१ ।।

श्री राजजी रूहों से कह रहे हैं कि तुम खेल में जाकर हैरान होकर पूछोगे, वह हमारा धनी कहां है, यह खेल क्या है और हम कौन हैं? मेरा रसूल तुम्हें गवांहियां देगा, पर तुम नहीं मानोगे।

कहां है हमारा वतन, कौन जिमी ए ठौर।
क्यों कर हम आए इत, बिना मलकूत है कोई और।। २२ ।।

हमारा वतन कहां है और हम किस भूमि पर हैं, हम यहां क्यों आए हैं, क्या बैकुण्ठ के अतिरिक्त भी कुछ आगे और है?

Nijanand App

पढ़ोगे सब साहेदियां, जो मैं लिखोंगा इसारत।
सो दिल में ल्याओगे, पर छूटेगी नहीं गफलत।। २३ ।।

जो कुछ ग्रन्थों में मैं इशारे से लिखूंगा तुम उसको पढ़ोगे और दिल में भी विचारोगे, पर यकीन नहीं आएगा। माया का कर्मकाण्ड नहीं छूटेगा।

मैं लिखोंगा रमूजें, और सिखाऊंगा मेरा इलम।
तिन इलम से चीन्होगे, पर छूटे न झूठी रसम।। २४ ।।

मैं अपने परमधाम की इशारतें और निशानात लिखूंगा और अपने जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से उन इशारतों के छिपे रहस्य खोलूंगा। उस तारतम वाणी से तुम पहचान तो जाओगे पर बिरादरी की, सगे सम्बन्धियों की, दुनियां वालों की झूठी रस्मों रिवाजों को तोड़ न पाओगे।

तुम जाए झूठे खेल में, कर बैठोगे जुदे जुदे घर।
मैं आए इलम देऊं अर्स का, पर तुम जागो नहीं क्योंए कर।। २५ ।।

तुम झूठे खेल में जाकर अपने जुदा-जुदा घर बनाकर बैठोगे। मैं वहां आकर तुम्हें अपना ज्ञान दूंगा। पर तुम किसी तरह से भी नहीं जागोगे।

मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक।
देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक।। २६ ।।

तब मैं अपनी रूह श्यामाजी को भेजूंगा जो तुम्हारे जैसा ही तन धारण करेंगी। वह परमधाम की कुल बातें याद कराएंगी पर तुम फिर भी मेरी पहचान न कर सकोगे।

हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए रोए।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए।। २७ ।।

श्री श्यामाजी प्यारे धनी की प्यारी बातें रो-रोकर तुम्हें सुनाएंगे और तुम भी सुन-सुनकर रोओगी पर फिर भी कोई सावचेत न हो सकोगी।

खेल देखोगे दुख का, याद देसी मैं ए सुख।
मैं देऊंगा सब साहेदियां, पर तुम छोड़ न सको दुख।। २८ ।।

तुम जब दुःख का खेल देखोगे तब मैं परमधाम से अखण्ड घर के सुख याद कराने आऊंगा और सब ग्रन्थों से गवाहियां दूंगा, पर तुम फिर भी दुःख को नहीं छोड़ सकोगे।

मैं तुमारे वास्ते, करोंगा कई उपाए।
ए बातें सब याद देऊंगा, जो करता हों इप्तदाए।। २९ ।।

मैं तुम्हें जगाने के वास्ते कई उपाय करूंगा और इस घर की सारी बातें याद दिलाऊंगा जो शुरू से ही इश्क रब्द में हो रही हैं।

क्यों ऐसी हम से होएगी, क्या हम जुदे होसी माहें खेल।
ऐसी अकल क्यों होएसी, ए कैसी है कदर-लैल।। ३० ।।

तब रूहों ने श्री राजजी महाराज से कहा कि हमसे ऐसी भूल कैसे होगी? क्या हम खेल में जुदा हो जाएंगे? हमारी अक्ल पर परदा क्यों पड़ जाएगा? यह कैसी लैल तुल कदर की वियोग की रात्रि है?

Nijanand App

दूर तो करोगे नहीं, कदम तले बैठे हक।
हम फेरें तुमारा फुरमाया, ऐसे लूखे होसी मुतलक।। ३१ ।।

आप हमको अपने चरणों से दूर तो नहीं करोगे? अपने चरणों के तले ही तो बिठाकर रखोगे, फिर हम आपका आदेश लौटा देंगी। हम इतने सूने दिल वाले कैसे हो जाएंगे?

तुम बिना हम कबहूं, रेहे ना सकें एक दम।
क्यों होसीं हम नादान, जो ऐसा करें जुलम।। ३२ ।।

हे धनी! आपके बिना हम कभी भी एक क्षण नहीं रह सकते। हम ऐसे नादान कैसे हो जाएंगे कि इतना बड़ा अन्याय कर बैठें?

जैसा साहेब केहेत हो, ऐसी कबूं हमसे न होए।
सौ बेर देखो अजमाए के, ऐसी मोमिन करे न कोए।। ३३ ।।

हे धनी! जैसा आप कह रहे हो ऐसी तो हम से कभी भी नहीं होगी। सौ बार आजमा कर देख लो। मोमिन से ऐसी गलती कभी नहीं होगी।

आप भूलें या हक कदम, या भूलें अर्स घर।
ऐसी निपट नादानी, हम करें क्यों कर।। ३४ ।।

हम आपको भूल जाएं या आपके चरणों को भूल जाएं या परमधाम को भूल जाएं, ऐसी नासमझी हम कैसे कर सकते हैं?

रूहों ऐसी आई दिल में, कोई खेल है खूबतर।
खेल देख हक वतन, आप जासी बिसर।। ३५ ।।

रूहों के दिल में ऐसा आया कि यह कोई बढ़िया खेल है जिसमें खेल देखकर श्री राजजी को अपने घर को और अपने आपको भूल जाएंगे।

ए जेती हुई रद-बदलें, त्यों त्यों खेल दिल चाहे।
फेर फेर मांगे खेल को, कोई ऐसी बनी जो आए।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जैसे-जैसे यह बात होती गई, वैसे-वैसे खेल देखने की चाह बढ़ती गई। कुछ ऐसी बात बन गई कि हमने बार-बार खेल की मांग की।

न तो जो बात आखिर होएसी, सो रबें आगूं दई बताए।
कह्या खेल जुदागी दुख का, तुम मांगत हो चित ल्याए।। ३७ ।।

नहीं तो हमारे ऊपर जो मुसीबतें खेल में आने वाली थीं, वह श्री राजजी महाराज ने पहले से ही बता दिया था और कह दिया था कि यह वियोग का खेल बड़ा दुःखदायी है जिसे तुम सब बड़े शौक से देखना चाहती हो।

हक आप सांचे होने को, सब विध कही सुभान।
त्यों त्यों दिल ज्यादा चाहे, वास्ते करने ऊपर एहेसान।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपने आप को सच्चा साबित करने के लिए सब कुछ पहले से ही बता दिया। उससे मोमिनों के दिल में चाहना और बढ़ गई और कहा कि हमारे ऊपर एहसान क्यों कर रहे हो?

Nijanand App

मिनों मिनें करें हुसियारियां, हक खेल देखावें जुदागी।
एक कहे दूजी को मुख थें, रहिए लपटाए अंग लागी।। ३९ ।।

सखियां आपस में सावधान होने लगीं कि तैयार हो जाओ। श्री राजजी महाराज जुदाई का खेल दिखाने वाले हैं। तब एक दूसरे को कहती हैं कि आपस में हम लिपट कर बैठें।

क्यों हम जुदे होएसी, एक दूजी को छोड़ें नाहें।
क्यों भूलें हम हक को, बैठे खिलवत के माहें।। ४० ।।

जब हम एक दूसरे को छोड़ेंगे नहीं, तो अलग कैसे होंगे? जब हम मूल-मिलावे में बैठे हैं तो हम श्री राजजी को कैसे भूल जाएंगे?

हक कहे तुम भूलोगे, आप बैठे बका में जित।
मुझे भी तुम भूलोगे, ऐसा खेल देखोगे बैठे इत।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि इस अखण्ड घर में बैठकर भी मुझे भूल जाओगे। ऐसा खेल तुम यहां बैठे-बैठे देखोगे।

ऐसी क्यों होवे हमसे, ऐसे क्यों होवें बेसुध हम।
खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम।। ४२ ।।

रूहें कहती हैं कि हम ऐसे बेसुध कैसे हो जाएंगे? लाख बार आप झूठा खेल दिखाओ, पर धनी हम आपको नहीं भूलेंगे।

एक दूजी कहे रूहन को, तुम हूजो खबरदार।
खेल देखावें फरामोस का, जिन भूलो परवरदिगार।। ४३ ।।

एक रूह दूसरी रूह से कहती है कि तुम सावधान हो जाओ। श्री राजजी महाराज फरामोशी का खेल दिखा रहे हैं। अपने धनी को मत भूलना।

जो तूं भूले मैं तुझको, देऊंगी तुरत जगाए।
मैं भूलों तो तूं मुझे, पल में दीजे बताए।। ४४ ।।

तू भूल जाएगी तो मैं तुझे जगा दूंगी। मैं भूल जाऊं, तो तू मुझे एक पल में बता देना।

इन बिध एक दूजी सों, मसलहत करी सबन।
क्या करसी खेल फरेब का, आपन मोमिन सब एक तन।। ४५ ।।

इस तरह से एक दूसरी ने एक दूसरी से सलाह कर ली और कहा कि हम मोमिन सब एक तन हैं। यह झूठा माया का खेल हमारा क्या बिगाड़ेगा?

सो क्यों भूलें ए सैयां, जो आगूं होवें खबरदार।
खेल देखावें चेतन कर, सो भूलें नहीं निरधार।। ४६ ।।

ऐसी ब्रह्मसृष्टियां जिनको पहले से सावधान कर दिया हो, वह कैसे भूल सकती हैं? जिन्हें सावधान करके खेल दिखाया जा रहा हो वह निश्चित ही नहीं भूलेंगी।

सो भूलेंगे क्यों कर, इस्क जिनको होए।
एक पाव पल जुदागीय का, क्यों कर सेहेवें सोए।। ४७ ।।

ऐसी ब्रह्मसृष्टियां जिनके अन्दर धनी का इश्क है, वह एक चौथाई पल की जुदाई कैसे सह सकती हैं? अपने धनी को कैसे भूल सकती हैं?

Nijanand App

इस्क सबों रूहों पूरन, वाहेदत का मुतलक।
क्यों जरा पैठे जुदागी, बीच रूहों हादी हक।।४८।।

सभी रूहों में परमधाम का पूर्ण इश्क है, इसलिए रूहों में, श्री राजजी महाराज में और श्यामा महारानी में थोड़ी सी भी जुदाई कैसे हो सकती है?

ए बोहोत रब्द बीच अर्स के, रूहों हक सों हुआ मजकूर।
अर्स बका के हजूरी, ए क्यों होवें हक सों दूर।।४९।।

परमधाम के बीच श्री राजजी और रूहों के बीच इश्क का बहुत रब्द हुआ। अखंड परमधाम में सदा श्री राजजी महाराज के चरणों में रहने वाले श्री राजजी से कैसे दूर हो सकते हैं?

इस्क का अर्स अजीम में, रब्द हुआ बिलंद।
तो फरामोसी में इस्क का, बेवरा देखाया खावंद।।५०।।

अर्श अजीम परमधाम में इश्क का बहुत बड़ा रब्द हुआ, इसलिए श्री राजजी महाराज ने फरामोशी में इश्क का ब्यौरा दिखाया।

आप बैठे दिल देय के, ऊपर बारे हजार।
फरामोसी हांसी होएसी, जिनको नहीं सुमार।।५१।।

श्री राजजी महाराज ने बड़े प्यार से अपने चरणों में बारह हजार को बिठा लिया। अब फरामोशी की हंसी बेशुमार होगी।

हक बैठे खेल देखावने, जिन फरामोसी हांसी होए।
इस्क हक का आवे दिल में, ए फरामोसीहांसी जाने सोए।।५२।।

श्री राजजी महाराज खेल दिखाने के वास्ते बैठ गए हैं। रूहें इस तरह, सतर्क होकर बैठ गईं कि हम पर इस फरामोशी की हंसी न हो। जिनके दिल में श्री राजजी का इश्क आ जाता है, यह फरामोशी की हंसी वही जान पाता है।

तिन वास्ते हकें पैदा किया, दई दूर जुदागी जोर।
और नजीक बैठाए सेहेरग से, यों देखाया खेल मरोर।।५३।।

इस वास्ते श्री राजजी महाराज ने यह संसार बनाया और रूहों को दूर इस माया के खेल में भेज दिया। सेहेरग से भी नजदीक चरणों के तले बिठाए रखा। इस तरह से उलझाकर खेल दिखाया।

अर्स बका बीच ब्रह्मांड में, चौदे तबकों में सुध नाहें।
किया सेहेरग से नजीक, गिरो बैठी बका माहें।।५४।।

ब्रह्माण्ड के चौदह लोकों में अखण्ड परमधाम की सुध नहीं थी। धनी ने वह अखण्ड परमधाम जहां रूहें चरणों तले बैठी हैं, उसे सेहेरग से नजदीक दिखा दिया।

दिया बीच ब्रह्मांड जुदागी, अजूं इनसे भी दूर दूर।
निपट दई ऐसी नजीकी, बैठे अंग सों लाग हजूर।।५५।।

श्री राजजी महाराज ने ब्रह्माण्ड में भेजकर आत्माओं को एक दूसरे से दूर कर दिया। जो परमधाम में धनी के सामने अंग से अंग लगाकर बैठी थीं उन्हें खेल दिखाने के लिए अपने पास रखा।

Nijanand App

ऐसा बुजरक खेल देखाया, ऐसा न देख्या कब।
ए बातें हांसी फरामोसी की, करसी इस्क ले अब।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसा महान खेल दिखाया जो अभी तक कभी नहीं देखा था। अब भूल जाने पर हंसी की बातें जब इश्क मिल जाएगा तो परमधाम में करेंगी।

फरामोसी दई जिन वास्ते, हांसी भी वास्ते इन।
इस्क ले ले हंससी, कयामत बखत मोमिन।।५७ ।।

मोमिनों पर जिस वास्ते फरामोशी दी है, हंसी भी उसी वास्ते होती है। कयामत के वक्त में सभी मोमिन अपने इश्क की ही चर्चा करेंगे और हंसेंगे।

ए बातें हुई सब अर्स में, रूहें बड़ीरूह हक साथ।
सो ए खेल पैदा हुआ, काहूं हाथ न सूझे हाथ।।५८ ।।

यह बातें परमधाम में मोमिनों में श्री श्यामाजी और श्री राजजी के बीच हुईं, इसलिए श्री राजजी महाराज ने ऐसा खेल बनाया जिसमें हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता, अर्थात् अपने साथियों की पहचान नहीं होती।

कई जातें कई जिनसें, कई फिरके मजहब।
भेख भाखा सब जुदियां, हक को ढूंढ़ें सब।।५९ ।।

यहां खेल में कई किस्म की जातियां हैं। कई तरह के धर्म, पंथ, पैंडे हैं जिनकी भेष और भाषा अलग-अलग है। सभी पारब्रह्म को ढूंढ़ रहे हैं।

ढूंढ़ ढूंढ़ सब जुदे परे, हक न पाया किन।
अव्वल बीच और आखिर लो, किन पाया न बका वतन।।६० ।।

सभी ढूंढ़-ढूंढ़कर अलग हो गए, परन्तु पारब्रह्म किसी को नहीं मिले। शुरू में, बीच में और आखिर तक अखण्ड घर किसी को नहीं मिला।

रसमें सबों जुदी लई, माहों-माहें कई लरत।
आप बड़े सब कहावहीं, पानी पत्थर आग पूजत।।६१ ।।

यहां आकर ब्रह्मसृष्टियों ने अलग-अलग रीति-रिवाज पकड़ लिए। वह आपस में इसी के लिए ही लड़ते हैं। पानी, पत्थर, आग की पूजा करते हैं और अपने आप को बड़ा कहलाते हैं।

ए ऐसा खेल अंधेर का, सब कहें हम बुजरक।
पर हक सुध काहू में नहीं, छूटी न सुभे सक।।६२ ।।

यह ऐसा माया का खेल है कि सभी अपने को सयाना समझते हैं। किसी को भी पारब्रह्म की सुध नहीं है और न उनके संशय ही मिटते हैं।

काहूं तरफ न पाई अर्स की, कहावत हैं दीनदार।
डूबे सब अपनी स्यानपे, जात हाथ पटक सिर मार।।६३ ।।

किसी को अखण्ड घर परमधाम की सुध नहीं हुई और अपने धर्म के कर्मठ कार्यकर्ता कहलाते हैं सब अपनी चतुराई में डूबे हैं और सिर में हाथ मारकर निराश हो जाते हैं।

Nijanand App

ऐसे में आए रसूल, हाथ लिए फुरमान।
फैलाया नूर आलम में, वास्ते मोमिनों पेहेचान।। ६४ ।।

मोमिनों की ऐसी हालत में रसूल साहब कुरान लेकर आए। मोमिनों को पहचान कराने के लिए कुरान का ज्ञान संसार में फैलाया।

आगूं आए खबर दई आखिर आवेगा साहेब।
रूहअल्ला इमाम उमत, होसी नाजी-मजहब।। ६५ ।।

उन्होंने आकर पहले से समाचार दिया कि आखिर में धाम के धनी आएंगे और श्यामा महारानी इमाम मेंहदी और मोमिनों की जमात का एक निजानन्द सम्प्रदाय चलेगा।

पुकार करी सबन में, कह्या आवेगा सुभान।
हिसाब ले भिस्त देयसी, ठौर हक बका पेहेचान।। ६६ ।।

मुहम्मद साहब ने आकर सबको पुकार कर कहा कि आखिर में पारब्रह्म आएंगे और सबका न्याय चुकाकर अखण्ड बहिश्तें प्रदान करेंगे और अखण्ड घर (परमधाम) की पहचान कराएंगे।

ऐसा खेल पैदा हुआ, और सोई आए मोमिन।
सोई खेल देखे पीछे, भूल गए आप वतन।। ६७ ।।

जैसा कहा था वैसा ही यह माया का संसार बना और मोमिन इसमें आ गए और खेल देखने के बाद अपने घर को भूल गए।

और भूले खसम को, गए खेल में रल।
कोई सुध बका की न देवहीं, जो कायम अर्स असल।। ६८ ।।

अपने धनी को भूल गए और खेल में मिल गए। जहां अखण्ड घर की कोई सुध नहीं देता।

बैठे ख्वाब जिमीय में, और दिल पर सैतान पातसाह।
नसल आदम हवाई, जो मारे खुदाई राह।। ६९ ।।

इस स्वप्न की जमीन में उनके दिलों पर शैतान (नारद) आकर बैठ गया जो आदम हव्वा (नारायण) की औलाद है जिसने परमात्मा की ओर जाने वाले रास्ते को बन्द कर दिया।

मोमिन आए इन नसल में, जित हक न सुन्या कान।
तिन जिमी क्यों पावें मोमिन, कायम अर्स सुभान।। ७० ।।

मोमिन ऐसे मनुष्य तन में आए जहां किसी ने पारब्रह्म का नाम भी नहीं सुना। ऐसी जमीन में मोमिन अपने अखण्ड घर तथा अपने धनी को कैसे प्राप्त करें?

मोमिन आए जुदे जुदे, जुदी जातें जुदी रवेस।
जुदे मुलक मजहब जुदे, जुदी बोली जुदे भेस।। ७१ ।।

मोमिन अलग-अलग जातियों में, ठिकानों में तथा रीति-रिवाजों में, अलग-अलग मुल्क में, अलग-अलग धर्म में, अलग-अलग बोली में तथा अलग-अलग भेष में आए। (अब पहचानो, कैसे पहचानोगे)।

चौदे तबक की दुनी को, काहू खबर खुदा की नाहें।
ऐसे किए मोहोरे खेल के, ए भी मिल गए तिन माहें।। ७२ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में पारब्रह्म की खबर देने वाला कोई नहीं है। संसार के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऐसे बनाए कि उनकी पूजा करने वालों में मोमिन भी आकर मिल गए।

Nijanand App

दुनियां चौदे तबक में, काहू खोली नहीं किताब।
साहेब जमाने का खोलसी, एही सिर खिताब।।७३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्मांड में धर्मग्रन्थों के छिपे रहस्यों को किसी ने नहीं खोला। उन धर्मग्रन्थों में यह लिखा था कि आखिर के जमाने में पारब्रह्म आकर के इनके छिपे भेदों को खोलेंगे।

कुंजी ल्याए रूहअल्ला, दई हाथ इमाम।
सो गिरो मोमिनों मिलाए के, करसी सिजदा तमाम।।७४ ।।

रूह अल्लाह श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाए और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के हाथ में दी वह सब मोमिनों को बुलाकर मिला देंगे और सारी दुनियां उन पर सिजदा करेगी।

सो अग्यारै सदी मिने, होसी जाहेर हकीकत।
हादी मोमिन जानसी, हक की इसारत।।७५ ।।

ग्यारहवीं सदी के बीच हकीकत का ज्ञान जाहिर होगा श्री प्राणनाथजी और मोमिन श्री राजजी के संकेतों को समझ लेंगे।

अव्वल करी बातें अर्स में, वास्ते मोमिनों न्यामत।
कुन्जी खिताब सबे ल्याए, सोई फुरमान ल्याए इत।।७६ ।।

रसूल साहब ने शुरू में श्री राजजी से बातें कीं और मोमिनों के वास्ते कुरान का ज्ञान लाए। अब वही रसूल मलकी मुहम्मद बनकर तारतम ज्ञान की कुंजी लाए और वही हकी स्वरूप बनकर कुलजम सरूप की वाणी लाए।

सो मिली जमात रूहन की, जिन वास्ते किया खेल।
सो हक भी आए इन बीच में, सो कहे वचन माहें लैल।।७७ ।।

जिन रूहों के वास्ते खेल बनाया, वह मोमिन अब मिलने लगे। पारब्रह्म श्री प्राणनाथजी इनके बीच आ गए और लैल तुल कदर की रात्रि में कुलजम सरूप का अखण्ड ज्ञान दे रहे हैं।

लैल गई पुकारते, आया बखत फजर।
ए अग्यारै सदी पूरन, तब खुली रूहों नजर।।७८ ।।

लैल तुल कदर की रात्रि का तीसरा भाग पुकारते-पुकारते बीत गया। अब जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान का सवेरा हुआ है। मुहम्मद साहब की ग्यारहवीं सदी पूर्ण हो गई और सम्पूर्ण ज्ञान आ जाने से रूहों की नजर खुल गई।

ए बुजरकी इस्क की, अबलों न जानी किन।
और मोहोरे सब खेल के, क्यों जाने बिना मोमिन।।७९ ।।

धनी के इश्क की इस महिमा को अब तक किसी ने नहीं जाना था। इस संसार के ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवी, देवता कैसे जान सकते हैं? यह मोमिन ही जानते हैं।

सो फरामोसी मोमिन को, हकें दई बनाए।
और हक जगावें ऊपर से, बिना इस्क न उठ्यो जाए।।८० ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों को फरामोशी की नींद में सुला दिया। वही अब ऊपर का ज्ञान देकर जगाते हैं, लेकिन इश्क के बिना जागना सम्भव नहीं है।

Nijanand App

आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को परमधाम से हटाकर बेसुधी के खेल में लगा दिया। अब स्वयं जोर-जोर से पुकार रहे हैं, परन्तु आत्माओं को होश नहीं आ रहा है।

ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह बातें बड़े गहरे रहस्य से भरी हैं जब तुमको इश्क मिलेगा तब तुम्हें इसकी सुध आएगी।

महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते।
सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के।। ८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रूहों की इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज से रद बदल (बातचीत) हुई थी। अब बिना इश्क के परमधाम में कैसे जा सकते हैं?

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ६०५ ॥

सूरत हक इस्क के मगज का बेसक

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अर्स की, हक बका वतन।
रूहअल्ला ने जाहेर किया, काहू सुन्या न एते दिन।। १ ।।

हाय री परमधाम की आत्माओ! तुम श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की बातों को क्यों नहीं सुनते हो? रूहअल्लाह श्यामा महारानीजी ने आकर हकीकत जाहिर कर दी है जो आज दिन तक किसी ने नहीं सुनी थी।

फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हांसी के।
हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सब्द ए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने फरामोशी की नींद हंसी के वास्ते दी है। हाय री रूहो! तुम्हें यह सब्द सुनकर दिल को चोट नहीं लगती।

ए साहेब हांसी करे, अर्स की अरवाहों सों।
हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदेमों।। ३ ।।

यह श्री राजजी महाराज परमधाम की रूहों से हंसी कर रहे हैं। हाय-हाय तुम्हारे दिल इतने पत्थर हो गए कि विचार भी नहीं आता।

ए साहेब किने न देखिया, न किन सुनिया कान।
ढूंढ़ गए त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज को आज दिन तक न किसी ने देखा न किसी ने सुना। ढूंढ-ढूंढकर त्रिगुन थक गए, परन्तु वह भी पारब्रह्म को प्राप्त नहीं कर पाए।

एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के।
सो नूर नूरजमाल के, मुजरे आवत इत ए।। ५ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वही अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन करने यहां (परमधाम) में आते हैं।

Nijanand App

आप हकें दिल उठाए के, खेल किया फरामोस।
एती पुकारें हक की, आवत नाहीं होस।। ८१ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को परमधाम से हटाकर बेसुधी के खेल में लगा दिया। अब स्वयं जोर-जोर से पुकार रहे हैं, परन्तु आत्माओं को होश नहीं आ रहा है।

ए बातें बोहोत बारीक हैं, और हैं बुजरक।
ए सुध तब तुमें होएसी, जब आवसी इस्क।। ८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह बातें बड़े गहरे रहस्य से भरी हैं जब तुमको इश्क मिलेगा तब तुम्हें इसकी सुध आएगी।

महामत रूहों हक सों हुआ, बहस इस्क वास्ते।
सो इस्क बिना क्यों पैठिए, बीच हक अर्स के।। ८३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि रूहों की इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज से रद बदल (बातचीत) हुई थी। अब बिना इश्क के परमधाम में कैसे जा सकते हैं?

॥ प्रकरण ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ ६०५ ॥

सूरत हक इस्क के मगज का बेसक

हाए हाए क्यों न सुनो रूहें अर्स की, हक बका वतन।
रूहअल्ला ने जाहेर किया, काहू सुन्या न एते दिन।। १ ।।

हाय री परमधाम की आत्माओ! तुम श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की बातों को क्यों नहीं सुनते हो? रूहअल्लाह श्यामा महारानीजी ने आकर हकीकत जाहिर कर दी है जो आज दिन तक किसी ने नहीं सुनी थी।

फरामोसी हकें दई, सो वास्ते हांसी के।
हाए हाए घाव न लागहीं, सुन के सब्द ए।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने फरामोशी की नींद हंसी के वास्ते दी है। हाय री रूहो! तुम्हें यह सब्द सुनकर दिल को चोट नहीं लगती।

ए साहेब हांसी करे, अर्स की अरवाहों सों।
हाए हाए विचार न आवहीं, ऐसी सखती हिरदेमों।। ३ ।।

यह श्री राजजी महाराज परमधाम की रूहों से हंसी कर रहे हैं। हाय-हाय तुम्हारे दिल इतने पत्थर हो गए कि विचार भी नहीं आता।

ए साहेब किने न देखिया, न किन सुनिया कान।
ढूंढ़ गए त्रैगुन, पर पाया न काहूं निदान।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज को आज दिन तक न किसी ने देखा न किसी ने सुना। ढूंढ-ढूंढकर त्रिगुन थक गए, परन्तु वह भी पारब्रह्म को प्राप्त नहीं कर पाए।

एक पल थें पैदा फना, कोट ब्रह्मांड नूर के।
सो नूर नूरजमाल के, मुजरे आवत इत ए।। ५ ।।

अक्षर ब्रह्म के एक पल में करोड़ों ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं। वही अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन करने यहां (परमधाम) में आते हैं।

Nijanand App

जो किनहूं पाया नहीं, सो जात रोज दरबार।
साहेब अर्स-अजीम के, करने उत दीदार।। ६ ।।

जिस अक्षर ब्रह्म को आज दिन तक किसी ने नहीं पाया वह प्रतिदिन परमधाम में श्री राजजी महाराज के दर्शन करने के लिए जाते हैं।

सो साहेब हांसी करे, अपने मोमिन रूहों सों मिल।
सो सुन के घाव न लागहीं, हाए हाए ऐसे बजर दिल।। ७ ।।

वही श्री राजजी महाराज अपने मोमिन से मिलकर हंसी करते हैं। हाय! हाय! तुम्हारे दिल ऐसे पत्थर बन गए कि इन वचनों को सुनकर भी चोट नहीं लगती।

हांसी करी किन भांत की, फरामोसी दई किन।
पर हाए हाए दिल न विचारहीं, कोई ऐसा दिल हुआ कठिन।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने किस तरह की हंसी की है, किसने तुम्हें बेसुध बनाया। हाय! हाय! तुम्हारे ऐसे कठोर दिल में विचार क्यों नहीं आता।

हक का इस्क हमपें, पूरा पाया मैं।
ए खेल देखाया नींद का, फरामोसी के से।। ९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने श्री राजजी महाराज का पूरा इश्क पा लिया है। यह नींद का खेल फरामोशी की बेसुधी में दिखाया है।

इलम भी पूरा दिया, जित जरा न मैं को सक।
सुख देखे बेसक अर्स के, तो क्यों न आवे हक इस्क।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने अपना पूरा जागृत बुद्धि का ज्ञान भी दिया जिससे मुझे कोई संशय नहीं रहा। परमधाम के अखंड सुखों को देखा फिर भी राजजी का इश्क क्यों नहीं आता?

सुख में भी सक नहीं, नाहीं अर्स में सक।
ना कछू सक इलम में, सक ना खसम हक।। ११ ।।

परमधाम में भी कोई संशय नहीं रहा, न परमधाम के सुखों में ही कोई संशय रहा। न जागृत बुद्धि के इलम में संशय रहा। न श्री राजजी महाराज हमारे खसम हैं इसमें कोई संशय है।

सक ना रही कछू खेल में, सक ना आए देखन।
सक ना मैं हक की, और सक न गिरो मोमिन।। १२ ।।

खेल में संशय नहीं रहा। खेल देखने के वास्ते आए हैं, इसमें संशय नहीं रहा। मैं श्री राजजी महाराज की अंगना हूं, इसमें संशय नहीं है और न मोमिनों की जमात में कोई संशय रहा।

सक नाहीं कुदरत में, सक नाहीं कादर।
सक नहीं कयामत में, सब अरवाहें उठें ज्यों कर।। १३ ।।

अक्षर ब्रह्म में संशय नहीं है और योगमाया में संशय नहीं है। कयामत में संशय नहीं है और आखिरत में रूहें कैसे उठेंगी, इसमें भी संशय नहीं रहा।

Nijanand App

सक ना कायम भिस्त में, बेसक ब्रह्मांड हुकम।
बेसक तीनों उमत, बेसक घरों पोहोंचावें हम।। १४ ।।

श्री राजजी के हुकम से दुनियां की बहिश्तों को कायमी मिलनी है, इसमें संशय नहीं रहा। ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और जीवसृष्टियों को अपने मूल ठिकानों में पहुंचाएंगे, इसमें भी संशय नहीं रहा।

बेसक फरामोसीय में, हक बेसक मिले हम साथ।
बेसक ताला खोलिया, बेसक कुन्जी हमारे हाथ।। १५ ।।

परमधाम की रूहें फरामोशी में हैं, इसमें भी संशय नहीं रहा। हम रूहों को श्री राजजी महाराज खेल में आकर मिले, इसमें भी संशय नहीं रहा। तारतम की कुंजी हमारे हाथ में देकर धर्मग्रन्थों के छिपे रहस्य खुलवाए, इसमें संशय नहीं रहा।

बेसक खेल देखाइया, खोली बेसक कतेब वेद।
बेसक हमों ने पाइया, बेसक हक दिल भेद।। १६ ।।

माया का खेल दिखाया इसमें भी संशय नहीं रहा। वेद कतेब के छिपे भेदों को खोल दिया, इसमें भी संशय नहीं रहा। हमने ही श्री राजजी महाराज के दिल के भेद पा लिए हैं, इसमें भी संशय नहीं रहा।

बेसक दोऊ अर्सों की, जरे जरे की बेसक।
बेसक मेहेर मोमिनों पर, बेसक करी जो हक।। १७ ।।

अक्षर धाम, परमधाम और वहां के कण-कण को जान लिया, इसमें भी कोई संशय नहीं रहा। श्री राजजी महाराज ने मोमिनों पर बड़ी कृपा की है, इसमें भी संशय नहीं रहा।

जो पैदा चौदे तबक में, जो कोई हुए बुजरक।
अपने मुख किने ना कह्या, जो हम हुए बेसक।। १८ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में जितने भी बड़े लोग हो गए हैं उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि हमारे संशय मिट गए।

सो बेसक मैं जानिया, ए बात तेहेकीक बेसक।
मोमिन बेसक समझियो, बेसक बोले मैं हक।। १९ ।।

अब निश्चित रूप से मैंने जान लिया है कि यह बातें सत हैं। हे मोमिनो! तुम संशय रहित होकर यह बातें समझ लो कि यह 'मैं' (अहं) जो बोल रही है वह श्री राजजी महाराज ही बोल रहे हैं।

केतेक मोमिन हो बेसक, जो बेसक करो विचार।
तो बेसक सुख अर्स का, इन तन बेसक ल्यो करार।। २० ।।

हे मोमिनो! कितने मोमिन ऐसे हैं जो तारतम ज्ञान से निःसन्देह हो गए हैं। अब विचार करके घर के अखण्ड सुख इस मिटने वाले शरीर से ही लेकर चैन प्राप्त कर सकते हो।

दुनियां चौदे तबक में, कोई बेसक हुआ न कित।
सो सब थें सक मिट गई, ऐसी बेसकी आई इत।। २१ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में कहीं भी कोई संशय रहित नहीं हुआ। अब तारतम ज्ञान से ऐसी बेशकी आई कि सबके संशय मिट गए।

Nijanand App

किस वास्ते हांसी करी, किस वास्ते हुए फरामोस।
हाए हाए दिल ना विचारहीं, हाए हाए आवत नाहीं माहें होस।। २२ ।।

धनी ने हम रूहों पर किसलिए हंसी की और किसलिए हमें फरामोशी दी? हाय! हाय! दिल में ऐसे विचार आकर मोमिनों की रूह सावचेत क्यों नहीं होती?

ए कदम दिल कछू आवहीं, जब करे विचार दिल ए।
हाए हाए ए समया क्यों न रह्या, इन हांसी फरामोसी के।। २३ ।।

जब कभी दिल में विचार करती हूं तो श्री राजजी महाराज के चरणों की याद आती है। हाय! हाय! वही समय अब क्यों नहीं रहा जब हमारे पर हंसी करने के लिए फरामोशी दी गई थी।

हाए हाए दिल में न आवहीं, किस वास्ते हांसी भई।
ए कारन कौन फरामोस को, ए दिल खोल किने न कही।। २४ ।।

हाय! हाय! यह बात दिल में क्यों नहीं आती कि हमारे ऊपर हंसी किस कारण से हुई और किस कारण से हमें फरामोशी दी गई? यह शब्द दिल खोलकर किसी ने नहीं कहा।

समया न रह्या किन वास्ते, होए पेहेचान न वास्ते किन।
इस्क हक के दिल का, हाए हाए पाए नहीं लछन।। २५ ।।

पहले जैसा समय क्यों नहीं रहा? अब हमें अपने धनी और अखण्ड घर परमधाम की पहचान क्यों नहीं हो रही? हमने अपने धाम धनी के दिल के इश्क को क्यों नहीं पहचाना?

आप फरामोसी देय के, ऊपर से जगावत।
तरंग हक इस्क के, हाए हाए दिल में न आवत।। २६ ।।

श्री राजजी फरामोशी देकर ऊपर से जगाते हैं। अब धनी के इश्क की लहरें हमारे दिल में क्यों नहीं आतीं?

खेल किया किस वास्ते, किस वास्ते देखाया दुख।
मेहेर प्रीत हक के दिल की, हाए हाए देखें ना इस्क के सुख।। २७ ।।

यह खेल किस वास्ते बनाया? किस वास्ते दुःख दिखाया है? हमने धनी के दिल में छिपी मेहर (प्रेम और इश्क) के सुखों को क्यों नहीं देखा?

किस वास्ते हलके जगावत, ऊपर करत बोहोतक सोर।
हाए हाए ए सुध कोई ना ले सके, हक के इस्क का जोर।। २८ ।।

किस वास्ते धीरे-धीरे जगाते हो और ऊपर से बहुत हल्ला मचाते हो। श्री राजजी महाराज के इश्क की ताकत की सुध कोई क्यों नहीं लेता?

किस वास्ते दुनी ना समझी, किस वास्ते भेज्या फुरमान।
ए बातें हक के इस्क की, हाए हाए करी न काहूं पेहेचान।। २९ ।।

किस कारण से दुनियां इस रहस्य को समझ नहीं सकी और कुरान किस वास्ते भेजा? यह बातें हक के इश्क की हैं, पर हाय! हाय! किसी ने उनको पहचाना नहीं।

Nijanand App

कुंजी ल्याए किस वास्ते, किस वास्ते दई दूजे को।
मेहेर अल्ला के कलाम, हाए हाए आए ना काहूं दिल मों।। ३० ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान की कुंजी श्यामा महारानी किस वास्ते लाए और किस वास्ते वह कुंजी श्री प्राणनाथजी को दी? श्री प्राणनाथजी की मेहर से कुरान के छिपे रहस्य खुले, परन्तु कोई ले न सका।

किस वास्ते खिताब खुदाए का, एक सोई खोले कलाम।
हाए हाए ए सुध मोमिनों ना लई, मीठा हक इस्क का आराम।। ३१ ।।

कुरान में लिखा है कि अन्त समय में खुदा खुद आकर कुरान के छिपे भेदों को इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के रूप में खोलेगा। श्री राजजी महाराज का इश्क बड़ा मीठा है और आनन्ददायक है। हाय! हाय! इसकी खबर मोमिनों को क्यों नहीं पड़ी?

ए द्वार किने न खोलिया, ए जो कुरान किताब।
पाई न हकीकत किनहूं, हाए हाए एकै ठौर खिताब।। ३२ ।।

कुरान के छिपे रहस्य आज दिन तक किसी ने नहीं खोले थे। इसमें लिखा है कि केवल एक इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) को ही यह खिताब प्राप्त है और वही आकर इन रहस्यों को खोलेंगे। हाय! हाय! इस हकीकत को आज दिन तक किसी ने नहीं जाना।

साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान।
सो साहेदी किन न लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान।। ३३ ।।

कुरान में लिखा है कि खुदा की गवाही खुद खुदा देगा। इस गवाही को किसी ने क्यों नहीं जाना। हाय! हाय! कुरान के इस रहस्य को किसी ने क्यों नहीं समझा?

लिखी इसारतें रमूजें, हकें किन ऊपर।
ए बातें मोमिनों मिनें, हाए हाए छिपी रही क्यों कर।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में इशारतें, रमूजें किसके वास्ते लिखी हैं? हाय! हाय! यह बातें मोमिन के बीच कैसे छिपी रह गयीं?

तरंग हक के इस्क के, पाए ना गिरो में किन।
अजूं माएने मगज, हाए हाए पाए नहीं मोमिन।। ३५ ।।

हाय! हाय! मोमिनों ने श्री राजजी महाराज के दिल की तरंगों को, अर्थात् कुरान के छिपे रहस्यों को क्यों नहीं पाया है?

हक के दिल का इस्क, निपट बड़ी है बात।
अजूं जाहेर रूहों न हुई, अर्स सूरत हक जात।। ३६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में इश्क की बहुत बड़ी बात परमधाम की रूहों के वास्ते ही है। यह बात अभी तक रूहें क्यों नहीं समझ सकीं?

हांसी करी किन वास्ते, फरामोसी की दे।
हाए हाए मोमिन ना समझे, बात इस्क की ए।। ३७ ।।

फरामोशी देकर हंसी किस वास्ते की है? हाय! हाय! मोमिन इस इश्क की बात को क्यों नहीं समझते?

Nijanand App

लिख्या ऐसा कुरान में, कुंआरी रही फुरकान।
ए दाग गिरो तब देखसी, हाए हाए होसी जब पेहेचान।। ३८ ।।

कुरान में ऐसा लिखा है कि कुरान कुंआरी रही, अर्थात् आज दिन तक किसी ने उसके छिपे भेदों को देखा ही नहीं। कुरान के न समझने के कलंक को मोमिन तब समझेंगे जब उन्हें पहचान होगी।

ए भी वास्ते इस्क के, फुरमाया यों कर।
तो कही कुंआरी फुरकान, हाए हाए गिरो न लई दिल धर।। ३९ ।।

कुरान को कुंआरी इसी वास्ते कहा कि आज दिन तक दुनियां इसको पढ़ती रही और किसी को पहचान नहीं हुई। श्री राजजी महाराज ने अपने इश्क के वास्ते इसे अपनी रूहों के लिए ग्यारहवीं सदी तक छिपा कर रखा। हाय! हाय! मोमिनों ने इस बात का विचार दिल में क्यों नहीं लिया?

उतरे नूर बिलंद से, मोमिन बड़ा मरातब।
हक के दिल का इस्क, हाए हाए मोमिन लेसी कब।। ४० ।।

मोमिन परमधाम से उतर कर खेल में आए। इनका बड़ा ऊंचा दर्जा है। ऐसे श्री राजजी महाराज के दिल के इश्क को हाय! हाय! यह मोमिन कब लेंगे?

ऐसा नूर-जमाल जो, रूहें रहें इन दरगाह।
ए किस्सा सुनते विचारते, हाए हाए उड़त नहीं अरवाह।। ४१ ।।

ऐसे श्री राजजी महाराज जिनके चरणों में रूहें बैठी हैं, इसके प्रसंग को सुनकर हाय! हाय! मोमिनों की सुरता उड़ क्यों नहीं जाती?

हक सूरत के दिल का, मोमिनों से सनेह।
हेत प्रीत इस्क की, हाए हाए आई नहीं काहूं एह।। ४२ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप और उनके दिल का पूर्ण इश्क मोमिनों से है। हाय! हाय! ऐसा प्यार भरा श्री राजजी महाराज का इश्क किसी मोमिन को नहीं आया।

इस्क खेल हांसी इस्क, इस्क फरामोस मोमिन।
इस्कें रसूल होए आइया, वास्ते इस्क न पाया किन।। ४३ ।।

यह खेल इश्क का है। हंसी इश्क की है। फरामोशी मोमिनों को इश्क के वास्ते दी। इश्क के वास्ते ही रसूल आए और इश्क के वास्ते ही इसे कोई समझ नहीं सका।

इस्कें फुरमान आइया, वास्ते इस्क न खुल्या किन।
वास्ते इस्क के गैब हुआ, इस्कें खुले ना खुदा बिन।। ४४ ।।

इश्क के लिए ही कुरान आया। इश्क की हंसी के लिए ही किसी ने आज दिन तक कुरान के भेद नहीं खोले। इश्क के वास्ते ही कुरान छिपा रहा। बिना पारब्रह्म के इश्क के कुरान के रहस्य नहीं खुलते।

इस्कें कुंजी ल्याइया, इस्कें ल्याया खिताब।
इस्कें आए मोमिन, इस्कें खुले ना सिताब।। ४५ ।।

इश्क के वास्ते ही तारतम की कुंजी श्यामा महारानी लाए। इश्क के वास्ते ही इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी का खिताब आया। इश्क के वास्ते मोमिन आए और इश्क के लिए ही कुरान के छिपे रहस्य जल्दी नहीं खुल सके।

Nijanand App

कई बानी इस्कें उपजी, कई इस्कें पड़ी पुकार।
ए रूहें भी वास्ते इस्क के, हाए हाए हुइयां न खबरदार।।४६।।

संसार में कई धर्मग्रन्थ इश्क के वास्ते आए और सब इश्क के वास्ते पुकार कर रहे हैं। हाय! हाय! इश्क के वास्ते ही रूहें भी सावचेत नहीं हुईं?

हाए हाए इस्क हक का, समझे नहीं मोमिन।
ना तो अरवाहें थी अर्स की, पर हुआ न दिल रोसन।।४७।।

हाय! हाय! श्री राजजी महाराज के इश्क को मोमिन नहीं समझे। मोमिन तो परमधाम की रूहें थीं, उन्हें भी पहचान नहीं हुई।

सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत नाहीं घाए।
सो भी वास्ते इस्क के, जो उड़त नहीं अरवाहे।।४८।।

इश्क के वास्ते ही मोमिनों के दिल में घाव नहीं लगे और इश्क के वास्ते उनकी आत्माओं ने तन नहीं छोड़े।

इस्कें ऊपर पुकारहीं, आवत नाहीं होस।
सो भी वास्ते इस्क के, जो टलत नहीं फरामोस।।४९।।

श्री राजजी महाराज ऊपर से इश्क की पुकार करते हैं, फिर भी होश नहीं आता। इश्क के वास्ते ही फरामोशी नहीं हटती।

सो भी वास्ते इस्क के, जो लगत न कलाम सुभान।
सो भी वास्ते इस्क के, जो होत नहीं पेहेचान।।५०।।

इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज के वचन चुभते नहीं और इश्क के वास्ते ही उनकी पहचान नहीं हो रही है।

सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचान आवत नाहें।
सो भी वास्ते इस्क के, जो पेहेचानत दिल माहें।।५१।।

इश्क के वास्ते ही मोमिनों को पहचान नहीं होती है। इश्क के वास्ते ही दिल में पहचान होती है।

ए करत है सब इस्क, जो खेल में कोई जीतत।
सो भी करत इस्क, जो कोई काहूं भूलत।।५२।।

यह श्री राजजी महाराज के इश्क की लीला है जो हम खेल में जीतते हैं। यह इश्क की ही लीला है कि कोई-कोई मोमिन भूल जाता है।

ए बारीक बातें इस्क की, ए कोई समझत नाहें।
सो भी करत है इस्क, जानत बल जुबांए।।५३।।

इश्क की इन बारीक बातों को कोई समझता नहीं है। यह सब इश्क के वास्ते ही हो रहा है। ऐसा कहने में कितना जोर पड़ता है, यह जबान ही जानती है।

सो भी करत है इस्क, जुदी जुदी जिनस।
काहू सुध थोड़ी काहू घनी, काहू इस्क न देत हरगिस।।५४।।

यह भी सब इश्क से होता है। सब को जुदा-जुदा सुख मिलता है। किसी को इश्क की पहचान कम होती है किसी को ज्यादा और किसी को जरा मात्र भी नहीं होती।

Nijanand App

इस्क सेती हारिए, जितावे इस्क।
इस्कें इस्क न आवहीं, इस्क करे बेसक।।५५।।

इश्क ही हराता है। इश्क ही जिताता है। इश्क से इश्क नहीं आता। इश्क ही सब संशय मिटाता है।

ए बारीक बातें हक की, क्यों कर जानी जाए।
इस्क हक के दिल का, बिना हुकमें क्यों समझाए।।५६।।

श्री राजजी महाराज की इन बारीक बातों को कैसे जाना जाए? यह इश्क हक के दिल का है। बिना उनके हुकम के इस इश्क को कैसे समझा जाए?

ए हक देखावें इस्क, तो बेर न पल एक होए।
सौ साल सोहोबत कीजिए, बिना हुकम न समझे कोए।।५७।।

श्री राजजी महाराज इश्क दिखाते हैं तो एक पल नहीं लगता। बिना उनके हुकम के सौ साल सोहबत करो तो भी इश्क नहीं मिलता।

ए बातें हक के दिल की, निपट बारीक हैं सोए।
बिना इस्क दिए हक के, क्यों कर समझे कोए।।५८।।

यह हक के दिल की बातें बहुत गहरी हैं और श्री राजजी महाराज के इश्क दिए बिना यह समझी नहीं जा सकतीं।

इस्क हक के दिल का, क्यों आवे माहें बूझ।
हक देवें तो इस्क आवहीं, ए हक के इस्क का गुझ।।५९।।

श्री राजजी महाराज के दिल का जो इश्क है, उसे कौन समझ सकता है। जब श्री राजजी महाराज ही इश्क दें तभी इश्क आता है। यह है हक के इश्क का गुह्य (गुझ) रहस्य।

ए हक का बातून इस्क, तिन इस्क का बारीक बातन।
बिना पाए इस्क हक के, इस्क न आवे किन।।६०।।

श्री राजजी महाराज का गुप्त भेद इश्क है। इश्क का रहस्य बहुत गहरा है। श्री राजजी के इश्क मिले बिना इश्क किसी को आता नहीं है।

ए खेल फरामोसीय का, इस्कें किया जो अब।
तुम कायम दायम इस्क में, पर ऐसा इस्क न कब।।६१।।

यह खेल फरामोशी का इश्क ने ही बनाया है। तुम हमेशा अखंड इश्क में ही परमधाम में रहते थे, पर ऐसा इश्क कभी नहीं मिला।

ए हमेसा रूहन में, रहे भीगे बीच इस्क।
पर इस्क ए फरामोसीय का, जो हक के दिल माफक।।६२।।

रूहें हमेशा ही इश्क में भीगी रहती हैं, परन्तु यह फरामोशी का इश्क श्री राजजी ने अपने दिल के माफिक किया है।

बीच कायम ठौर बिछोहा नहीं, जो जुदी होवे गिरो दम।
खेल इस्क जुदागीय का, क्यों देखें अर्स में हम।।६३।।

अखंड परमधाम में एक पल के लिए आत्माएं धनी से अलग नहीं होतीं, तो परमधाम में बैठकर हम जुदाई के खेल का इश्क कैसे देख रहे हैं?

Nijanand App

लेने लज्जत इस्क वास्ते, दई फरामोसी खेल हुकम।
जो रूह लेवे बीच दिल के, तो देखे इस्क खसम।। ६४ ।।

इश्क की लज्जत लेने के वास्ते ही हुकम ने फरामोशी का खेल बनाया। इस बात को रूहें यदि दिल में विचार लें तो रूहें श्री राजजी के इश्क का आनन्द लें।

आप आगूं रूहें बैठाए के, दिल से उपजाई हक।
सुख देने देखाइया, अपने दिल का इस्क।। ६५ ।।

रूहों को अपने चरणों में बैठा करके हमारे दिल में श्री राजजी महाराज ने खेल देखने की चाह दिल में उपजाई और अपने दिल के इश्क का सुख देने के लिए खेल दिखाया।

आप दे फरामोसी, और जगावें भी आप।
देखाई जुदाई फरामोस में, देने इस्क मिलाप।। ६६ ।।

स्वयं ही फरामोशी की नींद देते और स्वयं ही जगाते हैं। फरामोशी में अलग होना दिखाया ताकि दुबारा मिलने पर हकीकत में इश्क क्या है, पता चले।

न मांग्या न दिल उपज्या, दिल हकें उठाया एह।
तो मांग्या खेल जुदागीय का, देने अपना इस्क सनेह।। ६७ ।।

हमने खेल नहीं मांगा और न हमारे दिल में चाह ही पैदा हुई। यह श्री राजजी के दिल की उपज है जिन्होंने अपने दिल का इश्क दिखाने के लिए जुदाई का खेल मंगवाया।

इस्क तरंग उपजत है, दूर जाए मिलिए आए।
वास्ते इस्क हक के दिल का, खेल फरामोसी देखाए।। ६८ ।।

इश्क का स्वाद तभी आता है जब बिछुड़ कर मिलें, इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपने दिल का इश्क दिखाने के लिए फरामोशी का खेल दिखाया।

इस्क बिछुरे से जानिए, आए दूर थें मिलिए जब।
ए दोऊ बातें अर्स में ना थीं, इस्क चिन्हार देखाई अब।। ६९ ।।

इश्क की पहचान बिछुड़ने से होती है जब दूर से आकर मिलें यह दोनों बातें अर्श में नहीं थीं, अर्थात् एक बिछुड़ना दूसरा दूर जाना। यह दोनों बातें सम्भव न थीं। अब इश्क से इनकी पहचान हो गई।

जो हक का इस्क विचारिए, तो बड़ा दिल देत लज्जत।
ए बुजरक मेहेरबानगी, हकें ऐसी दई न्यामत।। ७० ।।

यदि हक के इश्क का विचार करते हैं तो दिल में बड़ा स्वाद आता है। यह श्री राजजी की बड़ी मेहरबानी है जो धनी ने दूर करके ऐसी न्यामत दी (बिछुड़ने के बाद मिलने की)।

जैसा साहेब बुजरक, तैसा बुजरक इस्क।
जो दिल देय के देखिए, तो सुख आवे हक माफक।। ७१ ।।

जैसे धनी महान हैं, वैसे ही उनका इश्क भी महान है। यदि दिल से विचार करके देखें तो श्री राजजी महाराज के अनुकूल ही सुख मिलेगा।

Nijanand App

जैसा मेहेबूब बुजरक, तैसा हादी हक का तन।
रूहें तन हादी माफक, इनों माफक बका वतन।।७२ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज महान हैं, वैसे ही श्री राजजी, श्यामाजी के परमधाम में तन महान हैं। रूहें श्यामाजी के अंग होने के कारण से उनके समान ही महान हैं। इन सबके समान अखण्ड परमधाम महान है।

ऐसा साहेब इस्क, करत निसबत जान।
हाए हाए भूली अरवाहें असल, परत नहीं पेहेचान।।७३ ।।

रूहों को अपनी अंगना जानकर श्री राजजी महाराज उनसे इस तरह का इश्क करते हैं। हाय! हाय! परमधाम की रूहें खेल में आकर ऐसी भूल गईं कि उन्हें धनी के इश्क की पहचान नहीं होती।

भूले हक और आप को, और भूले बका घर।
हक हंससी इसी बात को, रूहें भूली क्यों कर।।७४ ।।

मोमिन खेल में आकर श्री राजजी महाराज को, अपने आपको और अखण्ड घर को भूल गए। श्री राजजी महाराज इसी बात पर हंसेंगे कि रूहें भूल क्यों गईं?

औलिया लिल्ला दोस्त, हकसों रखें निसबत।
फरामोसी दई हांसीय को, कछू चल्या न हकसों इत।।७५ ।।

यह ही औलिया (मोमिन) श्री राजजी के दोस्त हैं और श्री राजजी की अंगना हैं। श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते इन्हें फरामोशी का खेल दिखाया। यहां खेल में आकर मोमिनों का श्री राजजी के सामने कुछ बल नहीं चला।

कैसे थे इन खेल में, किन माफक थे तुम।
किन से ए निसबत भई, कैसा बका पाया खसम।।७६ ।।

खेल में तुम कैसे थे और कैसी तुम्हारी हालत थी और किससे तुम्हारा सम्बन्ध हुआ, कैसे अखण्ड घर, और धनी मिले?

कहां थे फना के खेल में, कैसा था अर्स घर दूर।
किन बुजरकों न पाइया, सो क्यों कर लिए तुमें हजूर।।७७ ।।

तुम झूठे खेल में कहां थे और तुम्हारा अखण्ड घर कैसा था और कितनी दूर था? दुनियां के महान लोग जिसे नहीं पा सके, तुम्हें किस तरह से श्री राजजी ने अपने चरणों में ले लिया?

कैसा अर्स देखाइया, क्यों लिए खिलवत माहें।
ए जो अरवाहें अर्स की, क्यों अजूं विचारत नाहें।।७८ ।।

श्री राजजी महाराज ने तुम्हें कैसा परमधाम दिखाया और कैसे मूल-मिलावा में अपने चरणों में ले लिया है? परमधाम की रूहो! तुम अभी तक विचार क्यों नहीं करतीं?

किन सूरत न पाई हक की, न पाया अर्स बका ठौर।
सब कहें हमों न पाइया, कर कर थके दौर।।७९ ।।

दुनियां में किसी ने भी पारब्रह्म को नहीं देखा और न अखण्ड घर (परमधाम) को ही किसी ने पाया। सभी कहते हैं कि हम खोज-खोजकर थक गए, पर हमें अखण्ड घर नहीं मिला।

Nijanand App

धनी मलकूत के कई गए, पर पाया न नूर-मकान।
खोज खोज के कई थके, पर देख्या नहीं निदान।। ८० ।।

ब्रह्माण्ड के कई देवी-देवताओं ने अक्षरधाम को नहीं पाया। कई अक्षरधाम की खोज-खोजकर थक गए, परन्तु किसी ने नहीं देखा।

ऐसा साहेब बुजरक, जो हमेसा कायम।
सो तले झांकत नूरजमाल के, आवे दीदारें दायम।। ८१ ।।

ऐसे बड़े साहब अक्षर ब्रह्म श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए सदा चांदनी चौक में आते हैं।

कैसा हाल है तुमारा, हो कैसे वतन में तुम।
कौन बड़ाई तुमारी, हाए हाए आवे न याद खसम।। ८२ ।।

हे मोमिनो! तुम्हारी परमधाम में कैसी महानता है? कैसे अखण्ड परमधाम में तुम रहते हो? तुम्हारी कितनी बड़ी महिमा है? हाय! हाय! तुम्हें अभी भी धनी की याद नहीं आती।

कैसा घर बुजरक बका, कैसी खसम साहेबी।
किन चाह्या तुमारा दीदार, कैसी तिनकी है बुजरकी।। ८३ ।।

तुम्हारे अखण्ड परमधाम की कितनी बड़ी भारी महिमा है? तुम्हारे धनी किस साहेबी के मालिक हैं? तुम्हारा दर्शन किसने चाहा था (अर्थात् अक्षर ने)? उसकी कितनी बड़ी महानता है?

कैसी जिमी थी कुफर की, और कैसी थी अकल।
किन झूठे कबीले में थे, कैसे तुमारे अमल।। ८४ ।।

संसार कैसे पाखण्ड से भरा था? तुम्हारी बुद्धि भी कैसी हो गई थी? तुम कैसे झूठे परिवारों में थे? तुम्हारे कर्म व्यवहार कैसे हो रहे थे?

अब कैसा सहूर है तुम पे, पाई कौन सोहोबत।
किन कबीले में थे, अब कैसी राखत हो निसबत।। ८५ ।।

अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से तुम्हें कैसा विवेक मिला है? इस जागृत बुद्धि से तुम किस धनी के चरणों में बैठे हो? पहले संसार में कैसे झूठे कबीले में थे और अब धनी की अंगना हो। अब किस अखण्ड परिवार से सम्बन्ध रखते हो?

कैसी पाई सराफी, कैसी आई तुमें पेहेचान।
हक बका चीन्हया कौन जिमिएं, पाया कैसा इस्क ईमान।। ८६ ।।

तुम तारतम ज्ञान से कैसे पारखी बने हो और कैसी पहचान आई है? किस झूठ की दुनियां में बैठकर कैसे अखण्ड घर (परमधाम) को तथा पारब्रह्म को पहचाना है? उनसे कैसा इश्क और ईमान मिला?

जागत हो के नींद में, विचारत हो के फरामोस।
सीधी बात जाग करत हो, तुम हो होस में के बेहोस।। ८७ ।।

तुम जागृत अवस्था में हो या नींद में हो? तुम सावचेत होकर विचार कर पा रहे हो या बेसुध हो? तुम जागकर सीधी बात कर रहे हो? या तुम होश में हो या बेहोशी में हो?

Nijanand App

विचार नींद में तो ना होए, जागे नींद रहे क्यों कर।
विचार देखो तो अचरज, देखो फरामोसी हांसी दिल धर।। ८८ ।।

अगर नींद में हों तो विचार नहीं आता। अगर जागृत हों तो नींद नहीं रहती। इसको दिल से विचार कर देखो तो बड़ी हैरानी होती है। यही फरामोशी की हंसी है। दिल में विचार कर देखो।

आड़ा ब्रह्मांड देय के, ऐसी जुदागी कर।
करत गुफ्तगोए हजूर, खेल ऐसा किया जोरावर।। ८९ ।।

तुम्हारे आड़े ब्रह्माण्ड का परदा लगाकर तुम्हें अपने से जुदा कर दिया और फिर उस परदे में से धनी वार्तालाप करते हैं। ऐसा विचित्र जोरावर खेल बनाया।

ना तो बैठे हो कदम तले, पर लागत ऐसे दूर।
हक आप इस्क देखावने, करत आपनसों मजकूर।। ९० ।।

नहीं तो हम श्री राजजी के चरणों तले बैठे हैं और ऐसे लगता है जैसे बहुत दूर हैं। श्री राजजी महाराज अपना इश्क दिखाने के वास्ते ही हमसे बातें करते हैं।

हक का इस्क बढ़या, इस्क अपना जरा नाहें।
जब दई इत बेसकी, तो इस्क क्यों न आवे दिल माहें।। ९१ ।।

हक का इश्क बड़ा है और अपना कुछ भी नहीं है। जब यहां पर उन्होंने संशय मिटा दिए हैं तो अब हमारे दिल में इश्क क्यों नहीं आता?

तुम कहोगे हम बेसुध हुए, दिल में रही ना खबर।
ना कछू रही सो अकल, तो इस्क आवे क्यों कर।। ९२ ।।

हे मोमिनो! आप कहोगे हम तो बेसुधी में हैं और हमारे दिल में जरा भी सुध नहीं है। न बुद्धि ही है, तो इश्क किस तरह से आवे?

ना सुध आप ना खसम, ना सुध घर गुफ्तगोए।
ज्यों जीवत मुरदे भए, रूहें क्यों कर बल होए।। ९३ ।।

हमें न अपनी सुध है न घर की, न श्री राजजी महाराज की और न वहां के वार्तालाप की। हम तो जिन्दा ही मर गए। ऐसे में जागृत होने के लिए बल कहां से आए?

आप भूले बेसक, बेसक भूले खसम।
बेसक भूले बुध वतन, पर हकें बेसक दिया इलम।। ९४ ।।

हे मोमिनों! तुम निश्चित अपने आपको, धनी को, अपने घर को और बुद्धि को भूल गए, परन्तु श्री राजजी महाराज ने तुम्हें सब संशय मिटा देने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान (तारतम) दिया है।

मुए भी इत बेसक, और जिए भी बेसक।
सहूर भी बेसक दिया, दिया इलम बेसक हक।। ९५ ।।

इस संसार में आकर बेशक हम मर भी गए और जिन्दा भी हो गए, पर धनी ने हमको विवेक भी दिया और जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भी दिया।

Nijanand App

तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार।। ९६ ।।

जब हमने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान प्राप्त कर लिया, तो हम सावचेत हो गए। श्री राजजी ने ऐसी बेशकी दी कि अब किसी प्रकार का कोई संशय रहा ही नहीं।

इनहीं बात की हांसी है, उड़त ना फरामोस।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस।। ९७ ।।

अब इसी बात की हंसी है कि फरामोशी की नींद क्यों नहीं उड़ती? नहीं तो जब बेशक हो गए तो हाय! हाय! हे मोमिनो! फिर भी तुम्हें होश नहीं आता!

ऐही हांसी इसही बात की, फरामोसी में जाग्रत।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इस्कें करी जो इत।। ९८ ।।

हंसी इस बात की है कि फरामोशी में भी जाग रहे हैं। धनी के इस इश्क ने हमारी ऐसी हालत कर दी है कि जाग जाने में भी अब कोई संशय नहीं, अर्थात् परमधाम में फरामोशी और खेल में जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हैं।

बैठाए बेसक अर्स में, और जगाए बेसक।
हांसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इस्क।। ९९ ।।

बेशक हम परमधाम में बैठे हैं और बेशक हम तारतम वाणी से यहां जागृत हो गए। हंसी भी बेशक हुई, क्योंकि इश्क नहीं आया।

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत।। १०० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारे ऊपर जो खेल में पल-पल बीत रहा है, वह सब श्री राजजी महाराज का इश्क ही है जो हर पल तुम्हारे ऊपर मेहर बरसा रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७०५ ॥

बुलाए ल्याओ तुम रूहअल्ला

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।। १ ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी आशिक कहलाने वाली रूहों को जो खेल में हैं, उनको बुलाकर लाओ। उन्होंने परमधाम में इश्क का रब्द किया था (उनको इश्क की पहचान हो गई होगी)। उन्हें याद कराना कि श्री राजजी महाराज बुला रहे हैं।

रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर।
उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानीजी से घर (परमधाम) की यही बातें कीं कि रूहें खेल में आईं हैं, उन्हें बुला लाओ।

Nijanand App

तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार।। ९६ ।।

जब हमने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान प्राप्त कर लिया, तो हम सावचेत हो गए। श्री राजजी ने ऐसी बेशकी दी कि अब किसी प्रकार का कोई संशय रहा ही नहीं।

इनहीं बात की हांसी है, उड़त ना फरामोस।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस।। ९७ ।।

अब इसी बात की हंसी है कि फरामोशी की नींद क्यों नहीं उड़ती? नहीं तो जब बेशक हो गए तो हाय! हाय! हे मोमिनो! फिर भी तुम्हें होश नहीं आता!

ऐही हांसी इसही बात की, फरामोसी में जाग्रत।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इस्कें करी जो इत।। ९८ ।।

हंसी इस बात की है कि फरामोशी में भी जाग रहे हैं। धनी के इस इश्क ने हमारी ऐसी हालत कर दी है कि जाग जाने में भी अब कोई संशय नहीं, अर्थात् परमधाम में फरामोशी और खेल में जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हैं।

बैठाए बेसक अर्स में, और जगाए बेसक।
हांसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इस्क।। ९९ ।।

बेशक हम परमधाम में बैठे हैं और बेशक हम तारतम वाणी से यहां जागृत हो गए। हंसी भी बेशक हुई, क्योंकि इश्क नहीं आया।

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत।। १०० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारे ऊपर जो खेल में पल-पल बीत रहा है, वह सब श्री राजजी महाराज का इश्क ही है जो हर पल तुम्हारे ऊपर मेहर बरसा रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७०५ ॥

बुलाए ल्याओ तुम रूहअल्ला

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।। १ ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी आशिक कहलाने वाली रूहों को जो खेल में हैं, उनको बुलाकर लाओ। उन्होंने परमधाम में इश्क का रब्द किया था (उनको इश्क की पहचान हो गई होगी)। उन्हें याद कराना कि श्री राजजी महाराज बुला रहे हैं।

रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर।
उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानीजी से घर (परमधाम) की यही बातें कीं कि रूहें खेल में आईं हैं, उन्हें बुला लाओ।

Nijanand App

हक बका का बातून, जो किया रूहों सों गुझ।
केहेलाइयां बातें छिपियां, खिलवत करके मुझ।।३।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि अखण्ड घर में जो रूहों से वार्तालाप किया था, उन गुप्त बातों को याद दिलाना, जो मेरे साथ इकट्ठे बैठकर की थीं।

मैं वास्ता कहूं तुमको, उतरियां कारन इन।
इनों रब्द किया इस्क का, आगूं मेरे बीच वतन।।४।।

श्री राजजी श्यामाजी से कहते हैं कि मैं तुमसे विनय करके कहता हूं कि रूहों ने मेरे सामने परमधाम में इश्क का रब्द किया था। इस कारण वह खेल में गई हैं।

करी रूहों मसलहत मिल के, कहे हमको प्यारे हक।
और बड़ीरूह प्यारी हमको, ए बात जानो मुतलक।।५।।

सब रूहों ने मिलकर, सलाह की और कहा कि हमको श्री राजजी महाराज प्यारे हैं और श्यामाजी भी हमको प्यारी हैं, यह बात निश्चित जानो।

बड़ीरूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक।
और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक।।६।।

श्री श्यामाजी महारानी कहते हैं कि मुझे मेरे महिमा युक्त श्री राजजी प्यारे हैं और मेरे ही अंग रूहें मुझे प्यारी हैं, यह बात निश्चित जानो।

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक।
बोहोत प्यारी बड़ीरूह मुझे, मैं तुमारा आसिक।।७।।

श्री राजजी ने कहा कि तुम रूहें मेरे नूरी तन के अंग हो। मुझे श्यामा महारानी बहुत प्यारी हैं और मैं तुम्हारा आशिक हूं।

प्यार हक का ज्यादा हमसों, ए उपजी रूहों दिल सक।
इस्क हमारा हक सों, क्या नहीं हक माफक।।८।।

रूहों के दिल में यह संशय पैदा हो गया कि हमसे ज्यादा धनी का इश्क कैसे हो सकता है? क्या हमारा इश्क श्री राजजी के बराबर भी नहीं है?

और भी ए रूहों कह्या, हक प्यारे हैं हमको।
और प्यारी बड़ीरूह, जरा सक नहीं इनमों।।९।।

रूहों ने यह भी कहा कि श्री राजजी महाराज हमें प्यारे हैं और बड़ी रूह श्यामाजी भी हमें प्यारी हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।

तब ए बात सुन हकें कह्या, मैं प्यारा हों तुमको।
पर मैं आसिक अरवाहों का, सो कोई जानत नहीं तुममों।।१०।।

इस बात को सुनकर श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं तुमको अवश्य ही प्यारा हूं, परन्तु मैं तुम्हारा आशिक हूं जो तुममें से कोई जानता नहीं है।

Nijanand App

तुम ज्यादा प्यार कह्या अपना, हादी कहे मेरा अधिक।
मैं कह्या प्यार मेरा ज्यादा, तब तुमें उपजी सक।। ११ ।।

हे रूहो! तुमने अपना प्यार ज्यादा कहा और श्यामा महारानी जी कहती हैं कि प्यार मेरा अधिक है, परन्तु जब मैंने कहा कि मेरा प्यार ज्यादा है तो तुम्हें संशय हो गया।

तुम रूहें मेरे नूर तन, सो वाहेदत के बीच एक।
इस्क बेवरा बका मिने, क्यों पाइए ए विवेक।। १२ ।।

हे रूहो! परमधाम में हमारी एकदिली है और तुम सब मेरे नूरी तन हो, इसलिए अखण्ड परमधाम में इश्क का ब्यौरा कैसे हो सकता है?

तुम बड़ा इस्क कह्या अपना, मेरा न आया नजर।
खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर।। १३ ।।

तुमने अपने इश्क को बड़ा कहा है, पर मेरा इश्क तुम्हें दिखाई नहीं दिया, इसलिए तुमको खेल दिखाया है। अब विचार करके देखो।

ए बेवरा बीच बका मिने, इस्क का न होए।
दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बका में सोए।। १४ ।।

अखण्ड परमधाम में इश्क का ब्यौरा नहीं हो सकता, इसलिए तुमको परमधाम से जुदाई दी है।

छिपाइयां अपनी मेहेर में, देखाया और आलम।
देखो कौन आवे दौड़ अर्स में, लेय के इस्क खसम।। १५ ।।

अपने चरणों तले तुम्हें बिठा रखा है और तुम्हें दूसरी दुनियां दिखाई। अब देखते हैं कि मेरा इश्क लेकर परमधाम कौन दौड़कर आता है?

रूहों ऐसा खेल देखाऊं मैं, जित झूठे झूठ पूजत।
ढूंढ़ें अव्वल आखिर लग, तो हक न कहूं पाइयत।। १६ ।।

हे रूहो! मैं ऐसा खेल दिखाऊंगा जहां झूठे आदमी झूठ की ही पूजा करते हैं और शुरू से आखिर तक पारब्रह्म को ढूंढ़ते हैं, पर किसी को मिलता नहीं है।

आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पुजात।
अर्स साहेब कायम की, कहूं सुपने न पाइए बात।। १७ ।।

तुम भी ऐसे झूठे संसार में आकर फंस गये हो। जहां पानी, पत्थर, आग की पूजा होती है। जहां पर अखण्ड परमधाम की, पारब्रह्म की सपने में भी सुध नहीं मिलती।

आइयां तिन आलम में, जित हक को न जानत कोए।
पूजें खाहिस हवाए को, जो कोई इनमें बुजरक होए।। १८ ।।

ऐसी दुनियां में आ गए हो जहां पारब्रह्म को कोई नहीं जानता। सभी अपनी झूठी इच्छा को पूरा करने के लिए इस संसार के सबसे बड़े मालिक भगवान विष्णु और निराकार की पूजा करते हैं।

झूठे मोहोरे जो खेल के, मिल गैयां माहें तिन।
कबीला कर बैठियां, कहे एह हमारा वतन।। १९ ।।

इस संसार के अगुए, ज्ञानी, धर्माचार्य झूठे हैं। रूहें भी उनमें जाकर मिल गईं और कुटुम्ब बनाकर बैठ गईं और कहती हैं कि यही हमारा घर है।

Nijanand App

समझाईयां समझें नहीं, मानें नहीं फुरमान।
कहें कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान।। २० ।।

अब समझाने पर भी समझते नहीं हैं और श्री राजजी महाराज के हुकम को नहीं मानते हैं। कहते हैं कि तुम कौन, हम कौन, हमारा तुम्हारा नाता ही क्या है?

ए सोई हमारा साहेब, जो बड़कों दिया बताए।
ए पत्थर पानी आग है, पर हमसों छोड़्या न जाए।। २१ ।।

हमारे दादा-परदादा ने जो भगवान बताया है, वही हमारा परमात्मा है। यह आग, पानी, पत्थर हैं। पर इसे नहीं छोड़ सकते (क्योंकि हमारे बड़ों का खुदा है)।

बड़के हमारे कदीम के, पूजत आए ए।
सो क्यों छूटे हमसे, रब बाप दादों का जे।। २२ ।।

हमारे बुजुर्ग सदा से जिसकी पूजा करते आए हैं, वह हमारा खानदानी परमात्मा है। उसे कैसे छोड़ें?

रब रसूल बतावे गैब का, हम पूजें जाहेर।
हम बातून को पोहोंचे नहीं, देखें नजर बाहेर।। २३ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि पारब्रह्म अतीत में छिपे हैं जो दिखाई नहीं देते। हमारा खुदा मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारों में बैठा है। उसकी हम पूजा करते हैं। हम छिपे परमात्मा को जो नजर नहीं आता, नहीं मानते। हम तो परमात्मा को सामने देखकर पूजते हैं (हम प्रत्यक्ष की पूजा करते हैं, परोक्ष की नहीं)।

केतिक करें लड़ाइयां, सामी देवें फरेब।
कौन रसूल कौन रूहअल्ला, कौन वेद कौन कतेब।। २४ ।।

कितने लोग आपस में लड़ाइयां लड़ते हैं और कितने ही सामने वाले को धोखा देते हैं। कहते हैं, अरे जा, जा, कहां का रसूल, कहां के रूहअल्लाह, कहां के वेद और कहां के कतेब लगा रखे हैं।

इन हाल जो दुनियां, ए गईयां तिन में मिल।
मोहे इस्क बिना पावें नहीं, रूहों ऐसी भई मुस्किल।। २५ ।।

ऐसे हालात की जो दुनियां है, उसी में मोमिन भी आकर मिल गए। श्री राजजी कहते हैं कि रूहें ऐसे संकट में फंस गई हैं कि वह मुझे बिना इश्क के नहीं पा सकतीं।

कठिन हाल है रूहों का, पर तुम विरचो जिन।
भूल गईयां उनें सुध नहीं, हांसी एही मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी श्री श्यामाजी से कहते हैं कि रूहें बड़े संकट में फंसी पड़ी हैं, पर तुम भी वहां जाकर फंस नहीं जाना। रूहें तो जाकर खेल में भूल गई हैं और उन्हें सुध नहीं है। इसी बात की हंसी उन पर होगी।

बड़ी हांसी इत होएसी, जब सब होसी रोसन।
खेल खुसाली इत होएसी, इस्क बेवरे इन।। २७ ।।

जब सब रूहें परमधाम में जागृत हो जाएंगी तब सब से बड़ी हंसी यहां परमधाम में होगी। इश्क का ब्यौरा हो जाएगा और खेल की चर्चा से खूब आनन्द आएगा।

Nijanand App

एक रोसी एक हंससी, होसी खूबी बड़ी खुसाल।
बिना इस्क बीच अर्स के, कोई देखे न नूरजमाल।। २८ ।।

एक सखी रोएगी, एक हंसेगी। इस तरह से बड़ा आनन्द आएगा। इश्क के बिना कोई भी ब्रह्मसृष्टि परमधाम नहीं जा सकती और धनी के दर्शन नहीं कर सकती।

रोसी इनहीं हाल में, वास्ते हांसी के।
मुदा सब हांसीय का, फरामोसी का जे।। २९ ।।

हंसी के वास्ते ही यहां की हालत में पश्चाताप करेगी। यह फरामोशी का सारा मुद्दा हंसी के लिए है।

रूहअल्ला एता कहियो, तुम मांग्या सो फरामोस।
जब इस्क ज्यादा आवसी, तब आवसी माहें होस।। ३० ।।

हे श्यामा महारानी! तुम जाकर इतना कहना कि तुमने फरामोशी का खेल मांगा था। तुमको जब ज्यादा इश्क आएगा तब तुम परमधाम में होश में आओगी।

मैं छिपा हों इनसे, रूहें नजर में ले।
वह देखत झूठा आलम, मोको देखत नाहीं ए।। ३१ ।।

मैं रूहों को अपने चरणों तले बिठाकर छिप गया हूं। अब यह रूहें झूठे संसार को देख रही हैं, मुझे नहीं देखतीं।

जब इस्क इनों आवसी, तब देखेंगे मुझको।
इस्क बिना इन अर्स में, मैं मिलों नहीं इनसों।। ३२ ।।

इनको जब इश्क आएगा तब मुझे देखेंगी। बिना इश्क के परमधाम में मैं इनसे नहीं मिलता।

रब्द रूहों ने हकसों, किया इस्क का जोए।
तो अर्स में इस्क बिना, पैठ न सके कोए।। ३३ ।।

रूहों ने इश्क का ही रब्द किया था। अब इसलिए बिना इश्क के परमधाम में कोई नहीं आ सकता।

इनों रब्द किया इस्क का, हम जैसा हक का नाहें।
दई फरामोसी इन वास्ते, देखों कैसा इस्क इनों माहें।। ३४ ।।

रूहों ने कहा था कि हमारे जैसा इश्क श्री राजजी महाराज का नहीं है, इसलिए इनको फरामोशी दी है ताकि देखें, इन में कैसा इश्क है।

ऐसी देखाई दुनियां, जित कोई हक को जानत नाहें।
काहूं तरफ न पाइए अर्स की, बैठे बका बैत के माहें।। ३५ ।।

इन रूहों को ऐसी दुनियां दिखाई है जहां पारब्रह्म को कोई नहीं जानता है और न किसी को परमधाम की पहचान है। यह यहां इसी को अखण्ड घर मानकर बैठे हैं।

पार न अर्स जिमीय का, बैठियां कदम तले इत।
ऐसा पट आड़ा किया, जानूं कहूं गईयां हैं कित।। ३६ ।।

परमधाम की जमीन बेहिसाब है। यह मेरे चरणों के तले बैठी हैं। इनके सामने फरामोशी का ऐसा परदा दे दिया है कि लगता है कि बाहर गई हैं।

Nijanand App

जब याद तुमें मैं आऊंगा, तबहीं बैठोगे जाग।
गए आए कहूं नहीं, सब रूहें बैठीं अंग लाग।। ३७ ।।

जब मैं तुम्हें याद आऊंगा तब तुम जागकर बैठोगी। रूहें कहीं आई गई नहीं हैं। सब चरणों के तले अंग से अंग लगाकर बैठी हैं।

मैं लाड़ किया रूहन सों, वास्ते इस्क इन।
क्यों न लें मेरा इस्क, अंग असलू मेरे तन।। ३८ ।।

मैंने इश्क के वास्ते ही रूहों से लाड़ किया है। जब यह रूहें मेरे तन के अंग हैं तो यह मेरा इश्क क्यों नहीं लेतीं?

बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अर्स में मिल।
एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल।। ३९ ।।

इन रूहों ने मेरे साथ परमधाम में मिलकर बहुत लाड़ किए। मैंने इनके दिल का प्यार देखने के लिए एक लाड़ किया।

मैं फुरमान भेज्या है अव्वल, हाथ अमीन रसूल।
इमाम भेज्या रूहों वास्ते, जिन जावें ए भूल।। ४० ।।

मैंने शुरू में सत्य निष्ठ (ईमानदार) रसूल साहब को कुरान देकर भेजा और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी को कुरान के छिपे रहस्य खोलने के लिए भेजा ताकि रूहें भूल न जाएं।

याद दीजो अरवाहों को, जो मैं करी खिलवत।
सो ए लिखी फुरमान में, रमूजें इसारत।। ४१ ।।

हे श्यामा महारानी! रूहों को जाकर याद दिलाना जो मैंने तुमसे बातें की हैं। वह सब बातें कुरान में लिखी हैं, परन्तु हैं सब इशारों में।

अव्वल बातें जो अर्स की, जाए कहियो तुम।
फुरमान पेहेले भेजिया, लिखी हकीकत हम।। ४२ ।।

हे श्यामा महारानी! सबसे पहले जाकर तुम परमधाम की बात कहना और फिर कहना कि हमने सारी हकीकत कुरान में लिखकर तुम्हारे पास भेजी है।

बातें बका में जो हुई, जब उनों होसी रोसन।
तब तुरत ईमान ल्यावसी, जो मेरे हैं मोमिन।। ४३ ।।

यह अखण्ड परमधाम की बातें जब उन्हें मालूम होंगी तो मेरी जो रूहें हैं, वह तुरन्त ईमान लाएंगी।

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर।। ४४ ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान मोमिनों में जाकर जाहिर करो। मैं अखण्ड घर से बाहर नहीं हूं और मोमिनों के लिए सेहेरग से नजदीक हूं (उनके दिल में बैठा हूं)।

तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर।
ए याद करो इन इस्क को, जो अपन करी मजकूर।। ४५ ।।

तुम मेरे चरणों के तले बैठी हो। कहीं नहीं गई हो, इसलिए इस इश्क की बात को याद करो जिसकी आपस में चर्चा की है।

Nijanand App

इत जो करी मजकूर, अजूं सोई है साइत।
चार घड़ी दिन पीछला, तुम जानो हुई मुद्दत।।४६।।

यहां जो आपस में बातचीत हुई है अभी वही क्षण है। (अर्थात् सायं साढ़े चार बजे का), परन्तु तुम जान रहे हो यहां मुद्दत बीत गई है।

जों रब्द किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन।
रात दिन ना पल घड़ी, सोई बात सोई खिन।।४७।।

तुमने परमधाम में जहां बैठकर इश्क किया था, अभी भी तुम वहीं बैठे हो। रात, दिन, पल, घड़ी कुछ नहीं बीता। वही बात हो रही है, वही क्षण है।

याही अजमाइस वास्ते, खेल देखाया ए।
जब इलम मेरे बेसक हुई, तब दौड़सी इस्क ले।।४८।।

यह तुम्हारे इश्क की पहचान के वास्ते खेल दिखाया है। जब मेरी जागृत बुद्धि की वाणी से बेशक हो जाओगी, तब इश्क लेकर दौड़ोगी।

नाम मेरा सुनते, और सुनत अपना वतन।
सुनत मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन।।४९।।

मेरा नाम सुनकर अपने घर की बात सुनकर तथा रूहों के मिलावे की बात सुनकर तुरन्त अपने असल तन परआतम की याद आ जाएगी।

सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क।।५०।।

जिनको श्री राजजी महाराज का, श्यामा महारानी का तथा अपने घर परमधाम का संशय मिट जाएगा। उनको इश्क क्यों नहीं आएगा।

सांच झूठ में मिल गईयां, तुरत होसी तफावत।
करसी पल में बेसक, ऐसा इलम मेरी न्यामत।।५१।।

यह सच्चे मोमिन झूठे संसार में जाकर मिल गये हैं। मेरा जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान एक पल में इनके संशय दूर कर देगा। तब झूठ और सत्य के फर्क का पता चल जाएगा। यह ऐसी मेरी न्यामत है।

अजमावने अरवाहों को, हकें दिया वास्ते इन।
अव्वल फरामोसी देय के, इलमें खोले दीदे बातन।।५२।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को आजमाने के वास्ते ही पहले फरामोशी दी फिर तारतम ज्ञान देकर बातूनी नजर खोली।

बातून खुले ऐसा हुआ, सेहेरग से नजीक हक।
तुम बैठे बीच अर्स के, कदम तले बेसक।।५३।।

बातूनी नजर खुलने से पारब्रह्म सेहेरग से नजदीक हो गए और तुम परमधाम में पारब्रह्म के चरणों तले बैठी हो। इससे संशय मिट गए।

Nijanand App

चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ।।५४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अखण्ड परमधाम के ठौर-ठिकाने का पता नहीं था। अपने चरणों तले बिठाकर ऐसा श्रेष्ठ (कमाल का) तारतम ज्ञान दे दिया।

इलम हक के बेसकी, बेसक आवे सहूर।
बेसक पेहेचान हक की, बरस्या बेसक बका नूर।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी संशय मिटाने वाली है। इससे विवेक आ जाता है तथा श्री राजजी महाराज की पहचान हो जाती है और अखण्ड परमधाम के सुखों की वर्षा होती है।

बेसक असल सुख की, आवे बेसक रूहों इलम।
जरे जरे की बेसकी, जो बीच नजर खसम।।५६ ।।

तारतम ज्ञान से श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठी रूहों को असल सुख की, परमधाम के कण-कण की बेशकी हो जाएगी।

बेसक देखी फरामोसी, बेसक गिरो मोमिन।
बेसक फुरमान रमूजें, पाई बेसक बका वतन।।५७ ।।

रूहों ने फरामोशी का खेल देखा है और मोमिनों के वास्ते जो श्री राजजी महाराज ने कुरान में इशारतें लिखी हैं और अखण्ड परमधाम हमारा घर है, इन सब बातों में कोई संशय नहीं रह जाएगा।

बेसक ठौर कादर, पाई बेसक कुदरत।
बेसक खेल जो मांगया, बेसक बातें उमत।।५८ ।।

अक्षर ब्रह्म का धाम तथा अक्षर ब्रह्म की योगमाया जिससे खेल बना है, रूहों द्वारा खेल मांगने की हकीकत और उनके इश्क रब्द की बातों में किसी प्रकार का संशय नहीं रहेगा।

बेसक हकें देखाइया, बेसक करी मजकूर।
बेसक रद-बदल करी, हुआ बेसक इलम जहूर।।५९ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल दिखाया है, मोमिनों ने वार्तालाप किया है और इश्क रब्द श्री राजजी से किया है। तारतम वाणी से इन सबके संशय मिट गए।

बेसक जगाई फरामोस में, बेसक दे इलम।
होसी रूहें बका की बेसक, ले बेसक इलम खसम।।६० ।।

श्री राजजी महाराज ने फरामोशी में जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया जिससे परमधाम की रूहों के संशय मिट गए। ऐसा श्री राजजी महाराज का बेशक इलम है।

भुलाइयां खेल में बेसक, हुआ बेसक बेवरा ए।
क्यों ना लें इस्क बेसक, कहाए बेसक संदेसे।।६१ ।।

बेशक श्री राजजी महाराज ने रूहों को खेल में भुलाया। जिससे इश्क का बेशक ब्यौरा हुआ। जब श्री राजजी महाराज ने बेशक जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भेज दिया तो रूहें इश्क लेकर बेशक क्यों न हों?

Nijanand App

रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक।
इस्क बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक।।६२ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज ने अपना बेशक पैगाम कुरान भेजा और बड़ीरूह श्यामाजी महारानी को भेजकर कहलाया कि बेशक इश्क लेकर हे रूहों, वापस परमधाम आ जाना।

इस्क रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इस्क बेसक।
सब थें इस्क बढ़्या, बेसक इस्क जो हक।।६३ ।।

रूहों का इश्क कम है, श्यामा महारानी का इश्क ज्यादा है और श्री राजजी महाराज का इश्क सबसे बड़ा है।

महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल।।६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज के इश्क का ब्यौरा कमाल का है। हमारी फरामोशी की अवस्था में भी श्री राजजी महाराज का इश्क मिलता रहा।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ७६९ ।।

सूरत अर्स अजीम की बातूनी रोसनी

रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान।
पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर श्यामा महारानी को भेजा है। तुम इनकी पहचान क्यों नहीं करते?

अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब।। २ ।।

परमधाम की जो रूहें है, वह खेल में उलझ गई हैं। श्यामा महारानी ने वेद-कतेब की हकीकत कहकर उनकी उलझनों को मिटाकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं।

मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन।
दई फरामोसी हांसीय को, बीच अपने अर्स मोमिन।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर इश्क की बातें कीं और इसलिए अपने घर परमधाम में मोमिनों को हंसी के वास्ते बेसुधी दी।

ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए।
ओ तुमें ना चीन्ह हीं, ना तुमें ओ चिन्हाए।। ४ ।।

श्री राजजी ने कहा मैं तुम्हें चरणों तले बिठाकर ऐसी दुनियां दिखाऊंगा जहां तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा और न तुमको पहचान होगी।

मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले।
पाओ ना अर्स या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए।। ५ ।।

मैं तुम्हें अपनी नजर में लेकर छिप जाऊंगा। फिर तुम अपने घर को तथा मुझे नहीं पा सकोगे।

Nijanand App

रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक।
इस्क बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक।। ६२ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज ने अपना बेशक पैगाम कुरान भेजा और बड़ीरूह श्यामाजी महारानी को भेजकर कहलाया कि बेशक इश्क लेकर हे रूहों, वापस परमधाम आ जाना।

इस्क रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इस्क बेसक।
सब थें इस्क बढ़्या, बेसक इस्क जो हक।। ६३ ।।

रूहों का इश्क कम है, श्यामा महारानी का इश्क ज्यादा है और श्री राजजी महाराज का इश्क सबसे बड़ा है।

महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल।। ६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज के इश्क का ब्यौरा कमाल का है। हमारी फरामोशी की अवस्था में भी श्री राजजी महाराज का इश्क मिलता रहा।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७६९ ॥

सूरत अर्स अजीम की बातूनी रोसनी

रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान।
पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर श्यामा महारानी को भेजा है। तुम इनकी पहचान क्यों नहीं करते?

अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब।। २ ।।

परमधाम की जो रूहें है, वह खेल में उलझ गई हैं। श्यामा महारानी ने वेद-कतेब की हकीकत कहकर उनकी उलझनों को मिटाकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं।

मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन।
दई फरामोसी हांसीय को, बीच अपने अर्स मोमिन।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर इश्क की बातें कीं और इसलिए अपने घर परमधाम में मोमिनों को हंसी के वास्ते बेसुधी दी।

ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए।
ओ तुमें ना चीन्ह हीं, ना तुमें ओ चिन्हाए।। ४ ।।

श्री राजजी ने कहा मैं तुम्हें चरणों तले बिठाकर ऐसी दुनियां दिखाऊंगा जहां तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा और न तुमको पहचान होगी।

मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले।
पाओ ना अर्स या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए।। ५ ।।

मैं तुम्हें अपनी नजर में लेकर छिप जाऊंगा। फिर तुम अपने घर को तथा मुझे नहीं पा सकोगे।

Nijanand App

ढूंढ़ोगे तुम मुझको, बोहोतक सहूर कर।
मेरा ठौर न पाओ या मुझे, क्योंए न खुले नजर।। ६ ।।

तुम बहुत विचार करके मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु मुझे या परमधाम को किसी तरह से भी नहीं पाओगे।

आंखां होसी खुलियां, मेरी बातां करो माहों-माहें।
ढूंढ़ोगे माहें बाहेर, और पावे ना कोई क्याहें।। ७ ।।

तुम्हारी आंखें खुली होंगी और आपस में मेरी बात करोगी। पिंड ब्रह्मांड में ढूंढ़ोगी। पर कोई भी कहीं नहीं पाओगी।

क्या कहूं भेजोगे हमको, के इतथें करोगे दूर।
के इतहीं बैठे देखाओगे, हमको अपने हजूर।। ८ ।।

रूहें कहती हैं कि क्या हमको कहीं बाहर भेजोगे या यहां से कहीं दूर करोगे या हमको अपने चरणों में बिठाकर खेल दिखाओगे।

इतहीं बैठे देखोगे, खेल हांसी का फरामोस।
सहूर करोगे बोहोतक, पर आए न सको माहें होस।। ९ ।।

श्री राजजी कहते हैं कि यहीं बैठे-बैठे देखोगे। यह खेल हंसी का है, इसलिए बेहोशी में देखोगे। प्रयास भी बहुत करोगे मगर होश में नहीं आ सकोगे।

ज्यों जाने बेसुध हुए, जैसे अमल चढ़्या जोर।
सो तुम क्यों ए ना सुनोगे, हादी करे बोहोतक सोर।। १० ।।

तुम ऐसी बेहोश हो जाओगी कि जैसे ज़ोरदार नशा चढ़ा हो। श्यामा महारानी बहुत पुकारेंगी, परन्तु तुम किसी तरह से नहीं सुनोगी।

न तुमें अमल ना नींद कछू, पर ऐसा खेल हांसी का ए।
खेलें हंसें बातें करें, याद आवे ना हक घर जे।। ११ ।।

तुम्हें न तो नशा होगा, न नींद। यह इस तरह की हंसी का खेल होगा। तुम खेलोगी, हंसोगी, बातें करोगी, परन्तु मेरी और परमधाम की याद नहीं आएगी।

ऐसा इलम हादीय पे, देखावे हक वतन।
आप पाओ पल में जगावहीं, इन इलम आधे सुकन।। १२ ।।

श्री श्यामाजी महारानी का ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान होगा जो मेरी और घर की पहचान कराएगा। इनके ज्ञान के आधे शब्द से ही पाव (चौथाई) पल में जग जाओगी।

जो हुए होवें मुरदे, तिनको देत उठाए।
इन विध इलम लदुन्नी, पर तुमें न सके जगाए।। १३ ।।

मेरा तारतम ज्ञान ऐसा बलशाली होगा कि दुनियां के मुरदार (मृतप्राय) जीवों को सावचेत कर देगा, परन्तु तुम्हें नहीं जगा सकेगा।

ऐसी देखोगे दुनियां, हक न काहूं खबर।
न सुध अर्स न आपकी, कई ढूंढ़त सहूर कर।। १४ ।।

तुम ऐसी दुनियां को देखोगे, जहां हक की खबर देने वाला कोई नहीं होगा। वहां न परमधाम की सुध होगी न अपनी सुध होगी, जबकि कई लोग विचार करके ढूंढ़ेंगे।

Nijanand App

ना सुध मेरी ना वतन की, आपुस में जाओगे भूल।
ना सुध मेरे कागद की, ना सुध मेरे रसूल।। १५ ।।

तुम्हें मेरी और घर की सुध नहीं रहेगी। आपस में भूल जाओगे वहां जाकर मेरे कुरान की तथा रसूल की भी पहचान नहीं रहेगी।

लिखी इसारतें रमूजें, निसान हकीकत।
सुध कछू तुमें ना परे, भूलोगे मेरी न्यामत।। १६ ।।

कुरान में सारी हकीकत को इशारों और गुप्त शब्दों में लिखकर भेजूंगा। तुम मेरी इस न्यामत को भूल जाओगे।

ऐसा फुरमान भेजसी, और याद देसी रसूल।
जिन अंग इस्क तिनका, क्यों होसी ऐसा सूल।। १७ ।।

मैं ऐसा कुरान भेजूंगा सो रसूल साहब तुमें याद दिलाएंगे, कि जिनके अंग इश्क के हैं उनकी हालत ऐसी क्यों होगी?

भूलोगे तेहेकीक तुम, मेरी पाओ ना तुम खबर।
ए खेल देखे ऐसा होएसी, ना सुध आप ना घर।। १८ ।।

तुम निश्चित ही भूल जाओगे। मेरी ख़बर भी देने वाला कोई नहीं होगा। यह खेल देखकर ऐसा हो जाएगा कि तुम्हें अपनी और घर (परमधाम) की सुध नहीं रहेगी।

एक दूजी आपुस में, रहे ना रूह चिन्हार।
ना चीन्हो बड़ी रूह को, ना कछू परवरदिगार।। १९ ।।

तुम एक दूसरे को आपस में भी नहीं पहचान सकोगी, इसलिए बड़ी रूह श्यामाजी को और अपने धनी को न पहचान सकोगी।

रूहें कहें हांसी होसी अति बड़ी, तुम हूजो सबे हुसियार।
क्यों ए न भूलें आपन, जो खेल जोर करे अपार।। २० ।।

रूहें आपस में कहती हैं कि तुम सब होशियार हो जाना बहुत बड़ी हंसी होगी। इसमें हमें किसी तरह से भूलना नहीं है चाहे माया कितना ही जोर लगा ले।

अपन सामी हांसी करें हकसों, चले ना खेल को बल।
अपन आगूं चेतन हुइयां, रहिए एक दूजी हिल मिल।। २१ ।।

हम श्री राजजी महाराज के सामने आकर हंसी करेंगे कि तुम्हारे खेल की कुछ भी ताकत नहीं चली। हम पहले से ही सावचेत हो गए हैं, इसलिए एक दूसरे से हिल-मिलकर रहना।

जब आगूं से खबर करी, क्या करे फरेब असत।
इस्क हमारा कहां जाएसी, क्या करसी नहीं मदत।। २२ ।।

जब पहले से ही हमें खबर मिल गई है तो यह झूठी माया हमारा क्या करेगी? हमारा इश्क कहां जाएगा? क्या वह मदद नहीं करेगा?

Nijanand App

इस्क का बल भान के, क्या फरेब होसी जोर।
निसबत अपनी हकसों, क्यों देसी मरोर।। २३ ।।

क्या यह झूठा खेल इतना जोरदार होगा कि हमारे इश्क की ताकत को तोड़ देगा? हम तो श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए माया हमें कैसे हराएगी?

दूर तो कहूं जाए नहीं, बैठे पकड़ हक चरन।
तो फरामोसी बल क्या करे, आपन आगूं हुइयां चेतन।। २४ ।।

हम कहीं दूर तो जा नहीं रहे हैं। चरण पकड़कर बैठे हैं। पहले से ही सावचेत हो गए हैं। अब फरामोशी की ताकत हमारा क्या करेगी?

कहें रूहें एक दूजी को, नजीक बैठो आए।
जिन कोई जुदी परे, रहिए अंग लपटाए।। २५ ।।

रूहें आपस में एक दूसरे से कहती हैं कि पास में आकर अंग से अंग लिपटाकर बैठो जिससे कोई अलग न हो जाए।

हाथों-हाथ न छोड़िए, लग रहिए अंगों अंग।
इन बिध एक दिल राखिए, कोई छोड़े ना काहू को संग।। २६ ।।

हम एक दूसरे के हाथ न छोड़ें। अंग से अंग लगाकर बैठें और इस तरह से एकदिली रखकर कोई किसी का साथ न छोड़े।

हम हमेसा एक दिल, जुदियां होवें क्यों कर।
हक खेल देखावहीं, कर आगे से खबर।। २७ ।।

हमारी सदा से एकदिली है। अलग-अलग कैसे होंगे। श्री राजजी महाराज पहले से सावचेत करके खेल दिखा रहे हैं।

अंग जुदे ना हो सकें, तो क्यों होए जुदे दिल।
एक जरा जुदे ना होए सकें, अंग यों रहें हिल मिल।। २८ ।।

जब हमारे तन जुदा नहीं हो सकते तो दिल कैसे जुदा होंगे? इस तरह से तन और दिल हिल-मिल गए हैं, इसलिए एक पल के लिए भी हम अलग नहीं होंगे।

रूहें कहें एक दूजी को, जिन अंग जुदा करो कोए।
इन विध रहो लपटाए के, सब एक वजूद ज्यों होए।। २९ ।।

रूहें एक दूसरे से कहती हैं कि कोई भी अपने अंग को जुदा मत करना। इस तरह से लिपट जाओ जैसे हम सब एक तन हों।

रूहें रब्द कर बैठियां, जानें सामी हांसी करें हकसों।
पर हकें हांसी ऐसी करी, सुध जरा न रही किनमों।। ३० ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के सामने रब्द करके यह विचार कर कि हम खेल के बाद श्री राजजी पर हंसी करेंगी, बैठ गयीं तब श्री राजजी महाराज ने ऐसी हंसी की कि किसी को थोड़ी सुध भी नहीं रह गई।

Nijanand App

एक वजूद होए बैठियां, खेलें ऐसी दई भुलाए।
कौल फैल हाल सब जुदे, दिल ऐसे दिए फिराए।। ३१ ।।

सब एक तन होकर बैठी हैं, परन्तु खेल ने ऐसा भुला दिया कि सबकी कहनी, करनी, रहनी अलग-अलग हो गई। ऐसे हमारे दिल घूम गए।

जात भांत जिनसें जुदी, जुदी जुदी जिमी पैदाए।
सब बैठियां अंग लगाए के, खेलें कहूं दिए उलटाए।। ३२ ।।

संसार में मोमिन जुदा जुदा जातियों में, रस्मों, रिवाजों में तथा अलग-अलग प्रान्तों में आ गए। परमधाम में सब अंग से अंग जोड़कर बैठे हैं, परन्तु यहां खेल में उलटी हालत होकर सब अलग-अलग हो गए।

जुदे जुदे कबीलों, कर बैठियां अपना घर।
जानें हम इत कदीम के, जुदे होवें क्यों कर।। ३३ ।।

संसार में अलग-अलग कबीलों में अपना-अपना घर बनाकर बैठ गए और मानने लग गए कि हम सदा यहीं के है। यहां से अलग कैसे हो सकते हैं?

सो भी कबीले स्वारथी, दुख आए न कोई अपना।
जात वजूद भी रंग बदले, ज्यों फना होत सुपना।। ३४ ।।

वह भी ऐसे स्वार्थी कबीले हैं कि संकट में कोई भी अपना नहीं बनता। दुःख आने पर सब रिश्तेदार अपना रंग बदलते हैं।

रूहें सुध ना एक दूजी की, ना मिनों मिनें पेहेचान।
याद बिना जात मुद्दत, काहूं सुपने न आवें सुभान।। ३५ ।।

खेल में एक दूसरे को किसी की सुध नहीं है और न आपस में पहचान है। श्री राजजी महाराज की स्वप्न में भी याद नहीं आती। कई मुद्दतें बीत जाती हैं।

खेल तो है एक खिन का, रूहें जानें हुई मुद्दत।
कई कुरसी हुई कई होएसी, गईयां भूल मूल सोहोबत।। ३६ ।।

खेल तो एक क्षण का है। रूहें जानती हैं कि मुद्दत बीत गई। इनकी कई पीढ़ियां हो गईं। कई होंगी, परन्तु मूल परमधाम का सम्बन्ध भूल गईं।

आइयां झूठे कबीले में, भूल गईयां बका वतन।
सुख अर्स अजीम के, हाए हाए फरेब दिया दुनी इन।। ३७ ।।

झूठे कबीले में आकर अखण्ड घर को भूल गईं। परमधाम के अखण्ड सुखों को भी हाय-हाय इस झूठी दुनियां ने छल दिखाकर भुला दिया।

तिन कबीले में रेहेना, पूजें पानी आग पत्थर।
बेसहूर इन भांत के, जान बूझ जलें काफर।। ३८ ।।

झूठे कबीलों में, जहां आग, पानी, पत्थर पूजे जाते हैं, रहते हैं। ऐसी बेसमझी आई कि जान-बूझकर काफिरों की तरह जलते हैं।

Nijanand App

बड़के फना हो गए, और हाल होत फना।
आखिर फना सब पीछले, जाए गिनते रात दिना।। ३९ ।।

घर के बूढ़े लोग मर गये। जो मौजूद हैं वह मर रहे हैं। एक दिन सबको मर जाना है। ऐसे गिनती गिनते रात-दिन बीत जाते हैं।

कहें हमको इन वतन में, मौत आवेगी अब।
नफा नुकसानी हो चुकी, फेर जनम लेवें कब।। ४० ।।

कहते हैं कि हमको इसी घर में मरना है। हमारे अच्छे या बुरे कर्मों का फल हमें मिल जाएगा, अब दुबारा कब जन्म लेना है?

ऐसा मौत अपना जान के, लेत हैं नुकसान।
जाग के नफा न लेवहीं, सुन ऐसा हक फुरमान।। ४१ ।।

अपनी मौत आनी ही है यह जानकर भी अपना जीवन गंवाते हैं। इस समय में भी श्री राजजी के वचनों को सुनकर मनुष्य तन का लाभ नहीं लेते।

उमर खोवें नुकसान में, पर करें नाहीं सहूर।
याद न करें तिनको, जिनका एता बड़ा जहूर।। ४२ ।।

अपनी सारी उम्र संसार के व्यर्थ कामों में गंवा देते हैं पर विचार करके पारब्रह्म को याद नहीं करते जिनकी इतनी बड़ी साहेबी है।

कहें हिन्दू पीछे मौत के, हम जनम लेसी फेर।
जो अब हम भूलेंगे, तो नफा लेसी और बेर।। ४३ ।।

हिन्दू कहते हैं कि हम मरने के बाद फिर से जन्म लेंगे। जो इस बार भूल जाएंगे तो अगले जन्म में सुधार लेंगे।

खेल ऐसा फरेब का, सब हवा को पूजत।
सुध दोऊ को ना परी, कायम बका सुख कित।। ४४ ।।

यह ऐसा झूठा खेल है कि सब निराकार को पूजते हैं। हिन्दू मुसलमान दोनों में से किसी को अखण्ड घर के सुख कहाँ हैं, पता नहीं है।

ए तेहेकीक किने ना किया, कहावें सब बुजरक।
जेती बात ल्यावें इलम की, तिन सबों में सक।। ४५ ।।

यह सब सयाने कहते हैं, पर इस बात की निश्चय किसी ने नहीं किया। जितनी बातें ज्ञान की हैं, उन सबमें संशय लाते हैं।

ए दुनियां इन विध की, ताए एती सुध सबन।
हम सब बीच फना मिने, ठौर बका न पाया किन।। ४६ ।।

यह दुनियां इस तरह की है जिसमें सबको यह खबर है कि हम सब मर जाने वाले हैं फिर भी अखण्ड घर किसी ने प्राप्त नहीं किया।

Nijanand App

एता न जाने दुनियां, कहां से आए कौन हम।
आए कौन फरेब में, ए हुआ किन के हुकम।।४७।।

दुनियां वालों ने इतना भी नहीं जाना कि हम कौन हैं, कहां से आए हैं और किनके हुकम से कौन से झूठे संसार में आए हैं?

सब कोई कहे हुकमें हुआ, जिन हुकम किया सो कित।
सो किनहूं ना पाइया, ताए खलक गई खोजत।।४८।।

सब कोई कहता है कि संसार हुकम से बना है पर जिसने हुकम किया है वह कहां है, उसको किसी ने नहीं पाया, कई संसार के लोग खोजते रह गए।

अवतार तीर्थकर बड़े हुए, बड़े कहावें पैगंमर।
पट बका किन खोल्या नहीं, सबों कह्या खुले आखिर।।४९।।

यहां बड़े-बड़े अवतार और तीर्थंकर हुए और कई पैगम्बर हुए, किन्तु किसी ने भी अखण्ड का दरवाजा नहीं खोला। सब कहते हैं कि वक्त-ए-आखिरत में यह दरवाजे खुलेंगे।

सब पूजें खाहिस अपनी, याही फना की वस्त।
मिट्टी आग पानी पत्थर, करें याही की सिफत।।५०।।

सब अपनी-अपनी चाहना के अनुसार संसार की झूठी वस्तुओं की पूजा करते हैं। मिट्टी, पानी, आग, पत्थर को पूजकर उसी की प्रशंसा करते हैं।

झूठे झूठा राचहीं, दिल सांच न पावत।
ए सांच क्यों कर पावहीं, पेहेले दिल में न आवत।।५१।।

झूठे संसार के लोगों को झूठा ही अच्छा लगता है। इनका दिल सच्चे को नहीं पा सकता। जब दिल में सत्य का विचार नहीं आता, तो सत्य को पाएंगे कैसे?

नासूत और मलकूत लग, इनकी याही बीच नजर।
देख किताबें यों कहें, हम पाई नहीं खबर।।५२।।

इनकी नजर मृत्युलोक और बैकुण्ठ तक है। धर्मग्रन्थों को भी देखकर कहते हैं कि हमको खबर नहीं हुई।

इन बिध बोलें किताबें, देखो दिल के दीदों माहें।
कानों सुन्या सो कछुए नहीं, ए देख्या सो भी नाहें।।५३।।

दिल में विचार करके देखो। धर्म के ग्रन्थ ऐसा बोल रहे हैं कि जो कुछ दिखाई देता है या सुनाई देता है, वह कुछ नहीं है।

जान बूझ पूजें फना को, कहें एही हमारा खुदाए।
हम छोड़ें ना कदीम का, जो बड़कों पूज्या इफ्तदाए।।५४।।

जान-बूझकर नाशवान को पूजते हैं और कहते हैं कि यही हमारा कदीमी (सदा का) खुदा है। इसे हम नहीं छोड़ सकते। हमारे पूर्व जनों ने इसकी ही पूजा की है।

Nijanand App

इस्क लगावें तिनसों, जो दुख रूपी दिन रात।
कायम सुख अर्स का, कहूं सुपने न पाइए बात।।५५।।

दिन-रात दुःख देने वालों से ही प्यार करते हैं। परमधाम के अखण्ड सुखों की स्वप्न में भी कभी बात नहीं होती।

ऐसी देखाई दुनियां, जानें सांच है हमेसगी।
सांचो विचार जब कर दिया, तब झूठों भी झूठ लगी।।५६।।

हमें दुनियां ऐसी दिखाई कि लगता है कि हम सदा से ही यहीं के हैं। जब सत की पहचान करा दी तब झूठों को भी यह झूठ लगने लगी।

हुई रात अंधेरी फरेब की, फिरत चिरागें दोए।
आप अर्स हक की, इन से खबर न होए।।५७।।

यह संसार सारा अंधेरा है। इसमें चन्द्रमा और सूर्य दो दीपक फिरते हैं जिनसे अपनी, अपने घर की और पारब्रह्म की खबर नहीं मिलती।

दुनियां इन चिराग को, रोसन कर बूझत।
आप वतन हक बका की, इनसे कछू ना सूझत।।५८।।

दुनियां वाले इन सूर्य, चन्द्रमा को ही प्रकाश देने वाले देवता मानकर पूजते हैं, परन्तु इनसे अपनी, घर की तथा श्री राजजी जो अखण्ड हैं किसी की जानकारी इन दोनों से नहीं मिलती।

ढूंढ़ थके अर्स को, चौदे तबक न पाया किन।
रात फना को छोड़ के, किन देख्या न सूर रोसन।।५९।।

चौदह लोकों के लोगों ने खोज डाला और थक गए, परन्तु अखण्ड घर किसी को नहीं मिला। इस मिट जाने वाले संसार को छोड़कर किसी ने अखण्ड ज्ञान रूपी सूर्य को नहीं देखा।

चौदे तबक जुलमत से, पेहेले कही जो रात।
दिन कायम सूर अर्स की, इत काहूं न पाइए बात।।६०।।

चौदह तबक निराकार से पैदा हैं। इसे पहले ही अज्ञान के अन्धकार की रात कहा है। इसमें अखण्ड ज्ञान के सूर्य की कहीं बात भी नहीं होती जो घर परमधाम का रास्ता बताते।

सूर ऊग्या तब जानिए, ए रोसन हुआ अर्स हक।
दुनियां सब के अंग में, काहूं जरा न रही सक।।६१।।

ज्ञान का सूर्य उदय हो गया है, यह तब जाना जाए जब अखण्ड घर और श्री राजजी महाराज की पहचान मिल जाए और दुनियां के सभी लोगों में किसी भी तरह का कोई संशय न रह जाए।

अर्स बका जाहेर हुआ, तब हुई फजर।
अर्स देखाया इलमें, खुली बातून सबों नजर।।६२।।

अखण्ड घर परमधाम जब जाहिर हो जाएगा तब समझ लेना ज्ञान का सवेरा हो गया और जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान ने परमधाम दिखाकर सबकी बातूनी नजर खोल दी।

Nijanand App

हकीकत कुरान में, ए लिखी नीके कर।
सबको करसी कायम, जाहेर हुए कायम खबर।। ६३ ।।

यह हकीकत कुरान में अच्छी तरह से लिखी है कि पारब्रह्म के जाहिर होने की खबर मिलने पर कायमी सबको मिल जाएगी।

जो होसी रूहें अर्स की, तिन आवे ईमान अव्वल।
आखिर तो सब ल्यावसी, दोजख की आग जल।। ६४ ।।

जो परमधाम की रूहें होंगी उन्हें सबसे पहले ईमान आएगा। अन्त में तो दोजख की आग में जलने (पश्चाताप) के बाद तो सभी ईमान लाएंगे।

सो ताला इन मुसाफ का, क्यों खुले ईमान बिन।
खोले ताला फरेब क्यों रहे, जब उग्या बका अर्स दिन।। ६५ ।।

कुरान के छिपे भेदों को ईमान के बिना कैसे खोला जाए? यह ताला खुल जाए तथा अखण्ड परमधाम के ज्ञान का सूर्य उदय हो जाए फिर यह झूठा संसार कैसे रह पाएगा?

जोलों ताला खुले नहीं, द्वार अथरवन कतेब।
पाई ना तरफ हक बका, ना कछू खेल फरेब।। ६६ ।।

जब तक अथर्ववेद और कुरान के रहस्य नहीं खुलेंगे, तब तक न अखण्ड घर की और न झूठे संसार के खेल की पहचान होगी।

ए हकीकत जिनकी, अपनी खोले सोए।
सो खोले हक जाहेर हुआ, तब क्यों कर रेहेवे दोए।। ६७ ।।

यह जिनकी हकीकत है वही इनको खोलेंगे और उसके खुलने से ही पारब्रह्म जाहिर होंगे। तब सत्य और झूठ, अर्थात् ब्रह्मसृष्टि और संसार दोनों कैसे रहेंगे?

फरेब कछुए न रह्या, रोसन उमत करी जब।
हक अर्स जाहेर हुआ, तब कायम दुनी हुई सब।। ६८ ।।

जब ब्रह्मसृष्टियों में ज्ञान का उजाला कर दिया तब श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की सबको पहचान हो गई। फिर पहचान के बाद संसार का प्रलय होगा और सब बहिश्तों में कायम होंगे।

लिख्या दिन बका मुसाफ में, खोले बातून होसी फजर।
लिए हकीकत हैयाती, बका सुख पावें आखिर।। ६९ ।।

कुरान में संसार के अखण्ड होने की बात लिखी है। यह तभी होगा जब कुरान के छिपे रहस्य खुल जाने के बाद ज्ञान का सवेरा होगा और सबको अखण्ड की पहचान हो जाएगी। फिर सभी अखण्ड बहिश्तों के सुख पाएंगे।

कुन्जी भेजी हाथ रूहअल्ला, पर खोल न सके ए।
फुरमान खुले आखिर, हाथ सूरत हकी जे।। ७० ।।

श्यामा महारानी जी के हाथ तारतम ज्ञान की चाबी भेजी, परन्तु वह कुरान के भेद नहीं खोल सके। कुरान के छिपे रहस्य आखिर में हकी सूरत इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी से खुले।

Nijanand App

सहूर दिया साहेब ने, फुरमान भेज्या हाथ रसूल।
पावे न हकीकत मुसाफ की, ए खोलिए किन सूल।।७१ ।।

धाम धनी ने रसूल भेजा और उसके रहस्यों को खोलने के लिए तारतम ज्ञान दिया। बिना इसके कुरान के भेद कैसे खोले जाएं?

रसूल कहे फुरमान में, मेरी तीनों एक सूरत।
सो पोहोंची नजीक हक के, और कोई न पोहोंच्या तित।।७२ ।।

कुरान में रसूल साहब (हुकम का स्वरूप) कहते हैं कि मेरी बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतें एक हैं जो श्री राजजी महाराज के नजदीक पहुंचीं जहां और कोई नहीं पहुंच सका।

बसरी मलकी और हकी, माहें फैल तीनों के।
सो खोले फुरमान को, आखिर सूरत हकी जे।।७३ ।।

बसरी, मलकी और हकी तीनों सूरतों की करनी कुरान में लिखी है और यह भी लिखा है कि आखिरी हकी सूरत ही इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को खोलेगी।

और चाहे कोई खोलने, क्यों कर खोले सोए।
सो कौल खोले हक हुकमें, फैल हाल जिनों के होए।।७४ ।।

कुरान के रहस्य के भेद खोलना चाहे तो कौन खोल सकेगा। श्री राजजी महाराज का जिसे हुकम होगा अपनी करनी, रहनी से वही भेद खोलेगा।

हुआ दीदार सब मेयराज में, जो हरफ कहे हकें मुझ।
जो छिपे रखे मैं हुकमें, सो कौन जाहेर करे मेरा गुझ।।७५ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मुझे पारब्रह्म का दर्शन हुआ और मुझे नब्बे हजार हरफ कहे जिनको मैंने हुकम से छिपाकर रखा है। उस मेरे छिपे रहस्य को दूसरा कौन जाहिर करेगा?

जो हुकम हुआ जाहेर का, सो जाहेर किए मैं तब।
बाकी रखे जो हुकमें, सो हुकमें जाहेर करों अब।।७६ ।।

श्री राजजी महाराज का जब जाहिर करने का हुकम हुआ, तभी मैंने उन्हें जाहिर किया। बाकी जो हुकम से छिपाकर रखा था वह अब उनके हुकम से जाहिर करूंगा।

ए बातें सब मेयराज की, करें जाहेर तीन सूरत।
और कोई न केहे सके, ए अर्स हक न्यामत।।७७ ।।

यह सब मेयराज (दर्शन) की बातें मेरी तीन सूरत बसरी, मलकी और हकी जाहिर करेंगी। यह अखण्ड घर की न्यामत हैं। उसे और कोई जाहिर नहीं कर सकता।

और तीनों सूरत, रूहें फरिस्ते उमत।
जो आखिर इनों में गुजरी, मुसाफ में सोई हकीकत।।७८ ।।

मेरी इन तीन सूरतों में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि की जमात में आखिर तक जो गुजरेंगी वह कुरान में सब लिखा है।

Nijanand App

सो खोले आपे अपनी, हकीकत फुरमान।
खोले परदे नूर पार के, हुई अर्स पेहेचान।।७९ ।।

वह अब अपने कुरान की हकीकत को स्वयं खोलेंगे और अक्षर के पार परमधाम की पहचान अज्ञान के परदे को हटाकर कराएंगे।

सक जरा किन ना रही, जब खोले ताले ए।
हुआ सूर बका अर्स जाहेर, लिख्या मुसाफ में जे।।८० ।।

जब इस कुरान के छिपे भेदों के ताले खुल गए तब किसी को जरा भी संशय नहीं रह गया। उस समय अखण्ड ज्ञान का सूर्य परमधाम जाहिर होगा (ऐसा कुरान में लिखा है)।

ए इलम आए पीछे, नींद आवत क्यों कर।
जब सक जरा न रही, रूहों क्यों न आवे याद घर।।८१ ।।

ऐसा जागृत बुद्धि की तारतम वाणी आने के बाद भी मोमिनों को माया की चाहना क्यों लगी है? जब थोड़ा सा भी संशय बाकी नहीं रहा तो रूहों को अपने घर की याद क्यों नहीं आती?

याद करो बीच अर्स के, जो हकसों किया मजकूर।
मांग्या खेल फरामोस का, बैठ के हक हजूर।।८२ ।।

हे मोमिनो! परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने जो हमने वार्तालाप किया था, उसे याद करो। हमने श्री राजजी महाराज के चरणों में बैठकर फरामोशी का खेल मांगा था।

तुम बका सुख छोड़ के, खेल मांग्या हांसी को।
सो देखो हकीकत अपनी, हकें भेजी फुरमान मों।।८३ ।।

तुमने अखण्ड सुख को छोड़कर हंसी का खेल मांगा। वह अपनी सब हकीकत देखो जो कुरान में लिखी है।

खेल देखाया तुमको, वास्ते तफावत।
इत याद देत सुख पावने, हक बका निसबत।।८४ ।।

श्री राजजी महाराज ने तुमको फर्क दिखाने के वास्ते खेल दिखाया है। यहां पर श्री राजजी महाराज अखण्ड घर और अखण्ड सुख को पाने के वास्ते याद दिला रहे हैं।

इन झूठी जिमी में बैठाए के, देखाई हक बका निसबत।
मेहेर करी रूहों पर, देने अर्स लज्जत।।८५ ।।

इस झूठे संसार में बिठाकर श्री राजजी महाराज की अपनी निसबत की और अखण्ड घर की पहचान कराई। रूहों को परमधाम की लज्जत देने के वास्ते ही यह मेहर की है।

इन ख्वाब जिमी में बैठ के, अर्स सुख लीजे इत।
हक याद देत तिन वास्ते, सब बका न्यामत।।८६ ।।

इन झूठी जमीन में बैठकर घर के अखण्ड सुख यहीं लीजिए, इसलिए श्री राजजी महाराज अखण्ड घर की सब न्यामतों को याद दिला रहे हैं।

Nijanand App

कैसा इलम था तुम पे, पूजते थे किन को।
कैसे झूठे कबीले में थे, अब आए किनमों।। ८७ ।।

इस तारतम वाणी मिलने से पहले तुम्हारे पास कौन सा ज्ञान था, तुम किसकी पूजा करते थे, तुम कैसे झूठे परिवार में थे, अब किनके बीच आ गए हो?

कौन किया था वतन, जामें कबूं मिटी ना सक।
कौन फना सोहोबत में, कहावते थे बुजरक।। ८८ ।।

तुमने कौन सा घर बना लिया था जिसमें तुम्हारे कोई संशय कभी नहीं मिटे? किन झूठों की संगति में थे और अपने आपको बड़ा कहलवाते थे।

अब कैसा पाया हक इलम, कैसे हुए बेसक।
कैसा पाया बका वतन, कैसा पाया धनी हक।। ८९ ।।

अब तुम्हें श्री राजजी महाराज से कैसा ज्ञान मिला और किस तरह संशय रहित हुए? कैसे अखण्ड घर को पाया और कैसे सच्चे धनी को पाया?

कैसा पाया रूहों कबीला, कैसी पाई हक निसबत।
कैसे दुख से निकस के, पाई सांची न्यामत।। ९० ।।

कैसे तुमने अपने सुन्दरसाथ के परिवार को पाया? कैसे तुमने अपने धाम धनी के सम्बन्ध की पहचान की? तुमने कैसे दुःख से निकल कर सच्ची न्यामत पाई है?

कैसे फना में हुते, आए कैसे बका वतन।
आए कैसे सुख में, छूटी कैसी जलन।। ९१ ।।

तुम कैसें मिटने वाले संसार में थे? अब कौन से अखण्ड घर में आ गये हो? तुम कैसे सुख में आ गये हो? तुम्हारी संसार की जलन कैसे शान्त हो गई है?

कैसे झूठे घर हुते, पाई कैसी अर्स मोहोलात।
जागत हो के नींद में, कछू विचारत हो ए बात।। ९२ ।।

तुम कैसा झूठा घर बनाकर बैठे थे? अब कैसी अखण्ड घर की मोहोलातें मिली हैं? इन सबके बाद विचार करो कि तुम जागृत अवस्था में हो कि नींद में?

कौन जंगल गुमराह में हुते, कैसा पाया अर्स बाग।
नींद उड़ाओ विचार के, क्यों ना देखो उठ जाग।। ९३ ।।

तुम कैसे जंगलों में भटकते थे? अब अखण्ड घर के बगीचे कैसे मिले? विचार करके अपनी माया की नींद उड़ाओ और जागृत होकर उठकर देखो।

चरकीन जिमी में बैठ के, कैसी लेते थे वाए।
अब वाए झरोखे अर्स के, कैसी लेत हो अब आए।। ९४ ।।

इस नरक भरे संसार में बैठकर कैसी गन्दी बदबू की हवा लेते थे? अब परमधाम के झरोखे से आने वाली हवा कैसी लग रही है?

Nijanand App

कौन बदबोए में हुते, अब आई कौन खुसबोए।
सहूर अपने दिल में, तौल देखो ए दोए।। ९५ ।।

तब कौन सी बदबू में थे? अब कौन सी खुशबू आई? अब अपने दिल में विचारकर दोनों को तौल कर देखो।

ए कैसा था दुख वजूद, दुख में थे रात दिन।
अब पाया सुख अर्स ठौर में, और कैसे अर्स तुम तन।। ९६ ।।

संसार में तुम्हारा तन कैसा दुःखदायी था और रात-दिन दुख में ही बीतते थे। अब अखण्ड घर के सुख प्राप्त हुए हैं। अब परमधाम के तुम्हारे तन कैसे लग रहे हैं?

कैसे सुख पाए कायम तन के, किनसों हुआ मिलाप।
अब देखो साहेब अर्स का, पूछो रूह अपनी आप।। ९७ ।।

तुमने अखण्ड तनों के कैसे सुख पाए और तुम्हारा किनसे मिलाप हुआ? अब अपने धाम के धनी को देखो और अपनी आत्मा से स्वयं पूछो।

कहां रात दिन गुजरानते, अब पाया अर्स रात दिन।
देखो दिल विचार के, कछू फरक है उन इन।। ९८ ।।

संसार में दिन-रात कहां बिताते थे? अब परमधाम के रात-दिन कैसे लगते हैं? अब दिल से विचारकर देखो क्या इनमें और उनमें कुछ अन्तर है?

कैसी झूठी निसबत में, करते थे गुजरान।
अब निसबत भई अर्स की, लेत संग सुभान।। ९९ ।।

संसार में तुम्हारे कैसे झूठे सम्बन्धी थे जिनमें तुम रहते थे? अब तुम्हारा सम्बन्ध परमधाम में श्री राजजी महाराज से हो गया है।

पेहेनावा फना मिने, और पेहेनावा अर्स का।
कछू पाई है तफावत, तुम देखो दिल अपना।। १०० ।।

संसार के पहनावे और परमधाम के पहनावे को देखो और दिल में विचारकर देखो क्या कुछ फर्क दिखाई देता है?

अब जिमी फना के, और जिमी बका पटंतर।
पसु पंखी देखो फना के, देखो अर्स जानवर।। १०१ ।।

अब संसार की झूठी जमीन में और अखण्ड परमधाम की भूमि में अन्तर देखो। संसार के पशु-पक्षियों को देखो और अखण्ड घर के जानवरों को देखो।

देखो ताल नदा झूठी जिमी, और देखो अर्स हौज जोए।
करो याद सुख द्यो रूह को, दिल देख तफावत दोए।। १०२ ।।

संसार के झूठे तालाब, नदियां देखो और परमधाम के हौज कौसर तालाब और जमुनाजी को देखो। दिल से इन दोनों के फर्क को देखकर अपने घर को यादकर अपनी आत्मा को सुख दो।

Nijanand App

दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए।। १०३ ।।

झूठे और सच्चे दिलों की हकीकत कुरान में लिखी है। जो मोमिन परमधाम के होंगे, वह इस फर्क को देख लेंगे।

दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह।
सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह।। १०४ ।।

दुनियां का दिल झूठा है और इसमें शैतान अबलीस की बादशाही है। यह दूसरों का और आपका दुश्मन है तथा सबको गुमराह करता है।

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अर्स हक।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक।। १०५ ।।

मोमिनों के दिल सच्चे हैं। उनमें हक की बैठक है। जहां पारब्रह्म स्वयं बैठे हों, उस दिल की तरफ शैतान नहीं जाता।

इस्क मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक।
अब इस्क ल्यो दिल अपने, तुम दिल अर्स बुजरक।। १०६ ।।

क्या मोमिनों के और दुनियां वालों के इश्क में कुछ अन्तर दिखाई पड़ता है? तुम्हारे दिल में पारब्रह्म बैठे हैं। अब अपने ही दिल में उनसे इश्क करो।

महामत कहे ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए।। १०७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! फरामोशी ने तुम्हारे दिलों को भुला दिया था। अब उस फरामोशी से सावचेत करके धनी तुमको बुलाते हैं।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ८७६ ॥

आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि हे श्यामाजी! मेरा नाम आशिक है। मेरा इश्क रूहों से है और रूहों के सुख में ही मेरा सुख है।

इलम ले चलो अर्स का, खोल द्यो हकीकत।
भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत।। २ ।।

परमधाम की जागृत बुद्धि का तारतम लेकर दुनियां में जाओ और मोमिनों को सब हकीकत बताओ। वह खेल में जाकर अपने आपको और घर की सब हकीकत को भूल गए हैं। उन्हें पहचान कराओ कि मैं उनका धनी हूं।

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान।। ३ ।।

यहां की सब हकीकत को मैंने इशारतों और रमूजों में कुरान में लिखा जो रसूल साहब लेकर आए हैं। उनके गुझ (गुह्य) भेदों को ले जाकर तारतम वाणी से मिलाकर पहचान कराओ।

Nijanand App

दिल मजाजी और हकीकी, कहे कुरान में दोए।
ए लेसी तफावत देख के, जो रूह अर्स की होए।। १०३ ।।

झूठे और सच्चे दिलों की हकीकत कुरान में लिखी है। जो मोमिन परमधाम के होंगे, वह इस फर्क को देख लेंगे।

दिल मजाजी दुनी का, इत अबलीस पातसाह।
सो औरों दुस्मन और आपका, मारत सबकी राह।। १०४ ।।

दुनियां का दिल झूठा है और इसमें शैतान अबलीस की बादशाही है। यह दूसरों का और आपका दुश्मन है तथा सबको गुमराह करता है।

और दिल हकीकी मोमिन, सो कह्या है अर्स हक।
तरफ नहीं दिल पाक की, जित साहेब की बैठक।। १०५ ।।

मोमिनों के दिल सच्चे हैं। उनमें हक की बैठक है। जहां पारब्रह्म स्वयं बैठे हों, उस दिल की तरफ शैतान नहीं जाता।

इस्क मोमिन और दुनी का, कछू देखत हो फरक।
अब इस्क ल्यो दिल अपने, तुम दिल अर्स बुजरक।। १०६ ।।

क्या मोमिनों के और दुनियां वालों के इश्क में कुछ अन्तर दिखाई पड़ता है? तुम्हारे दिल में पारब्रह्म बैठे हैं। अब अपने ही दिल में उनसे इश्क करो।

महामत कहे ऐ मोमिनों, जो दिए थे दिल भुलाए।
फरामोस से बीच होस के, अब साहेब लेत बुलाए।। १०७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! फरामोशी ने तुम्हारे दिलों को भुला दिया था। अब उस फरामोशी से सावचेत करके धनी तुमको बुलाते हैं।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ८७६ ॥

आसिक मेरा नाम, रूह-अल्ला आसिक मेरा नाम।
इस्क मेरा रूहन सों, मेरा उमत में आराम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि हे श्यामाजी! मेरा नाम आशिक है। मेरा इश्क रूहों से है और रूहों के सुख में ही मेरा सुख है।

इलम ले चलो अर्स का, खोल द्यो हकीकत।
भूल गईयां आप अर्स को, याद देओ निसबत।। २ ।।

परमधाम की जागृत बुद्धि का तारतम लेकर दुनियां में जाओ और मोमिनों को सब हकीकत बताओ। वह खेल में जाकर अपने आपको और घर की सब हकीकत को भूल गए हैं। उन्हें पहचान कराओ कि मैं उनका धनी हूं।

इसारतें रमूजें इत की, लिखी माहें फुरमान।
सो भेज्या हाथ रसूल के, मिलाए देओ निसान।। ३ ।।

यहां की सब हकीकत को मैंने इशारतों और रमूजों में कुरान में लिखा जो रसूल साहब लेकर आए हैं। उनके गुझ (गुह्य) भेदों को ले जाकर तारतम वाणी से मिलाकर पहचान कराओ।

Nijanand App

और भेजत हों तुमकों, कहियो मूल संदेसे।
इलम ऐसा दिया तुमको, जासों उठें मुरदे।।४।।

तुम्हें इसलिए भेज रहा हूं कि घर के मूल सन्देश रूहों को देना। तुम्हें ऐसा जागृत बुद्धि तारतम का ज्ञान दिया है कि वहां के मुर्दे जीव भी जागृत हो जाएंगे।

रेहे न सकों मैं रूहों बिना, रूहें रेहे ना सकें मुझ बिन।
जब पेहेचान होवे वाको, तब सहें ना बिछोहा खिन।।५।।

हे श्री श्यामाजी! मैं रूहों के बिना नहीं रह सकता और वह भी मेरे बिना नहीं रह सकतीं। जब उनको मेरी और परमधाम की पहचान हो जाएगी तो वह एक पल के लिए भी बिछोह सहन नहीं कर सकतीं।

जब इलम मेरा पोहोंचिया, तब ए होसी बेसक।
तब साइत ना रेहे सकें, ऐसा इनों का इस्क।।६।।

जब मेरा जागृत बुद्धि का इलम उनको मिल जाएगा तो उनके सारे भ्रम मिट जाएंगे। फिर वह एक क्षण भी वहां नहीं रह सकेंगी। उनका ऐसा जोरदार इश्क है।

ए बात मैं पेहेले कही, रूहें होसी फरामोस।
मेरे इलम बिना तुम कबहुं, आए न सको माहें होस।।७।।

मैंने पहले ही रूहों को कहा था कि तुम खेल में जाकर बेसुध हो जाओगी और मेरी जागृत बुद्धि के बिना कभी होश में नहीं आओगी।

फरामोसी हम को क्या करे, फेर कह्या रूहन।
हम अरवाहें अर्स-अजीम की, असल बका में तन।।८।।

तब रूहों ने मुझे जबाव में कहा था कि फरामोशी हमारा क्या करेगी। हम परमधाम की रूहें हैं और मूल तन हमारे अखण्ड घर में हैं।

फुरमान तुमारा आवसी, सो हम पढ़ कर।
देख इसारतें रमूजें, हम भूल जाएं क्यों कर।।९।।

जब आपका पैगाम आएगा तो उसे हम पढ़कर तथा आपकी इशारतें और रमूजों को समझकर कैसे भूल जाएंगी?

और देवें साहेदी रसूल, दे याद बातें असल।
तब क्यों रेहेवे फरामोसी, कहां जाए मूल अकल।।१०।।

फिर जब रसूल साहब मूल घर की बातें याद दिलाएंगे तो बेसुधी कैसे रहेगी? हमारी मूल बुद्धि कहां जाएगी?

सुन सुख बातें अर्स की, क्यों ना होवें हुसियार।
जो मोमिन होवे अर्स की, माहें रूहें बारे हजार।।११।।

जो अर्श के मोमिन होंगे वह परमधाम, जहां बारह हजार रूहें हैं, के सुख की बातें सुनकर सावचेत क्यों नहीं होंगे?

Nijanand App

सो तो तबहीं सुन के, होसी खबरदार।
मोमिन इत क्यों भूलहीं, सुन संदेसे परवरदिगार।। १२ ।।

वह आपके इलम को सुनकर सावचेत (सावधान) हो जाएंगे। अपने धनी के संदेश को सुनकर मोमिन माया में कैसे भूलेंगे?

आगूं से चेतन करी, एती करी मजकूर।
रूहें सुन ए सुकन, क्यों याद न आवे जहूर।। १३ ।।

आपने इतना वार्तालाप करके हमें पहले से ही सावचेत कर दिया है। फिर रूहों को यह वचन सुनकर इस सब हकीकत का पता कैसे नहीं लगेगा?

ए फुरमान पढ़े पीछे, पाई जब हकीकत।
तब फरामोसी क्यों कर रहे, क्यों भूलें ए निसबत।। १४ ।।

कुरान पढ़ने के बाद जब हकीकत मिल जाएगी तब फरामोशी कैसे रह सकती है? वह अपनी निसबत को कैसे भूल सकती हैं?

हाए हाए ऐसी हमसे क्यों होए, कैसे हम मोमिन।
सुन संदेसे क्यों भूलहीं, हक आप वतन।। १५ ।।

हाय! हाय! श्री राजजी! ऐसा हमसे कैसे होगा? हम कैसे मोमिन हैं जो आपका सन्देश सुनकर आपको, अपने को, अपने घर को भूल जाएंगे?

एता हम जानत हैं, जो सौ फरेब करो तुम।
ऐसा इस्क क्यों होवहीं, तुमको भूलें हम।। १६ ।।

ऐसा हम जानते हैं कि आप सौ बार भी हमें धोखा दो, फिर भी हमारा इश्क ऐसा कैसे हो जाएगा कि हम आपको भूल जाएं।

तुम कूदत हो अर्स में, अपने इस्क के बल।
तब सुध जरा न रहे, रहे न एह अकल।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि हे मोमिनो! तुम अपने इश्क के बल पर ही परमधाम में कूद रहे हो। जब तुम माया में जाओगो तो परमधाम की सुध और अकल नहीं रहेगी।

सो खेल मांगत हो, वास्ते इस्क देखन।
ए खेल है इन भांत का, उत इस्क न जरा किन।। १८ ।।

तुम ऐसा खेल इश्क देखने के वास्ते ही मांग रहे हो, परन्तु यह खेल इस तरह का है कि वहां इश्क जरा भी नहीं है।

ना इस्क ना अकल, ना सुध आप वतन।
ना सुध रेहेसी हक की, ए भूलोगे मूल तन।। १९ ।।

वहां न इश्क होगा, न यह अकल होगी। न अपने आपकी और न अखण्ड घर (परमधाम) की सुध होगी। तुम मुझे भूल जाओगी और अपनी परआतम को भी भूल जाओगी।

Nijanand App

कई चालें बोली जुदियां, माहें मजहब भेख अपार।
पूजें आग पानी पत्थर, इनमें खुदा हजार।। २० ।।

वहां खेल में कई प्रकार के रहन-सहन और अलग-अलग बोलियां (भाषा) होंगी। जिनके अन्दर बेशुमार धर्म, पंथ और भेष होंगे। जहां पर आग, पानी, पत्थर की पूजा होती होगी और उन्हीं में हजारों खुदा होंगे।

खाहिस से बनावहीं, अपने हाथ समार।
जुदा जुदा कर पूजहीं, जिनको नाहीं पार।। २१ ।।

वह लोग अपने हाथों से अपनी चाहना के अनुसार बेशुमार खुदा बनाते हैं और उन्हें अलग-अलग पूजते हैं।

खेल देखाऊं इन भांत का, जित झूठै में आराम।
झूठे झूठा पूजहीं, हक का न जानें नाम।। २२ ।।

मैं तुम्हें इस तरह का खेल दिखाऊंगा कि तुम झूठ में ही सच्चा आराम समझोगी। सब झूठे झूठ की पूजा करेंगे। वहां पारब्रह्म का नाम तक कोई नहीं जानेगा।

एक पैदा हुए एक होत हैं, एक होने की उमेद।
एक गए जात जाएंगे, इन विध को छल भेद।। २३ ।।

वहां एक पैदा हो गए, एक हो रहा है और एक पैदा होने वाले होंगे। इस तरह एक मर गया, एक मर रहा है और एक आज मरेगा। इस तरह का छल वाला वह संसार होगा।

देखोगे आसमान जिमी, माहें मुरदों का वास।
देत देखाई मर जात हैं, कर गिनती अपने स्वांस।। २४ ।।

वहां आसमान, जमीन में सब मुर्दों (जन्म-मरण का चक्कर होगा) का ही वास होगा। जो आज दिखाई देते हैं वह अपने सांसों की गिनती पूरी करके मर जाते हैं।

मौत सबों के सिर पर, मान लिया सबन।
चौदे तबक के खेल में, ठौर बका न पाया किन।। २५ ।।

वहां सब यह जानते हैं कि एक दिन सबको मरना है। चौदह लोकों के खेल में अखण्ड घर की प्राप्ति किसी को नहीं हुई।

खेलत सब फना में, बोलें चालें सब फना।
सब जानत आपे आपको, हम उड़सी ज्यों सुपना।। २६ ।।

सभी झूठे संसार में खेलते हैं और झूठे में ही बोलते हैं। वह सब अपने आपको जानते हैं कि हम स्वप्न जैसे हैं और मिट जाएंगे।

तब रूहों मुझ आगे कह्या, ऐसा इस्क हमारा जोर।
फरामोसी क्या करे हमको, इस्क देवे सब तोर।। २७ ।।

हे श्यामा महारानी! तब रूहों ने मुझे कहा कि हे धनी! हमारा इश्क बड़ा जोरदार है। फरामोशी हमारा क्या करेगी? उसके सारे बन्धन हमारा इश्क तोड़ देगा।

Nijanand App

ए मजकूर भई रूहन सों, मुझसों किया रब्द।
और कछुए न ल्यावें दिल में, आप इस्क के मद।। २८ ।।

इस तरह का वार्तालाप रूहों से हुआ और उन्होंने मेरे साथ रब्द किया। अपने इश्क के नशे में उन्होंने दिल में कुछ विचार नहीं किया कि हम किसके साथ बातें कर रही हैं।

बातें बोहोत करी रूहन सों, मेरा कह्या न ल्याइयां दिल।
सुन्या न आगूं इस्क के, बहस किया सबों मिल।। २९ ।।

मैंने रूहों को बहुत बातों से समझाया पर उन्होंने मेरी एक बात को भी दिल में लेकर विचार नहीं किया। अपने इश्क के नशे में सबने मिलकर बहस की।

मैं कह्या इस्क मेरा बड़ा, हादी रूहों आप माफक।
एह बात जब मैं करी, तब तुम उपजी सक।। ३० ।।

तब श्री राजजी महाराज ने कहा कि श्यामा महारानी और रूहों में जितना इश्क है, उनसे मेरा इश्क बड़ा है। जब यह बात मैंने कही तब तुम्हें संशय हो गया।

कहे हादी इस्क मेरा बड़ा, कहें रूहें बड़ा हम प्यार।
ए बेवरा बीच अर्स के, ए होए नहीं निरवार।। ३१ ।।

हे श्यामाजी! तब आपने कहा कि इश्क मेरा बड़ा है और रूहों ने कहा हमारा प्यार बड़ा है। इसका ब्यौरा (खुलासा, फैसला) परमधाम में हो ही नहीं सकता था।

क्यों होए तफावत इस्क, बैठे बीच बका में हम।
एक जरा न होए जुदागी, तो क्यों पाइए ज्यादा कम।। ३२ ।।

परमधाम में बैठकर इश्क का फैसला कैसे हो सकता है? जहां पर एक पल की भी जुदाई नहीं हो सकती तो कम और ज्यादा की पहचान कैसे हो?

पेहेले कह्या मैं तुम को, भूलोगे खेल देख।
जहां झूठे झूठा खेलहीं, उत मुझे न पाओ एक।। ३३ ।।

मैंने पहले कहा था कि तुम खेल में जाकर भूल जाओगे। वहां खेल में झूठे लोग झूठा ही खेल खेलते हैं। वहां मुझ एक को न पा सकोगी।

ए हकें अव्वल कह्या, भूल जाओगे तुम।
ना मानोगे फुरमान को, ना कछू रसूल हुकम।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने पहले कहा था कि तुम भूल जाओगी और कुरान में जो लिखा है उसे नहीं मानोगी। तुम्हें रसूल साहब की बातों पर और मेरे हुकम पर यकीन नहीं आएगा।

ना मानोगे संदेसे, ना मुझे करोगे याद।
झूठा कबीला करोगे, लगसी झूठा स्वाद।। ३५ ।।

मेरे सन्देश को न मानोगी और न मुझे याद ही करोगी। झूठे परिवार बनाकर बैठोगी और झूठा संसार ही अच्छा लगेगा।

Nijanand App

जानबूझ के पूजोगे, पानी पत्थर आग।
सब केहेसी ए झूठ है, तो भी रहोगे तिन लाग।। ३६ ।।

जान-बूझकर आग, पानी, पत्थर की पूजा करोगे। सब लोग कहेंगे कि यह गलत है, तो भी तुम उसी से चिपटे रहोगे।

पूजोगे सब फना को, कोई ऐसा खेल बेसुध।
ना तो क्यों पूजो मिट्टी गोबर, पर क्या करो बिना बुध।। ३७ ।।

खेल ऐसा बेसुधी का होगा कि तुम सब झूठ की पूजा करोगे। मिट्टी और गोबर की पूजा करोगे, पर जागृत बुद्धि के बिना तुम और क्या करोगे, अर्थात् बेसुधी में पूजा करोगे।

सुकन मेरा मानो नहीं, सबे भरी इस्क के जोस।
सबे बोलें नाचें कूदहीं, हमें कहा करे फरामोस।। ३८ ।।

हे श्यामाजी! इन रूहों ने अपने इश्क के जोश में मेरा कहना नहीं माना। सब नाचती-कूदती थीं और कहती थीं कि फरामोशी हमारा क्या करेगी?

हार दिया तब मैं इनों को, रब्द न किया हम।
जाए फंदियां झूठ में, नेक देखाया तिलसम।। ३९ ।।

तब मैं हारकर चुप हो गया। तब मैंने इनको थोड़ा सा तिलिस्मी (इन्द्रजाल) माया का खेल दिखाया जिसमें जाकर झूठ के फंदे में फंस गईं।

इस्क ज्यादा आपे अपना, सबों किया रबद।
फरामोसी तिलसम देखाइया, तिन किया सब रद।। ४० ।।

सभी इश्क अपना ज्यादा कहकर रब्द करती थीं। इनको थोड़ा सा इन्द्रजाल (माया का खेल) दिखाया। इस खेल ने इनके इश्क को रद्द कर दिया।

अब सों क्योंए आप को, काढ़ न सकें तिलसम।
फुरमान ले पोहोंच्या रसूल, तो भी न आवे सरम।। ४१ ।।

अब इस इन्द्रजाल (माया) के फंदे में से यह रूहें अपने आपको नहीं निकाल सकतीं। रसूल साहब कुरान के द्वारा पैगाम लेकर पहुंचे तो भी इन्हें शर्म नहीं आई।

फुरमान लिख्या इन विध का, जो पढ़ के देखें ए।
एक जरा सक न रहे, तबहीं जागें हिरदे।। ४२ ।।

कुरान में इस तरह से साफ लिखा है कि यदि कोई पढ़कर देखे तो उनके सारे संशय मिट जाएं और उनके हृदय में जागृति आ जाए।

ऐसा रसूल भेजिया, और भेज्या फुरमान।
और संदेसे रूहअल्ला, तो भी हुई नहीं पेहेचान।। ४३ ।।

ऐसे रसूल साहब और कुरान को भेजा। श्यामा महारानीजी के हाथ संदेश भेजा। फिर भी पहचान नहीं हुई।

Nijanand App

बड़ा इस्क सबों अपना, कह्या रूहों रब्द कर।
तिलसम तो देखाइया, पावने पटंतर।। ४४ ।।

सभी रूहों ने रब्द करके अपने इश्क को बड़ा बताया। इश्क का अंतर जानने के लिए यह माया का खेल दिखाया।

रूहअल्ला भेद तिलसम का, रूहों देवे बताए।
तबही रूहों के दिल से, फरामोसी उड़ जाए।। ४५ ।।

इस माया के खेल की हकीकत श्यामा महारानी रूहों को बता देंगी और उसी समय रूहों के दिल से फरामोशी उड़ जाएगी।

रूहें सुनो तुम संदेसे, मैं ल्याया तुम पर।
जो रब्द किया माहें बका, सो ल्याओ दिल भीतर।। ४६ ।।

श्यामा महारानी कहती हैं, हे रूहो! मैं तुम्हारे लिए सन्देश लाई हूं। तुमने जो परमधाम में रब्द किया था, उसे याद करो।

मुझे भेज्या हक ने, याद दीजो मेरा सुख।
तब इनों तिलसम का, उड़ जासी सब दुख।। ४७ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने परमधाम के सुख की याद दिलाने के वास्ते भेजा है और कहा है कि जब यह सन्देश रूहों को मिल जाएगा तो माया का सब दुःख समाप्त हो जाएगा।

बीच बका के बैठ के, हकें कह्या यों कर।
रूहअल्ला कहियो रूहन से, भूल गइयां हक घर।। ४८ ।।

परमधाम के बीच बैठकर श्री राजजी महाराज ने इस तरह से कहा कि हे श्यामा महारानी! तुम रूहों से कहना कि तुम अपने धनी और अखण्ड परमधाम को भूल गई हो।

हाथ रसूल के भेजिया, तुम ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, तुम क्यों न करो पेहेचान।। ४९ ।।

मैंने रसूल साहब के हाथ तुमारे वास्ते कुरान भेजा है। फिर तुम हकीकत और मारफत की पहचान क्यों नहीं करते?

रब्द किया था अव्वल, सो क्यों गैयां तुम भूल।
अजूं याद दिए न आवहीं, सुन एती पुकार रसूल।। ५० ।।

तुमने इश्क का रब्द किया था। उसे क्यों भूल गई हो? रसूल साहब ने पुकार-पुकार कर कहा फिर भी तुम्हें याद नहीं आई।

और संदेसे रूहअल्ला, सुने जो अलेखे।
तो भी आंखें खुली नहीं, आए बका से हक के।। ५१ ।।

श्यामा महारानी ने इस तरह से श्री राजजी महाराज के बेशुमार सन्देश सुनकर रूहों को सुनाए तो भी मोमिनों की आंखें नहीं खुलीं कि हमारे धनी ने अखण्ड घर से सन्देश भेजे हैं।

Nijanand App

ऐसा इलम हकें भेजिया, आंखें खोल दई बातन।
एक जरा सक ना रही, देखे बका वतन।।५२ ।।

श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि की ऐसी तारतम वाणी भेज दी जिससे सब बातूनी भेद खुल गए और जरा भी संशय नहीं रहा तथा अखण्ड परमधाम की पहचान हो गई।

बेसक जान्या आपे अपना, बेसक जान्या हक।
बेसक जान्या हादीय को, उमत हुई बेसक।।५३ ।।

सबको अपनी पहचान, अपने धनी की पहचान, श्री श्यामा महारानी की पहचान तथा अपने सुन्दरसाथ की पहचान हो गई और सब संशय मिट गए।

ए याद नीके दीजियो, तुम देखो सहूर कर।
मेरे इलम से रूहों को, देवे साहेदी अंतर।।५४ ।।

हे श्यामाजी! तुम विचारकर रूहों को मेरी जागृत बुद्धि के ज्ञान से याद कराना और गवाहियां देकर सब बातों का भेद बताना।

बेसक इलम पोहोंचिया, के नाहीं पोहोंच्या तुम।
ए देखो दिल विचार के, तो न्यारा नहीं खसम।।५५ ।।

हे रूहो! तुम पर धनी का जागृत बुद्धि का बेशकी का इलम पहुंचा कि नहीं पहुंचा? यदि पहुंचा है तो दिल से विचार कर देखो। तुम्हारे धनी तुमसे जुदा नहीं हैं।

इलम पोहोंच्या होए तुमको, हमारा बेसक।
तो संदेसे तुमारे इत के, क्यों न पोहोंचें बका में हक।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि तुम्हें सब संशय मिटाने वाला जागृत बुद्धि का ज्ञान मिल गया है, तो तुम्हारे सन्देश खेल में से अखण्ड घर में क्यों नहीं पहुंचते?

किन ठौर छिपाए तुम को, बोलत हो कहां से।
कौन तरफ हो अर्स के, ए सहूर करो दिल में।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि देखो मैंने तुमको कहां छिपाया है? और कहां से बोल रहे हो? दिल से विचार कर देखो कि तुम परमधाम से किस तरफ हो?

देखो दिल से दसो दिस, किन तरफ हैं हक।
ए विचार देखो इलम को, तो जरा ना रहे सक।।५८ ।।

दिल से विचारकर दसों दिशाओं में देखो कि पारब्रह्म कहां है? इस बात को यदि वाणी से विचारोगे तो जरा भी संशय नहीं रहेगा।

कौन तरफ वजूद है, कौन तरफ है कौल।
हाल कौन तरफ का, कौन तरफ है फैल।।५९ ।।

तुम्हारा तन कहां है? वचन कहां के हैं? करनी कहां की करते हो? रहनी कहां की है?

Nijanand App

ए सब एक तरफ हैं, के जुदे जुदे दौड़त।
देखो सहूर करके, है कौन तरफ निसबत।। ६० ।।

तुम्हारी कहनी, करनी और रहनी एक पारब्रह्म की तरफ लगी है या अलग-अलग देवी-देवताओं को पूजती हैं? विचार कर देखो कि तुम्हारा सम्बन्ध किससे है?

जब एक ठौर पांचों भए, तब तुमारा इत का।
सत संदेसा हक को, क्यों न पोहोंचे माहें बका।। ६१ ।।

जब पांचों (मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार और जीव, अर्थात् कहनी, करनी, रहनी, तन और जीव) एक दिशा को चलेंगे तब संसार से तुम्हारा सन्देश श्री राजजी महाराज के पास पहुंच जाएगा।

इलम दिया तुमें खुदाई, तब बदले कौल चाल।
फैल होवे वाहेदत का, तब बेर न लगे हाल।। ६२ ।।

तुमको जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया जिससे तुम्हारी कहनी, करनी, रहनी परमधाम की हो जाएगी। तब हालात बदलने में एक पल नहीं लगेगा।

गुजरी अर्स बका मिने, मजकूर जो मुतलक।
सो इलम हकें ऐसा दिया, जिनमें जरा न सक।। ६३ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज के सामने की हुई वार्तालाप में संशय नहीं रह जाएगा। ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान तुमको धनी ने दिया है।

एही तुमारी भूल है, तुमें बंधन याही बात।
एही फरामोसी तुम को, जो भूल गए हक जात।। ६४ ।।

तुम्हारी भूल ही तुम्हें बंधन में बांधती है। यह बेसुधी जो तुम्हें आ रही है, उससे ही तुम परमधाम के सुन्दरसाथ को भूल गए हो।

कौल फैल जुदे हुए, हुआ फरामोसी हाल।
अब पड़े याहीं सक में, इन जुदागी के ख्याल।। ६५ ।।

कहनी और करनी जब अलग हो गईं तो तुम्हारी बेसुधी की हालत हो गई। श्री राजजी महाराज की जुदाई का ख्याल लेकर तुम संशय में पड़ गई हो।

सो ए इलम जब हक का, देत अर्स की याद।
तुमें बेसक गुजरे हाल की, क्यों न आवे कायम स्वाद। ६६ ।।

जब यह जागृत बुद्धि की वाणी धनी की याद दिलाएगी तब तुम्हें अपने भूले हुए अखण्ड सुखों की लज्जत क्यों नहीं आएगी?

फरामोसी कुलफ की, कुंजी इलम बेसक।
करो सहूर तुम रूह सों, जो बकसीस है हक।। ६७ ।।

फरामोशी के ताले को तारतम ज्ञान की कुंजी खोल देगी। श्री राजजी महाराज की इस अद्भुत बख्शीश की चर्चा तुम रूहों से करना।

Nijanand App

ए ऐसा इलम है लदुन्नी, जो देत बका की बूझ।
बेसकी सब देत है, और देत हक के दिल का गुझ।।६८ ।।

यह तारतम ज्ञान ऐसा है जिससे अखण्ड घर की पहचान होती है। यह श्री राजजी महाराज के दिल की छिपी बात का ज्ञान देता है।

ऐसी कुंजी हकें दई, जो सहूरें कुलफ लगाए।
तो फरामोसी क्यों रहे, पर हाथ हुकम जगाए।।६९ ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसी तारतम ज्ञान की कुंजी दी है जो तुम्हारे सोचने की शक्ति को लगे तालों को खोल देगी। तब यह फरामोशी क्यों रहेगी? पर इस तरह से जागना भी सब श्री राजजी महाराज के हुकम के हाथ है।

बैठे आगूं हक के, किया था मजकूर।
इंतहाए नहीं अर्स जिमी का, तुम कहूं नजीक हो के दूर।।७० ।।

तुमने श्री राजजी महाराज के चरणों में बैठकर यह वार्तालाप किया था। परमधाम की भूमि का शुमार नहीं है। अब तुम विचार करो कि तुम उसके पास हो कि दूर हो?

बाहेर तो ना जाए सको, छेह न आवे जिमी इन।
एक जरा जुदा न होए सके, तुमें ठौर न बका बिन।।७१ ।।

परमधाम की भूमि की सीमा तो बेशुमार है, इसलिए तुम परमधाम से बाहर तो जा नहीं सकते। परमधाम का कोई तिनका भी अलग नहीं हो सकता, इसलिए तुम्हें अखण्ड घर के बिना और कहीं ठिकाना नहीं है।

हक संदेसे लेत हो, कौन तरफ तुमसों हक।
आया इलम खुदाई तुम पे, तिनमें जरा न सक।।७२ ।।

तुम श्री राजजी महाराज के सन्देश लेते हो तो बताओ श्री राजजी महाराज तुम से किस तरफ हैं? क्या इतना ज्ञान है? तुमको तारतम ज्ञान मिला यह बात सत्य है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं है।

तुमें अर्स देखाया दिल में, जो खोलो ले कुंजी सहूर।
कुलफ फरामोसी ना रहे, अर्स दिल हक हजूर।।७३ ।।

तुमको धनी का अर्श परमधाम तुम्हारे दिल में दिखाया। तारतम कुंजी से इसका विचार करके देखो। फिर तुम्हारे दिल में फरामोशी का ताला लगा नहीं रहेगा, क्योंकि तुम्हारे दिल में तो स्वयं श्री राजजी महाराज विराजमान हैं।

बिना विचारे रेहेत है, तुम पे हक इलम।
ए सहूर रूहें पोहोंचहीं, तबहीं उड़े तिलसम।।७४ ।।

तुम्हारे पास जागृत बुद्धि की तारतम वाणी है। तुम उसको मंथन नहीं करते हो (विचारते ही नहीं हो)। यदि उस पर विचार कर लो तो यह माया का फंदा उड़ जाएगा।

तीन उमत कही खेल में, एक रूहें और फरिस्ते।
तीसरी खलक आम जो, ए सब लरें सरीयत जे।।७५ ।।

खेल में तीन प्रकार की सृष्टि हैं। एक रूहें, दूसरे फरिश्ते और तीसरी आम खलक (ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी-सृष्टि और जीवसृष्टि) और सब रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड में आपस में लड़ते हैं।

Nijanand App

कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैदास।
रूहें उतरीं अर्स अजीम से, कही असल खासल खास।।७६ ।।

कुंन से जीवसृष्टि और नूर (अक्षर) से ईश्वरीसृष्टि की पैदाइश कही है। ब्रह्मसृष्टि परमधाम से उतरी है जो श्री राजजी महाराज की खासल खास अंगना कही है।

ए इलम-इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम।
हकें पेहेले कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम।।७७ ।।

ऐसा जागृत बुद्धि का ब्रह्म ज्ञान तुमको देता हूं फिर भी माया तुमसे नहीं छूटती। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही कहा था कि ब्रह्मसृष्टि हुकम को नहीं मानेगी।

सोई बातें अब मिली, भूल गैयां घर तुम।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम।।७८ ।।

वह सब बातें यहां आने पर सत दिखाई पड़ीं और ब्रह्मसृष्टियां घर को, अपने आपको, श्री राजजी को, अक्ल को और इलम को भूल गईं।

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकल में ए।।७९ ।।

रसूल साहब कुरान ले आए और श्यामा महारानी सन्देश ले आईं और सच्चा ज्ञान दे देकर थक गईं। हाय! हाय! फिर भी यह बातें अक्ल में नहीं आतीं।

कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेयराज।
फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज।।८० ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात्रि में पारब्रह्म से जो बातें हुईं, उन बातों में श्री राजजी महाराज की मेहर अपार है, बताया। और कहा कि यह सब बातें सवेरा होने पर जाहिर हो जाएंगी। यह वही कयामत का दिन आज है।

तो मजकूर मेयराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत-फजर सुभान।।८१ ।।

मेयराज (दर्शन) की रात की श्री राजजी महाराज ने हकीकत को जाहिर किया। हे मोमिनो! उसको विचार कर देखो। धनी ने (श्री राजजी महाराज ने) पहचान कराकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

महामत कहे ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी न जात।
बेसक देखो दिन बका, माहें मेयराज की रात।।८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारी फरामोशी अभी तक नहीं जाती। निःसन्देह उस अखण्ड परमधाम को देख लो जिसका वर्णन मेयराज की रात्रि में किया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ९५८ ।।

मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूरतजल्ला द्वार।
सब मेयराज में लेय के, दिया हकें दीदार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद साहब पर कृपा की और उन्हें शबे मेयराज में बुलाकर दर्शन दिया और परमधाम के दरवाजे खोले।

Nijanand App

कुंन से और नूर से, ए दोऊ पैदास।
रूहें उतरीं अर्स अजीम से, कही असल खासल खास।।७६ ।।

कुंन से जीवसृष्टि और नूर (अक्षर) से ईश्वरीसृष्टि की पैदाइश कही है। ब्रह्मसृष्टि परमधाम से उतरी है जो श्री राजजी महाराज की खासल खास अंगना कही है।

ए इलम-इलाही देत हों, तो भी छूटत नहीं तिलसम।
हकें पेहेले कह्या भूलोगे, न मानोगे हुकम।।७७ ।।

ऐसा जागृत बुद्धि का ब्रह्म ज्ञान तुमको देता हूं फिर भी माया तुमसे नहीं छूटती। श्री राजजी महाराज ने पहले से ही कहा था कि ब्रह्मसृष्टि हुकम को नहीं मानेगी।

सोई बातें अब मिली, भूल गैयां घर तुम।
भूली आप और हक को, भूलियां अकल इलम।।७८ ।।

वह सब बातें यहां आने पर सत दिखाई पड़ीं और ब्रह्मसृष्टियां घर को, अपने आपको, श्री राजजी को, अक्ल को और इलम को भूल गईं।

फुरमान रसूल ले आइया, रूहअल्ला संदेसे।
असल इलम दे दे थके, अजूं न आवे अकल में ए।।७९ ।।

रसूल साहब कुरान ले आए और श्यामा महारानी सन्देश ले आईं और सच्चा ज्ञान दे देकर थक गईं। हाय! हाय! फिर भी यह बातें अक्ल में नहीं आतीं।

कही बड़ी मेहेर रसूलें, जो हुई माहें रात मेयराज।
फजर होसी जाहेर, सो रोज कयामत है आज।।८० ।।

रसूल साहब ने मेयराज (दर्शन) की रात्रि में पारब्रह्म से जो बातें हुईं, उन बातों में श्री राजजी महाराज की मेहर अपार है, बताया। और कहा कि यह सब बातें सवेरा होने पर जाहिर हो जाएंगी। यह वही कयामत का दिन आज है।

तो मजकूर मेयराज का, ए जो किया जाहेर मेहेरबान।
मोमिन देखो हक सहूर से, खोली मारफत-फजर सुभान।।८१ ।।

मेयराज (दर्शन) की रात की श्री राजजी महाराज ने हकीकत को जाहिर किया। हे मोमिनो! उसको विचार कर देखो। धनी ने (श्री राजजी महाराज ने) पहचान कराकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

महामत कहे ऐ मोमिनों, अजूं फरामोसी न जात।
बेसक देखो दिन बका, माहें मेयराज की रात।।८२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारी फरामोशी अभी तक नहीं जाती। निःसन्देह उस अखण्ड परमधाम को देख लो जिसका वर्णन मेयराज की रात्रि में किया है।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ९५८ ।।

मेहेर हुई महंमद पर, खोले नूरतजल्ला द्वार।
सब मेयराज में लेय के, दिया हकें दीदार।। १ ।।

श्री राजजी महाराज ने मुहम्मद साहब पर कृपा की और उन्हें शबे मेयराज में बुलाकर दर्शन दिया और परमधाम के दरवाजे खोले।

Nijanand App

बीच बका के पोहोंचिया, जित जले जबराईल पर।
तित नब्बे हजार हरफ सुने, फिरे जो मजकूर कर।। २ ।।

रसूल साहब अखण्ड परमधाम में पहुंचे जहां जबराईल के पर जलते हैं। वहां जाकर नब्बे हजार हरफ सुने और फिर चर्चा की।

हुकम हुआ इमाम को, खोल दे द्वार रूहन।
आवें सब मेयराज में, दिल देखें अर्स मोमिन।। ३ ।।

इमाम (श्री प्राणनाथजी) को हुकम हुआ कि रूहों को सब दरवाजे खोल दो। उनके दिल भी घर को तथा परआतम को शबे मेयराज (दर्शन की रात्रि) की तरह देखें।

खिलवत सब मेयराज में, जो रूहों करी अव्वल।
सो खोले हक हादीय की, ज्यों देखें हकीकी दिल।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने, शबे मेयराज में जो रूहों से अव्वल खिलवत में बातें कीं और श्री राजजी श्यामाजी के वार्तालाप को इस तरह से जाहिर कर दिया कि सच्चे दिल वाले मोमिन उसे देखकर समझ लें।

आखिर गिरो जो रूहन, सब मेयराज में आराम।
याको दई इमामें हुकमें, वाहेदत की अर्स ताम।। ५ ।।

ब्रह्मसृष्टियों की जमात को शबे मेयराज में ही आराम मिलेगा। श्री राजजी महाराज के हुकम से इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने मोमिनों को यह आत्मा की खुराक दी।

खिलवत हक हादी रूहन की, कबूं न जाहेर किन।
सो रूह अल्ला ने रूहसों, तिन कही आगे मोमिन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों की एकान्त के सुखों की बात किसी को मालूम नहीं थी। वह श्यामा महारानी ने श्री इन्द्रावतीजी को और श्री इन्द्रावतीजी ने सुन्दरसाथ को बताया।

एक समे हक हादी रूहें, मिल किया मजकूर।
रब्द किया इस्क का, सबों आप अपना जहूर।। ७ ।।

एक समय श्री राजजी महाराज और श्यामाजी और रूहों ने आपस में मिलकर वार्तालाप किया। उसमें सबने अपने-अपने इश्क का वर्णन किया।

रूहें कहें सब मिल के, हक के आसिक हम।
इस्क पूरा है हम में, ए नीके जानो तुम।। ८ ।।

सब रूहों ने मिलकर कहा कि हम श्री राजजी महाराज के आशिक हैं और हमारे अन्दर इश्क पूर्ण है। यह तुम अच्छी तरह समझ लो।

और आसिक बड़ी रूह के, इनमें नाहीं सक।
इस्क हमारे रूहन के, जानत हैं सब हक।। ९ ।।

हम श्यामा महारानी के भी आशिक हैं। इसमें जरा सन्देह नहीं है। हम रूहों के इश्क को श्री राजजी महाराज अच्छी तरह जानते हैं।

Nijanand App

बड़ी रूह कहे मुझ में, हक का पूरा इस्क।
रूहें प्यारी मेरी रूह की, इनमें नाहीं सक।। १० ।।

श्यामा महारानी ने कहा कि श्री राजजी महाराज को मैं पूर्ण रूप से चाहती हूं और मेरी रूहें भी मुझे बहुत प्यारी हैं। इसमें सन्देह नहीं है।

तब हकें कह्या सबन को, मैं तुमारा आसिक।
और आसिक बड़ी रूह का, कौन मेरे माफक।। ११ ।।

तब श्री राजजी महाराज ने सभी से कहा कि मैं तुम्हारा आशिक हूं और श्यामा महारानी का आशिक हूं। तुम में से कोई भी मेरे समान इश्क नहीं कर सकता।

खबर मेरे इस्क की, तुम जानी नहीं किन।
इस्क बड़े सबों अपने, तो कहे रूहन।। १२ ।।

मेरे इश्क की जानकारी तुम्हें किसी को नहीं है, इसलिए तुम सबने अपने-अपने इश्क को बड़ा बताया है।

और पातसाही मेरे अर्स की, तुमको नहीं खबर।
इस्क सबों को अपने, तो बड़े आए नजर।। १३ ।।

मेरे परमधाम की बादशाही की खबर तुम्हें नहीं है, इसलिए तुम सबको अपना-अपना इश्क बड़ा दिखाई पड़ा।

बुजरक इस्क अपना, तोलों देख्या तुम।
कादर की कुदरत की, तुमको नाहीं गम।। १४ ।।

जब तक तुमको अक्षर ब्रह्म की माया की पहचान नहीं है, तब तक तुम अपने इश्क को बड़ा समझ रहे हो।

साहेबी अर्स अजीम की, तुमें नजर आवे तब।
नूर-तजल्ला नूर थें, जुदे होए देखो जब।। १५ ।।

तुम्हें अखण्ड घर परमधाम की साहिबी का पता नहीं है। यह तुम्हें तब समझ आएगी जब अक्षरातीत और अक्षर से जुदा होकर देखोगे।

खबर तुमारे इस्क की, तो होवे जाहेर।
सब मिल जाओ इत थें, बका से बाहेर।। १६ ।।

तब तुम्हारे इश्क का पता चलेगा, जब यहां से सब मिलकर अखण्ड घर से बाहर जाओ।

एक पातसाही अर्स की, और वाहेदत का इस्क।
सो देखलावने रूहन को, पेहेले दिल में लिया हक।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज ने अर्श की बादशाही और वाहिदत (एकदिली) का इश्क रूहों को दिखाने के लिए दिल में लिया।

Nijanand App

कहूं विध वाहेदत की, बात करनी हकें जे।
सो अपने दिल पेहेले लेय के, पीछे आवे दिल वाहेदत के।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं परमधाम का तरीका बताती हूं। श्री राजजी जो करना होता है, उस बात को पहले दिल में लेते हैं। उसके बाद वही बात मोमिनों के दिल में आती है।

पोहोर दिन से चार घड़ी लग, बरस्या हक का नूर।
इस्क तरंग सबों अपने, रोसन किए जहूर।। १९ ।।

प्रातः नौ बजे से साढ़े दस बजे तक परमधाम में श्री राजजी महाराज की नजरे करम हुई। वार्तालाप होता रहा। सभी ने अपने इश्क की तरंगों को जाहिर किया।

अपने अपने इस्क का, सबों देखाया भार।
तोलों किया रब्द, दिन पीछला घड़ी चार।। २० ।।

अपने-अपने इश्क को सभी ने बड़ा बताया। सायं के साढ़े चार बजे तक यही बहस होती रही।

एह बातें असल की, करते इस्क सों प्यार।
हंसते खेलते बोलते, एही चलत बारंबार।। २१ ।।

यह सब बातें मूल परमधाम की हैं जहां इश्क और प्यार की बातें करते हैं। उस दिन हंसते-खेलते और बोलते हुए यही एक चर्चा का विषय था।

अपना अपना इस्क, बड़ा जानत सब कोए।
बीच बका के बेवरा, इस्क का न होए।। २२ ।।

सब कोई यही जान रहा था कि हमारा इश्क सबसे बड़ा है, परन्तु अखण्ड परमधाम में इश्क के अन्तर का फैसला नहीं हो सकता था।

इस्क का हक हादी रूहें, रब्द किया माहों-माहें।
सो हक से बीच अर्स के, घट बढ़ होवे नाहें।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज श्यामा महारानी और रूहों ने आपस में बहस किया। श्री राजजी महाराज से परमधाम में कुछ कम ज्यादा नहीं हो सकता।

जित जुदागी जरा नहीं, तित बेवरा क्यों होए।
ताथें रूहें रब्द हक का, क्यों ए ना निबरे सोए।। २४ ।।

जहां जरा सी भी जुदाई न हो सकती हो वहां कम ज्यादा का फैसला कैसे हो? इसलिए रूहों के और श्री राजजी महाराज के इश्क का निपटारा कैसे हो?

एक पात न गिरे अर्स बन का, ना खिरे पंखी का पर।
अपार जिमी की रूह कोई, कहूं जाए न सके क्योंए कर।। २५ ।।

जहां परमधाम के वनों का एक पत्ता भी नहीं गिरता और न पक्षी का पर गिरता है, उस अखण्ड भूमि, जिसका शुमार नहीं है, वहां की रूहें किसी जगह किसी तरह से भी बाहर नहीं जा सकतीं।

Nijanand App

आगूं वाहेदत जिमी के, कहूं नाम न जरा एक।
आगूं जरे वाहेदत के, उड़ें ब्रह्मांड अनेक।। २६ ।।

परमधाम की वाहेदत की जमीन के सामने किसी का नाम नहीं है, अर्थात् और दूसरा कुछ है ही नहीं। परमधाम के एक कण के सामने करोड़ों ब्रह्मांड उड़े जाते हैं।

रूहें उन वाहेदत की, ताए फरेब न रहे नजर।
सो क्यों पड़े फरेब में, देखो सहूर कर।। २७ ।।

रूहें उसी परमधाम की रहने वाली हैं। उनके सामने झूठा संसार नहीं रह सकता। ऐसी आत्माएं झूठे संसार में कैसे आतीं, जरा विचार कर देखो।

मौत उत पैठे नहीं, कायम अर्स सुभान।
ठौर नहीं अबलीस को, जरा न कबूं नुकसान।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज का परमधाम अखण्ड है। वहां काल पहुंच ही नहीं सकता, अर्थात् वहां कोई नहीं मरता। वहां शैतान अबलीस के लिए भी जगह नहीं है, इसलिए वहां कुछ नष्ट नहीं होता।

अर्स बका वाहेदत में, सुध इस्क न होवे इत।
जुदे जुदे हो रहिए, इस्क सुध पाइए तित।। २९ ।।

अखण्ड परमधाम में इश्क की सुध नहीं होती। जहां अलग-अलग रहें, वहां इश्क की सुध होती है।

वाहेदत में सुध इस्क की, पाइए नहीं क्यों ए कर।
घट बढ़ इत है नहीं, अर्स में एकै नजर।। ३० ।।

परमधाम में इश्क की सुध किसी तरह से नहीं मिलती, क्योंकि वहां कम ज्यादा नहीं होता है। परमधाम में सब एक समान ही रहते हैं।

बिना जुदागी इस्क की, क्यों कर पाइए खबर।
सो तो बका में है नहीं, सब कोई बराबर।। ३१ ।।

बिना अलग हुए इश्क की पहचान कैसे हो? यह वियोग तो परमधाम में है नहीं। वहां सब कुछ एक समान है।

कोई बात खुदा से न होवहीं, ऐसे न कहियो कोए।
पर एक बात ऐसी बका मिने, जो हक से भी न होए।। ३२ ।।

कोई काम खुदा नहीं कर सकता, ऐसा कोई न कहना। पर एक बात उस अखण्ड परमधाम में है जिसे श्री राजजी महाराज भी नहीं कर सकते (अपनी आत्माओं को अपने से अलग नहीं कर सकते)।

कौल फैल हाल बदले, पर ना छूटे रूह इस्क।
रूह इस्क दोऊ बका, इनमें नाहीं सक।। ३३ ।।

कहनी, करनी और रहनी बदल सकती है, परन्तु रूहों का इश्क नहीं छूट सकता। परमधाम की रूहें और इश्क दोनों अखण्ड हैं। इसमें कोई संशय नहीं है।

Nijanand App

दिल फिरे रंग फिरत है, जुसा जोस बदलत।
पर असल इस्क ना बदले, जो नेहेचल रूह न्यामत।। ३४ ।।

दिल बदलने के साथ ही भाव बदल जाता है। शरीर और जोश बदल सकता है, परन्तु हकीकी इश्क नहीं बदल सकता। वही रूहों का मूल खजाना है।

रूहों सबों इस्क का, किया बड़ा मजकूर।
इस वास्ते बेवरा इस्क का, मुझे देखलावना जरूर।। ३५ ।।

श्री राजजी कहते हैं हे श्यामाजी! रूहों ने आज इश्क की बड़ी चर्चा की, इसलिए अब इश्क का फैसला अवश्य ही दिखाना है।

इस्क बेवरा देखने, एक तुमें देखाऊं ख्याल।
इस्क तअल्लुक रूह के, छूटे ना बदले हाल।। ३६ ।।

तब श्री राजजी ने रूहों से कहा, हे मोमिनो! मैं तुम्हें इश्क का फैसला करने के लिए एक खेल दिखाता हूं। इश्क का नाता तो आत्मा से है न वह टूट सकता है और न बदल सकता है।

रूहें अर्स अजीम की, ताए लगे न कोई नुकसान।
ऐसा खेल देखाऊं तुमें, जो कछू ना रहे पेहेचान।। ३७ ।।

रूहें तो अर्श अजीम की हैं। उनको कोई नुकसान नहीं हो सकता, परन्तु मैं तुम्हें ऐसा खेल दिखाऊंगा। जहां किसी को किसी तरह की पहचान नहीं रहेगी।

ऐसा इस्क तुम पे, रूह से क्यों ए ना छूटत।
पर ए खेल इन भांत का, जगाए भी न जागत।। ३८ ।।

हे रूहो! तुमारा इश्क तुमसे किसी तरह से नहीं छूट सकता। पर यह खेल फरामोशी का ऐसा है कि कोई जगाने पर भी नहीं जागता।

मैं छिपोंगा तुमसे, तुम पाए न सको मुझ।
ना पाओ तरफ मेरीय को, ऐसा खेल देखाऊं गुझ।। ३९ ।।

मैं तुमसे छिप जाऊंगा। तुम मुझे नहीं पा सकोगे मेरी तरफ का पता नहीं चलेगा। ऐसा इन्द्रजाल का माया वाला खेल दिखाऊंगा।

और कहूं जाए छिपोगे, के हमको करोगे दूर।
के इतहीं बैठे देखाओगे, धनी अपने हजूर।। ४० ।।

रूहें कहती हैं, हे धनी! आप कहीं छिप जाओगे या हमको अपने से दूर करोगे, या अपने सामने यही बिठाकर खेल दिखाओगे?

दूर कहूं ना जाऊंगा, तुम बैठो एकड़ चरन।
खेल देखोगे इतहीं, तुम मिल सब मोमिन।। ४१ ।।

श्री राजजी कहते हैं कि मैं दूर कहीं नहीं जाऊंगा। तुम चरण पकड़कर बैठो। तुम सब मिलकर यहीं बैठे-बैठे खेल देखोगे।

Nijanand App

हम सब मिल मोमिन बैठेंगे, पकड़ तुमारे चरन।
तब कहा करसी फरामोसी, जब बैठें होए एक तन।। ४२ ।।

रूहें कहती है कि हम सब मिलकर तुम्हारे चरण पकड़कर बैठती हैं। फिर जब हम एक तन होकर बैठेंगे तो फरामोशी हमारा क्या करेगी?

गले बाथ सब लेय के, मिल बैठेंगे एक होए।
तो फरामोसी कहा करे, होए न जरा जुदागी कोए।। ४३ ।।

हम एक दूसरे के गले में हाथ डालकर बैठेंगे। तब फरामोशी हमारा क्या करेगी? हम किसी तरह से तनिक भी अलग नहीं होंगे।

जेते कोई मोमिन, सो बैठे तले कदम।
तो तुमारे रसूल का, फेरें नाहीं हुकम।। ४४ ।।

जितनी रूहें हैं, वह चरणों के तले बैठ गयीं। हम तुम्हारे रसूल के हुकम को नहीं टालेंगे।

जो मुनकर हुकम सों, मोमिन कहिए क्यों ताए।
द्यो फरामोसी हम को, देखो सौ बेर अजमाए।। ४५ ।।

जो रसूल साहब के द्वारा भेजे हुए आपके हुकम से मुनकर होगा, उसे मोमिन मत कहना। हमको फरामोशी दो और सौ बार आजमा लो।

सो कैसा मोमिन, अर्स की अरवाहें।
हम कदमों बीच अर्स के, क्यों जासी भुलाए।। ४६ ।।

वह कैसा मोमिन, कैसी परमधाम की अरवाह जो आपके चरणों के तले बैठकर आपको भूल जाएं।

जेती रूहें अर्स की, ताए फरामोसी ना जाए जीत।
कछू पड़े बीच अपने, ए नहीं इस्क की रीत।। ४७ ।।

जितनी परमधाम की रूहें हैं, उनको फरामोशी नहीं जीत सकती। हमारे और आपके बीच कुछ आ जाए, यह इश्क का तरीका नहीं है।

कछुए न चले फरामोस का, हम आगूं हुए चेतन।
इस्क हमारे रूह के, असल है एक तन।। ४८ ।।

हम पहले से ही सावचेत हो गए हैं। अब फरामोशी का हमारे ऊपर कुछ जोर नहीं चलेगा। हम सब मूल से एक तन हैं।

बका आड़े पट करों, तुम देख न सको कोए।
झूठे मिलावे कबीले, तुम देखोगे सब सोए।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज ने कहा परमधाम के आगे माया का परदा लगा दूंगा। तुम सब उसे देख न पाओगे। संसार में जाकर तुम झूठे कबीलों में मिल जाओगे। तुम सब उस माया को देखने लगोगे।

बैठियां सब मिल के, अंग सों अंग लगाए।
उठाऊं जुदे जुदे मुलकों, नए नए वजूद बनाए।। ५० ।।

तब सब मोमिन अंग से अंग जोड़कर बैठ गए हो। श्री राजजी कहते हैं कि अब मैं तुम्हें अलग-अलग देशों में नए-नए तनों में उठाऊंगा।

Nijanand App

पर ऐसा देखोगे तिलसम, जो सबे हुई फरामोस।
इलम देऊं मेरा बेसक, तो भी न आओ माहें होस।।५१ ।।

तुम सब बेसुध होकर माया का जाल देखोगे। मैं अपना जागृत बुद्धि का इलम भेजूंगा। फिर भी तुम होश में नहीं आओगे।

एह खेल ऐसा है, तुम अपना कबीला कर।
कोई न किसी को पेहेचाने, बैठो जुदे जुदे कर घर।।५२ ।।

संसार का ऐसा खेल है, तुम अपना-अपना अलग परिवार बनाकर बैठ जाओगी। अपने अलग-अलग घर करके कोई किसी को नहीं पहचानेगा।

तेहेकीक जानोगे झूठ है, तो भी दिल से न छूटे एह।
ऐसी मोहोब्बत बांधोगे, झूठै सों सनेह।।५३ ।।

तुम जान जाओगे कि संसार झूठा है। फिर भी तुम उस माया से न छूट पाओगे। अपने झूठे कुटुम्ब परिवार से ही ऐसा झूठा प्रेम बांध लोगे।

वाही जानोगे न्यामत, और वाही से करोगे प्यार।
सुख दुख सारा झूठ का, वाही कुटम परिवार।।५४ ।।

तुम उसी झूठे परिवार को ही न्यामत समझोगे और उससे प्यार करोगे, जबकि दुःख, सुख, कुटुम्ब परिवार झूठ के हैं।

आग पानी पूजोगे, या सूरत बनाए पत्थर।
कहोगे हमारा हक है, सब की एह नजर।।५५ ।।

आग पानी की पूजा करोगे, पत्थर की मूर्ति बनाकर पूजा करोगे और कहोगे कि यही हमारा परमात्मा है। तुम सबकी ऐसी ही दृष्टि हो जाएगी।

आसमान जिमी पाताल लग, सब झूठे झूठ मन्डल।
ऐसे झूठे खेल में, तुम जाओगे सब रल।।५६ ।।

आसमान, जमीन से पाताल तक सब झूठ का ही मण्डल है। ऐसे झूठे खेल में जाकर तुम उसमें हिल मिल जाओगे।

हक इनों में न पाइए, ना कछू सुनिया कान।
सांच न पाइए इनों में, ए झूठे फना निदान।।५७ ।।

ऐसे सारे झूठे खेल में पारब्रह्म नहीं मिलेंगे, न उनकी कुछ खबर ही सुनाई पड़ेगी, क्योंकि यह सब नाशवान है जो अन्त में नष्ट हो जाएगा, इसमें सत नहीं मिलेगा।

झूठा खेल कबीले झूठे, झूठे झूठा खेलें।
सब झूठे पूजें खाएं पिएं झूठे, झूठे झूठा बोलें।।५८ ।।

इस झूठे खेल में, झूठे परिवार में, झूठे जीव ही झूठ का खेल खेलते हैं। सब झूठ की ही पूजा करते हैं। झूठा खाते-पीते हैं और झूठा बोलते हैं।

Nijanand App

झूठा सब लगेगा मीठा, झूठा कुटम परिवार।
सुख दुख इनमें झूठी चरचा, हुआ सब झूठै का विस्तार।।५९।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं, हे मोमिनो! तुमको यह झूठा ही मीठा लगेगा। झूठे कुटुम्ब, परिवार, सुख-दुःख झूठ हैं। इसमें झूठ की चर्चा और सब जगह झूठ ही झूठ होगा।

इस्क तुमारा तो सांचा, मोहे याद करो बखत इन।
रब्द किया तुम मुझसों, बीच बका वतन।।६०।।

तुम्हारा इश्क तभी सच्चा होगा यदि ऐसे वक्त में मुझे याद करोगे, क्योंकि तुमने अखण्ड घर परमधाम के बीच में बैठकर मेरे से इश्क का विवाद किया है, अन्यथा इश्क की परख नहीं होगी।

ऐसी तो कोई ना हुई, बिना इलम होवे हुसियार।
हांसी बिना कोई ना रही, छोड़ ना सके अंधार।।६१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी कोई आत्मा नहीं है जो बिना तारतम ज्ञान के जागृत हुई हो। यहां कोई भी आत्मा माया को नहीं छोड़ सकी, इसलिए हंसी के बिना कोई नहीं बची।

इलम मेरा लेय के, निसंक दुनी से तोड़।
सोई भला इस्क, जो मुझ पे आवे दौड़।।६२।।

मेरा तारतम ज्ञान लेकर, संशय मिटाकर, दुनियां से नाता तोड़ लो, उसी का इश्क सच्चा होगा जो मेरे पास दौड़कर आएगा।

झूठा खेल देखाइया, चौदे तबक की जहान।
एक कंकरी होवे अर्स की, तो उड़े जिमी आसमान।।६३।।

चौदह लोकों की दुनियां का यह झूठा खेल दिखाया है। खेल की जमीन से आसमान तक परमधाम की एक कंकरी के सामने मिट जाते हैं।

ज्यों नींद में सुपन देखिए, कई लाखों वजूद देखाए।
आंखां खोले उड़े फरामोसी, वह तबहीं मिट जाए।।६४।।

यहां संसार में जैसे स्वप्न में लाखों लोग दिखाई देते हैं और नींद खुलते ही सब मिट जाते हैं।

फुरमान लिखूं तुमको, और भेजोंगा पैगाम।
तुम कहोगे किन भेजिया, किनके एह कलाम।।६५।।

मैं तुमको कुरान लिखकर भेजूंगा फिर श्री श्यामाजी के हाथ सन्देश भेजूंगा। तुम हैरान होकर पूछोगे यह किसने भेजा? भेजने वाला कौन है? और किसके यह वचन हैं।

कहां है हमारा खसम, और वतन हमारा कित।
चौदे तबकों में नहीं, ए किनकी किताबत।।६६।

तुम पूछोगे हमारा धनी कहां है? अखण्ड घर कहां है? यह चौदह लोकों के ग्रन्थों का ज्ञान नहीं, यह किसके ज्ञान की किताब है?

Nijanand App

अपन आए वास्ते मजकूर, अर्स से उतर।
तो ए दुनियां जो तिलसम की, सो माने क्यों कर।। ६७ ।।

हम खेल में परमधाम से इश्क के वार्तालाप के अनुसार उतर कर आए हैं। यह झूठी इन्द्रजाल की दुनियां इसे क्यों मानेगी।

एह न पावें अर्स को, ना कछू पावें हक।
ना कछू समझें इलम को, ए आप नहीं मुतलक।। ६८ ।।

यह अखण्ड घर और श्री राजजी महाराज को नहीं पा सकते। यह तारतम ज्ञान को नहीं समझ सकते, क्योंकि यह स्वयं ही अखण्ड नहीं हैं।

ए जो ढूंढ़त दुनियां, सो सब तिलसम के।
ए क्यों पावें हक बका, तन असल नाहीं जे।। ६९ ।।

यह जो इन्द्रजाल की दुनियां वाले हैं वह दुनियां में दुनियां को ही ढूंढ़ रहे हैं। जिनके तन अखण्ड नहीं हैं वह अखण्ड श्री राजजी महाराज को कैसे पाएंगे?

पैदा आदम हवा से, हिरस हवा सैतान।
इन बिध की ए पैदास, केंहेवत कुरान पुरान।। ७० ।।

जो आदम और हव्वा (आदि नारायण-कमला) की औलाद हैं और जिनके मन में माया की चाहना और शैतान की बैठक है, कुरान-पुराण दोनों ने संसार की उत्पत्ति को इसी प्रकार से ही बताया है।

रल गए वाही खेल में, कछू रही न असल बुध।
रूहअल्ला कहे सौ बेर, तो भी आवे न दिल सुध।। ७१ ।।

खेल में आकर मिल गए और परमधाम की बुद्धि नहीं रही। श्री श्यामाजी महारानी भी सौ बार कहती हैं। फिर भी सुध नहीं आती।

देखा देखी करो इनकी, बैठे तिलसम माहें।
तुम आए बका वतन से, ए मुतलक कछुए नाहें।। ७२ ।।

हे मोमिनो! तुम माया में बैठकर यहां के जीवों की देखा देखी करके वैसा ही आचरण करते हो (जीवों जैसी चाल चलते हो)। तुम अखण्ड परमधाम से आए हो और यह संसार निश्चित ही कुछ नहीं है।

ए तिलसम खेल फना से, खेलत फना माहें।
आखिर सब फना होवहीं, इत कायम जरा नाहें।। ७३ ।।

यह इन्द्रजाल का खेल नाश होने वाली शक्तियों से बना है और अन्त में सब नष्ट हो जाएगा। यहां अखण्ड कुछ नहीं है।

पट आड़ा बका वतन के, एही हुई फरामोस।
जो याद करो हक वतन, इस्क न आवे बिना होस।। ७४ ।।

अखण्ड परमधाम के आड़े यही फरामोशी का परदा है। तुम श्री राजजी महाराज और घर को याद करो। बिना उनके इश्क के होश में नहीं आ सकते।

Nijanand App

बेसक झूठ देखाइया, सो क्यों देखें हमको।
रूहें लेवें इलम बेसक, तब पोहोंचें बका मों।।७५।।

श्री राजजी कहते हैं कि निश्चित ही मैंने रूहों को झूठा खेल दिखाया है, तो अब रूहें मुझे कैसे देख सकती हैं? रूहें जब तारतम ज्ञान से संशय रहित हो जाएंगी तभी अखण्ड परमधाम आएंगी।

तुम देख्या तिन मुलक को, जित जरा ना इस्क।
इत बेसक क्यों होवहीं, जित खबर न पाइए हक।।७६।।

तुमने उस संसार को देखा है जहां जरा भी इश्क नहीं है। जहां पारब्रह्म की खबर देने वाला कोई नहीं हो, तो वहां संशय रहित कोई कैसा हो सकता है?

रूहें उन मुलक से, फिर ना सकें वतन।
फरेब क्यों ए ना छूटहीं, हक के इस्क बिन।।७७।।

संसार में रूहों को जब तक श्री राजजी का इश्क नहीं मिलेगा माया नहीं छूटेगी। तब तक वह घर वापस नहीं आ सकतीं।

ऐसी रूहें वाहेदत की, ताए फरेब पोहोंचे क्यों कर।
ए बड़ा रूहों का तअजुब, जो बांधी झूठ सों नजर।।७८।।

ऐसे एकदिली वाले परमधाम की जो रूहें हैं, उन्हें यह झूठा संसार कैसे पकड़ सकता है? यह भी बड़ी हैरानी वाली बात है कि रूहों की नजर झूठ से बंध गई है।

मैं भेजी रूह अपनी, सब दिल की बातें ले।
तुमें तो भी याद न आवहीं, कोई आए बनी ऐसी ए।।७९।।

मैंने अपनी दिल की बातें कहकर श्री श्यामाजी को भेजा। रूहों को फिर भी घर की याद नहीं आती। हालत रूहों की कुछ ऐसी ही हो गई है।

सब बातें मेरे दिल की, और सब रूहों के दिल।
सो भेजी मैं तुम पे, जो करियां आपन मिल।।८०।।

यह सब बातें मेरे दिल की और रूहों के दिल की हैं जो हम सबने मिल बैठकर की थीं, मैंने श्यामाजी के द्वारा तुम्हारे पास कहलवा दी हैं।

ए बातें सब असल की, जब याद दई तुम।
तब इस्क वाली रूहों को, क्यों न उड़े तिलसम।।८१।।

यह बातें सब परमधाम की जब तुम्हें याद दिला दी गईं तो इश्क का दावा लेने वाली रूहें झूठे इन्द्रजाल के संसार को क्यों नहीं छोड़तीं।

जब लग लगे दुनियां, तब पोहोंचे न बका मों।
एक रूह दूजा इस्क, आए काम पड़या इनसों।।८२।।

जब तक दुनियां में माया की चाह लगी रहेगी, तब तक अखण्ड में नहीं आ सकती। अखण्ड में आने के लिए एक आत्मा होनी चाहिए, दूसरा उसे इश्क होना चाहिए। इन दोनों बातों की जरूरत है।

Nijanand App

दूजा कछू पोहोंचे नहीं, हक को बीच बका।
जहां रूह न होवे एकली, छोड़ सबे इतका।। ८३ ।।

दूसरा कोई अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज के पास नहीं पहुंच सकता। जब तक रूह संसार का सब कुछ छोड़कर विरक्त न हो जाए, तब तक श्री राजजी को प्राप्त नहीं कर सकती।

बका बीच रूहन को, खेल देखावें हक।
आया गया इत कोई नहीं, ए इलम कहे बेसक।। ८४ ।।

अखण्ड परमधाम में बिठाकर श्री राजजी रूहों को खेल दिखाते हैं। वहां परमधाम से कोई आया गया नहीं है। यह तारतम वाणी से जाहिर है।

बेसक इलम सीख के, ऐसे खेल को पीठ दे।
देखो कौन आवे दौड़ती, आगूं इस्क मेरा ले।। ८५ ।।

तारतम ज्ञान से समझकर इस जगत को पीठ देकर देखें। कौन सी रूह मेरा इश्क लेकर दौड़कर आती है।

जब तुम भूले मुझ को, तब इस्क गया भुलाए।
अब नए सिर इस्क, देखो कौन लेय के धाए।। ८६ ।।

श्री राजजी कहते हैं कि जब तुम मुझे भूल गई तो तुम इश्क को भूल गई। अब नए सिरे से इश्क लेकर देखें कौन दौड़कर मेरे पास आती है।

याद करो इन इस्क को, जो रब्द किया सबों मिल।
सो इस्क अपना कहां गया, टिक्या नहीं पाव पल।। ८७ ।।

जो सबने मिलकर परमधाम में इश्क का रब्द किया, उस इश्क को याद करो। अब वह इश्क कहां चला गया। यह पाव (चौथाई) पल भी नहीं टिका।

सब ज्यादा केहेती अपना, करती अर्स में सोर।
असल रूहों के इस्क का, कहां गया एता जोर।। ८८ ।।

सब रूहें अपने इश्क को ज्यादा कहकर शोर मचाती थीं। अब उन रूहों के इश्क की ताक्त कहां चली गई?

किया रूहों सबों रब्द, पर आप न पकड़्या किन।
फरामोसी सबों फिरवली, हुई हांसी सबन।। ८९ ।।

सब रूहों ने इश्क का रब्द किया, पर अपनी शक्ति को किसी ने नहीं देखा। फरामोशी ने सबको घेर लिया, इसलिए सभी पर हंसी हुई।

जब इस्क गया सब थें, तब निकल आई पेहेचान।
जिनका इस्क जोरावर, ताए कछुक रहे निदान।। ९० ।।

जब सबसे इश्क चला गया तो उनकी पहचान भी हो गई। जिनके पास इतना अधिक इश्क था, अब उनके पास कुछ नहीं बचा।

Nijanand App

सब केहेती इस्क अपना, हमारा बेसुमार।
सो रह्या न जरा किन पे, हाए हाए दिया सबों ने हार।। ९१ ।।

सब रूहें कहती थीं कि हमारा इश्क बेशुमार है, परन्तु इश्क किसी के पास तनिक नहीं रह गया। हाय! हाय! सभी ने अपना इश्क खो दिया, क्योंकि सभी अपने इश्क को हार गईं।

इनों बोहोत लाड़ किए मुझसों, मैं एक किया इनों सों।
सो एक मेरे लाड़ में, सब बेहे गैयां तिनमों।। ९२ ।।

इन रूहों ने परमधाम में मुझसे बहुत लाड़ किए थे। मैंने इनसे एक लाड़ किया। मेरे इस एक ही लाड़ में सबकी सब बह गईं (भूल गईं)।

और इस्क भी जोरावर, तिनकी एह चिन्हार।
जिन घट सुनत आवहीं, सोई जानो सिरदार।। ९३ ।।

इश्क के ज्यादा होने की एक यह पहचान है कि धनी का नाम सुनते ही जिसको इश्क आ जाए, वही सब की सिरदार (प्रधान) है।

और भी बेवरा इस्क का, जिनका होए बुजरक।
ताए याद दिए क्यों न आवहीं, ऐसा क्यों जाए मुतलक।। ९४ ।।

और भी इश्क का ब्यौरा है जिनका इश्क बड़ा है उनको याद दिलाने पर इश्क क्यों नहीं आता? उनका इश्क कहां चला गया?

रूहें बात सुनते हक की, तुरत ही करें सहूर।
जब सहूर रूहें पकड़े, तो इस्क क्यों न करे जहूर।। ९५ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज की बात सुनकर तुरन्त ही विचार करती हैं। जब विचार कर लेती हैं तो इश्क प्रगट क्यों नहीं होता?

और भी पेहेचान इस्क की, जो बढ़ के घट जाए।
इस्क रूहों का हक सों, क्यों कहिए बका ताए।। ९६ ।।

इश्क की एक यह भी पहचान है कि यदि वह बढ़कर घट जाए तो वह रूहों का इश्क परमधाम का नहीं है।

इस्क हक का सो कहिए, जो इस्क है कायम।
एक जरा कम न होवहीं, बढ़ता बढ़े दायम।। ९७ ।।

जो इश्क अखण्ड है, वही परमधाम का सच्चा इश्क है जो श्री राजजी महाराज का है। इसमें तनिक भी कमी नहीं होती। यह निरन्तर बढ़ता ही रहता है।

मेरा छूट्या न इस्क रूहों सों, नजर न छूटी निसबत।
रूहों छूटी इस्क निसबत, ऐसी भूल गैयां खिलवत।। ९८ ।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि मेरा इश्क रूहों से नहीं छूटा है और न मेरी नजर ही उनसे हटी है, परन्तु रूहों का इश्क से सम्बन्ध छूट गया और वह अपने मूल-मिलावे की बातें भूल गई हैं।

Nijanand App

किया मजकूर इस्क का, अजूं सोई है साइत।
पड़े बीच फरामोस के, तुम जानो हुई मुद्दत।। ९९ ।।

रूहों ने परमधाम में जब इश्क का वार्तालाप किया था, अभी वहां वही पल है। तुम सब फरामोशी की नींद में पड़ने से समझती हो कि मुद्दत बीत गई।

सक छूटी अर्स हक की, सब बातों हुई बेसक।
तब अर्स अरवाहों को, क्यों न आवे इस्क।। १०० ।।

अब परमधाम की और श्री राजजी महाराज की सभी बातों के संशय समाप्त हो गए हैं। तो फिर अब अर्श की रूहों को अर्श का इश्क क्यों नहीं आता?

तोलों चले ना इस्क का, जोलों आड़ी पड़ी सक।
सो सक जब उड़ गई, तब क्यों न आवे इस्क हक।। १०१ ।।

जब तक संशय बाकी है तब तक इश्क की ताकत नहीं चलती। जब सब संशय उड़ गए तब धनी का इश्क क्यों नहीं आता?

अव्वल इस्क जिनों आइया, सोई अर्स अरवाहें।
नाहीं मुतलक मोमिन, जिनों लगे न बेसक घाए।। १०२ ।।

सबसे पहले जिनको इश्क आ गया वही परमधाम की रूहें हैं। जिन्हें धनी का सन्देश सुनकर चोट नहीं लगी, वह निश्चित ही मोमिन नहीं हैं।

बेसक इलम आइया, पाई बेसक हक दिल बात।
हुए बेसक इस्क न आइया, सो क्यों कहिए हक जात।। १०३ ।।

जागृत बुद्धि का बेशक इलम मिलने पर श्री राजजी महाराज के दिल की बातों का भी पता चल गया और संशय हट गए। फिर भी इश्क नहीं आया, तो उसे ब्रह्मसृष्टि (परमधाम की) कैसे कहा जाए?

बेसक इलम रूहअल्ला का, जो हैयात करे फना को।
मुरदे चौदे तबक के, उठें इन इलम सों।। १०४ ।।

श्यामा महारानी का तारतम ज्ञान बेशक है। वह मिटने वाले जीवों को अखण्ड कर देने वाला है। चौदह लोकों के मुरदार जीव इस ज्ञान से जागृत हो जाएंगे।

सो बेसक इलम ल्याइया, रूहअल्ला रूहन पर।
जो अरवाहें अर्स की, ताए इस्क न आवे क्यों कर।। १०५ ।।

श्यामा महारानी रूहों के वास्ते बेशक तारतम वाणी का ज्ञान लाईं। अब जो परमधाम की रूहें हैं उन्हें इश्क क्यों नहीं आता?

इलम हक का सुनत ही, इस्क न आया जिन।
तिनको नसीहत जिन करो, वह मुतलक नहीं मोमिन।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज का तारतम ज्ञान सुनकर जिसको इश्क नहीं आया वह निश्चित ही मोमिन नहीं है। उसे ज्ञान मत सुनाओ।

Nijanand App

है तीन वज्हे की उमत, इस्क बंदगी कुफर।
सो तीनों आपे अपनी, खड़ियां मजल पर।। १०७ ।।

संसार में तीन तरह की सृष्टियां हैं। एक पारब्रह्म से इश्क करने वाली, दूसरी बंदगी करने वाली और तीसरी इन्कार करने वाली। यह तीनों ही अपने-अपने रास्ते पर खड़ी हैं।

सो तीनों लेवें नसीहत, पर छूटे नहीं मजल।
जैसा होवे दरखत, तिन तैसा होवे फल।। १०८ ।।

यह तीनों ज्ञान सुनते हैं, परन्तु अपने-अपने रास्ते को नहीं छोड़ते। जैसा पेड़ होता है उसका फल भी वैसा ही होता है।

कोई बुरा न चाहे आप को, पर तिन से दूसरी न होए।
बीज बराबर बिरिख है, फल भी अपना सोए।। १०९ ।।

कोई भी इन्सान अपना बुरा नहीं चाहता, पर वह दूसरी चाल नहीं चल पाते। जैसा बीज होता है पेड़ भी वैसा होता है और उसका फल भी वैसा मिलता है।

खेल झूठा देख्या नजरों, सो ले खड़े सिर आप।
ताही में मगन भए, छोड़ कायम मिलाप।। ११० ।।

ब्रह्मसृष्टियों ने झूठा खेल देखा और उसी को सिर पर ले बैठीं। उसी में मग्न हो रही हैं तथा अखण्ड परमधाम का मिलाप छोड़ बैठी हैं।

अब सो क्योंए याद न आवहीं, जो रूहअल्ला आया तबीब।
दारू न लगे तिनका, जाए हकें कह्या हबीब।। १११ ।।

अब परमधाम के वैद्य श्यामा महारानी आए हैं। तो भी हमें मूल घर की याद क्यों नहीं आती? जिनको श्री राजजी महाराज ने अपना प्यारा कहा है उनकी प्रेम की दवाई असर क्यों नहीं कर रही है?

चौदे तबक करसी कायम, दारू मसी का ए।
गई न फरामोसी रूहों की, आई हुकम सों जे।। ११२ ।।

वैद्य श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज के तारतम ज्ञान की ऐसी दवा है जिससे चौदह लोक अखण्ड हो जाएंगे, परन्तु रूहों की फरामोशी अभी तक नहीं टूटी, क्योंकि यह श्री राजजी महाराज के हुकम से आई है।

आखिर रूहों नसीहत, ए तो हकें देखाया ख्याल।
रूहों हक को देखाइया, कौल फैल या हाल।। ११३ ।।

अन्त में रूहों को इस तारतम वाणी से जागृति आएगी और पता चलेगा कि यह खेल तो श्री राजजी महाराज ने दिखाया है। रूहों ने अपनी कहनी, करनी और रहनी से श्री राजजी महाराज को अपना इश्क दिखा दिया।

हकें खेल देखाए के, इलम दिया बेसक।
हक हांसी करे रूहन पर, देसी सबों इस्क।। ११४ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल दिखाकर बेशकी का तारतम ज्ञान दिया। श्री राजजी महाराज सब रूहों पर हंसी करके अपना इश्क देंगे।

Nijanand App

कोई आगे पीछे अव्वल, इस्क लेसी सब कोए।
पेहेले इस्क जिन लिया, सोई सोहागिन होए।। ११५ ।।

कोई आगे, कोई पीछे, सभी श्री राजजी महाराज का इश्क लेंगे, परन्तु पहले जो इश्क ले लेंगे वह सुहागिनी कहलाएंगी।

महामत कहे ऐ मोमिनों, जिन हांसी कराओ तुम।
याद करो बीच बका के, किया रब्द आगूं खसम।। ११६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम व्यर्थ में अपनी हंसी मत कराओ। अखण्ड परमधाम में तुमने जो इश्क रब्द का वार्तालाप किया था, उसे अब याद करो।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ १०७४ ॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन

॥ प्रकरण ॥ ३८१ ॥ चौपाई ॥ १०५५६ ॥

॥ खिलवत सम्पूर्ण ॥

Nijanand App